श्रीरत्नप्रभसूरीश्वरसद्गुरुभ्योनमः

मुनिश्री गयवरचन्दजी महाराज

विरचित

श्रीसिद्धप्रतिमा मुक्तावली

प्रकाशक

जैनसभा तीवरी मारवाड

वीर संवत् २४४४ प्रथमावृत्ति १०००

[illegible]

भावनगर धी विद्याविजय प्रीन्टींग प्रेसमां

शा. पुरुषोत्तम गीगाभाइये छाप्युं.

॥ श्री ॥

॥ पेश्तर ईधर पढलीजिये ॥

यह " सिद्ध प्रतिमा मुक्तावली " जो किताब २२ टोलोके पुज्य श्रीलालजीके शिष्य मुनिश्री गयवरचन्दजी २२ टोलोलोमें रहे हुवे स० १९७२ का चतुर्मास तिवरी (मारवाड मे किया उससमय उनोंने बनाईथी.

यह बाततो लोक प्रसिद्धहै कि २२ टोलेमें व्याकरणादिका अभ्यास कम है जिसमेंभी परदेशी साधु श्रीलालजी के टोले तो अपणे साधुको व्याकरण पढाणेसे बिलकुल संकोच करते है उनकी मान्यता यह है कि अगर साधुको व्याकरण पढा दिया जावेतो हमको छोडके जैन समाजमे चले जावेगे कारण ऐसा मोका इन लोगोको अगाडी बन चुका है इसी कारणसे मुनिजीकि व्याकरण विद्या पढणेकी आसा आजतकतो अपूर्णही रही दुसरी बात यह है कि श्रीलालजीके टोलेके साधु पुस्तके छपवातेतो है परन्तु पब्लिकमे छपानेमें पाप बतलाते है इस कीये दिर्घ कालकी वासनासे वासित हुए मुनिजीभी उस वक्त पुस्तक छपानेमें सकोच करतेथे उक्त दोनो कारणो सेवा दृष्टि दोषसे वा प्रूफ टाइमसर न मिळणेसे

छपनेमें केई स्थान त्रुटियाँ रहनेका संभव है पाठक हंस चोंचके न्याय गुणगृहीबन हमको सुचना देगातो हम उपकारके साथ स्वीकार करेंगे और द्वित्यावृत्तिमें सुद्धि करा दिजावेगा यही प्रार्थना है

प्यार पाठको गुणग्राही इन्सानतो इस पुस्तकको पढके अवश्य जाणेगा कि यहे पुस्तक बहुत शास्त्रोंके प्रमाणसे बहुत परिश्रमके साथ बणाई गई है। यदि पुस्तक बनाने वाले महात्मामें इतनी विद्वता है तो क्या उन महाशयजीमें शुद्धि करणेकी विद्वता न होगी ? अपीतु अवश्य होगा परन्तु किसीन किसी कारणसे अशुद्धिया रह गईहोगी कारण हम ऊपर लिखही आयेहै.

हमारी स विनय अर्जहै कि एक दफे इस पुस्तकको आप ध्यान पूर्वक आदिसे अन्त तक पढ लिजीये ताके पुस्तक बनानेवाले मुनिजी वा प्रकाशित कराने वाले हम लोगोंका परिश्रम सफलहो. अस्तु

॥ श्री ॥

१

विषयानु क्रमणिका.

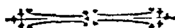
द्वितीया प्रश्नानुक्रमणिका

चतुर्था प्रश्न विषय.



श्रीवीतरागाय नमः ।

प्रस्तावना.



विदित हो पाठकगणोंको कि इसी घोर संसार समुद्रमें जीव अनादि कालका परिभ्रमण कर रहा है जिसका मुख्य कारण यह है कि गत कालमें श्री जिनेंद्र देवोंकी आज्ञाका आराधन नहीं किया था। प्रिय मित्रो साम्प्रतकालमें कोई पूर्व पुण्यके उदयसे मनुष्य जन्मादि सामिग्री मिली है इसीमें समकित रत्न आराधन करनेकी अत्यावश्यकता है कारण समकित ही मोक्षरुपी कल्याण सुखकी दाता है प्रिय मित्रो यह सर्वज्ञ देवोंका फुरमाया हुवा परम पवित्र रत्नत्रय धर्मोत्तम धर्म है इसीको जिन शासन रसिक जन शासनोन्नतिकारक धर्मधुरन्धर पुर्वाचार्य अपने पाटानुपाट धर्मवृद्धि करते रहे है

परन्तु काल दोपसे ज्ञानकी हानि होनेसे मेरे भाई जैनी लोगोंमें फुटफाट बहुत हो रही है अन्तर दृष्टीसे देखा जाव तो फुट जैनीयोको बहुत हानिकारक है (जैसे सेठकी दुकानमें फुट होनेसे पाडोसी दुकान जमा लेते है तैसे) ही जैनोंकी फुट देखके अन्य मतावलंबी अपनी स्थितिको नन्दीके पूरकी तरह बढा रहे है हमारे प्रिय बांधव जैनी घोर निद्रामें सो रहे हैं जब किसी समयमें जागते है तब कुठार लेके अपने ही पैरोंमें चलाते है बडे खेदकी बात है कि परस्परमें सम्मेलन (संपत्त) न रख के अपने धर्मको पंगुसा बना दिया हैं इससे भी अधिक यह है कि कितने ही जैनि अन्य समाजोंमें चले गये हैं कितने ही जानेवाले हैं अहो वीरपुत्रो कहांतक खूटी तानकर सोवोंगे अब तो जागो२ अपनी समाजको संभालो जैन बांधवो सांप्रतकालमें जैन धर्ममें कितने ही शाखा दृष्टिगोचर होती हैं इसीका मुख्य तात्पर्य ज्ञानप्रचार कम होनेसे अज्ञानदशा अधिक बढ रही है इसीसें लोगोंकी निर्णय बुद्धि न होनेसे पकडी हुई सत्यासत्य रुढीको चला रहे हैं। प्रिय मित्रो सत्यासत्यका निर्णयके लिये सांप्रतकालमें केवलज्ञानि मनःपर्यव ज्ञानि अवधिज्ञानी पुर्वधारी भी नहीं है केवल श्री जिनेन्द्र देवोंके आज्ञा

किये हुए सिद्धान्त रहा है सो भी स्वल्प सुचना मात्र उनि कि भी गभीर शैली अल्प बुद्धिवालोंके समझमें आनी बहुत कठिन है परन्तु पूर्वोके ज्ञानवाले पुर्वाचार्य समुद्र समान जिनकी गभीरता उन्होंने पचांगी आदि रचके जीवोंपर उपगार किया है अभीतक उन आचार्योंके परंपरायमें पंचांगीके माननेवाले थोडी सुत्रों की शैलीको जानते है। प्रिय मित्रों सांप्रत कालमें कई जैनी बन बैठे है जिसको अक्षर मात्रा स्वर व्यंजन ह्रस्व दीर्घका भी बोध नहीं है अपने मन मतेही पंडित बन जाते हैं न जिसीको गुरुगमकी धारणा है जो कुछ थोडा बहुत वचिया ग्रथोंसे आज्ञा न लेते हैं वो भी चोरीसे ऐसे अपनी रूढीको चला रहे हैं प्रिय मित्रों एक ऐसा भी बाडा बांध रखा था कि व्याकरणव्याधीगरन है इसी वास्ते न पढना अन्य नहीं वाचना इसीका मुख्य कारण ये है कि व्याकरण कोष काव्य अलंकार पढेगा और टिका वगेरह पंचागी वाचेगा तो शुद्धमार्ग पहचानके हमको छोड के चला जावेगा। ऐसे प्रमाण दृष्टान्त कितनेही बन चुके

१ पूज्य मेघजी टा ०५ ने वा श्रीआत्मारामजी आदि बहुत शुद्ध धर्मको प्राप्त हुवे है

ई कि व्याकरण पढके सुत्रोंका अर्थ सीधाधारण करतेकी मिथ्या हटका त्याग कर दीये हैं इसी वास्ते सज्जन पुरुषोंसे विज्ञापना की जाती है इस कालमें केवल सूत्रका आधार है इसीसे सूत्रपर आस्ता रखो सूत्रार्थ धारण करनेके लिये ज्ञानका अभ्यास करो जिससे शुद्ध धर्मकी प्राप्ति हो। जैनियोंमें अधिक प्रेम न होनेका कारण इस जमानेमें मूर्ति अपुजकोंका है सो संक्षेप कथन करता हुं मुर्ति अपुजक वान्धवोंको पूछा जावे कि आप लोग जिन प्रतिमाको नही मानते है उसका मुख्य तात्पर्य क्या है और आपके पास क्या प्रमाण है तब कितनेही लोग तो अपनी पट्टावलिका प्रमाण देते है कि मंदिर और प्रतिमा वारे कालमें बना है कोई कहते है कि संप्रति राजाने मंदिर बनाये हैं कोई कहते है कि मंदिर सुत्रोंमें चला है जिससे चोथे आरेमें था कई कहते है कि रिषभ देव भगवानके समय सेही मंदिर बना था देखिये सज्जनों इन लोगोंका प्रमाण कि इन्हीकी पट्टावलिमें प्रारंभमें लिखते हैं कि जेसलमेरके भंडारसे पट्टावलि निकाली हैं विद्वान पुरुषोंको विचार करना चाहीए कि कोण लुंका गछीय जेसलमेरका भंडार देखनेको गया था यह भी प्रमाण कपोल स्वकल्पित है परन्तु यह समझना

चाहीये कि जिनके पास परंपराय नहो व मनमानी बात बनाके अपने जालमें भोले लोगोंको बांध लेते हैं लेकिन वो समय गया अभी ज्ञानका प्रचार बहुत होरहा है संस्कृत व्याकरणके रसिक बन रहे हैं.

कितने ही महानुभाव टीका संयुक्त सूत्र व्याख्यान में कहते है शुद्ध प्ररुपणा करते है कुछ दिनोंमें प्रकाश होने वाला है

तत्ववेत्ता तत्व खोजी तत्व गवेसी पुरुषोंको सुचना करता हुं कि पक्षपात दूर करके नीचे लिखे हुए सप्रमाण दृष्टान्त पर जरा ध्यान धरना जिससे आपको स्पष्ट मालुम होगा कि जैनियोंमें जिन प्रतिमाका मानना आगमानुसार सनातनसे ही चला आ रहा है

(१) प्राचीन शिला लेख इतिहासमें मूर्तिका वर्णन बहुत देखनेमें आता है.

(२) अन्य मतके करीब पांच हजार वर्ष पहिलेका शिल्पशास्त्रमें एसा लिखा है कि जिनमंदिर जिनप्रतिमा इस रीतीसे बनाना ध्यान दो इस लेख पर.

(३) युरोप १ अमेरिका २ आदि खंडोंमें हजारों

वर्ष पहिलोकी जिन प्रतिमा उपलब्ध होतीहै एक स्थलमें २ जिन प्रतिमाके लीए ऐसा लिखा है श्रीनेमिनाथजी इकी- समा भगवानसे चालीस सो चालीस वर्ष पीछे गौड देशका असाड श्रावक रत्नोंकी प्रतिमा बहुत ही करवाई उनमेंसे ये प्रतिमा मीली है.

(४) नाणा वेडाके पास वीर प्रभुके समयमें बनी हुई प्रतिमा उपस्थित है दर्शन करो.

(५) काठियावाडमें मोवामें जीवतस्वामीकी प्रतिमा है या वीर प्रभुकी प्रतिमा है.

(६) औरंगाबादमें २४०० वर्ष अदाजनका मंदिर है

(७) भरुचमें मुनि सुव्रत स्वामीका समयमें बना हुवा तीर्थ प्रत्यक्ष है.

(८)मारवाड ओसियामें वीर प्रभुके निर्वाण पीछे ओस वंश उत्पन्न करने वाला श्रीउपकेशगच्छी रत्नप्रभसूरिकी प्रतिष्टा किया हुवा वीर प्रभुका मंदिर विद्यमान है.*

(९) जिन आगमें ठाम २ मीन्दर प्रतिमाका अधिकार है परन्तु निषेध किसी जगह नहीं हैश्रावकोंको पुजाका अधिकार सुत्रमें चला है परन्तु पुजा करनेसे अतीचार नहीं कहा.

---

* उसकु आज २३७० वर्ष हुवा है.

(१०) दिगम्बरी मत प्रथक निकला बहुत वाक्योंका फेरफार किया परन्तु जिन प्रतिमा तो उन्होंने भी मानी है विचारो जिन प्रतिमाका मानना कर्तव्य होता तो अवश्य ही निषेध करता सो नहीं किया-जिन प्रतिमा मानी इसीसे सिद्ध है जिन प्रतिमा सनातन है.

(११) चौरासी गच्छ अलग २ है लेकिन पचागी प्रतिमा माननेमें सब एक ही हैं.

(१२) सूत्र टीका चुर्णी भाष्य प्रकरणादिमें अन्य अन्य मतावंलीवियोंका बहुत खंडन है लेकिन प्रतिमाका खंडन या खंडनका मंडन किसी स्थान पर नहीं है इसीसे जिन प्रतिमा परम्परासे प्राचीन सिद्ध हो चुकी.

(१३) तुम कहते हो मंदिर प्रतिमा संप्रति राजासे चली है इसका प्रमाण होतो प्रसिद्ध करो कारण तुमारी पट्टावलिमें सुधर्मा स्वामिसे पाटानुपाट पाट चले आते हो तो फिर कोई प्राचीन प्रमाण होना चाहिये परन्तु हो कहांसे यह कर्तव्य टोला पछिसे चला है

(१४) लुंकागच्छी साध सिद्धाचल शेत्रुंजय केसरीयाजी आदि तीर्थों परयती तथा श्रीपुज तथा श्रावक बहुतसे पूर्व निश्चय करके जिन मंदिरकी उत्साहसे भक्ति कर

रहे हैं बहुत लोग [शत्रुंजय] सिद्धाचलादि तीर्थयात्रा करके अपना जन्म सफल कर रहे हैं.

(१५)प्रतिमा उत्थापकोंकी आदि नाम कारण बहुत लोग जानते हैं कि संवत १५३१ में अहमदाबाद निवासी लुंका जीलेखाने मत चलाया है और लवजीने १७०८ में मुख-बंधोंका पन्थ चलाया है तथा संवत् १८१५ में तेरहपंथी मुखबंदादान दयाउथापक पंथ चलाया है ये बहुतसे लोग जानते हैं परन्तु प्रतिमा माननेवालोंका आदि ग्राम नाम होतो तुम प्रगट करो करे कहांसे जैनियोंमें सनातनसे प्र-तिमा मानी जाती है इस शिवाय सम्मेतशीखर सेत्रुंजयादि तीर्थोंपर बहुत प्राचीन मंदिर तथा जिन प्रतिमा विद्यमान हैं जिसके मोहका क्षयोपशम हूवा है वह जिन भक्ति ती-र्थयात्रा करके अपना कार्य सिद्ध करते हैं आप लोग भी करो इस मूर्त्ति विषयमें पूर्वाचार्योंने बहुतसे ग्रन्थ बनाए हैं चर्चा वार्तामें जैना भासोंका अच्छी तरह पराजय कि-या है तदपि मोहके वेगसे अपना हट तथा दुराग्रह नहीं छोडते है इसी वास्तेमें पूर्वाचार्योंका आश्रय. ले के छो-टीसी पुस्तक प्रकाश करता हुं प्रिय मित्रो इस पुस्तकमें मुल चार प्रश्न मूर्ति अपूजकोंको पुछा है जिसमें उन

लोगोंके कुतर्कोंका सूत्र अर्थ निर्युक्ति साथमें हेतु युक्तिसे समाधान किया है सो न्याय पक्षी आदिसे अन्ततक इस पुस्तकको पढेगा तो आपसे ही मिथ्यात्व दुर हो के सत्यार्थकी प्राप्ति होगी आशा रखता हू कि प्रिय पाठक अवश्य इस पुस्तकको पढके मेरा परिश्रम सफल करेंगें।

शान्ति १ शान्ति २ शान्ति ३ ।

प्रगट कर्ता.



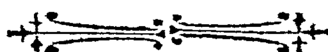


सिद्ध प्रतिमा मुक्तावलि.

मंगल भगवान वीरो। मंगलं गोतम प्रभुः।
मंगलं स्थूलभद्राद्याः जैन धर्मोस्तु मंगलम्।१।

दोहा.

देव अरिहंतने नमुं, गरू नीग्रंथ पेछाण।
धर्मआज्ञा वितरागकी, ए सुद्ध समकित जाण॥



अष्टादश दोष रहित बारह गुण सहित चार निक्षेपे वो मेरे देव हैं पंच महाव्रतधारी जिन आज्ञापालक मेरे गुरु हैं जिन आज्ञामें धर्म है यह दर्शनका संक्षेप स्वरुप है. भव्य जीव आराधन करो समकितहीसे क्रिया शोभायमान

होती जिस पुरुषकें समकित शुद्ध नहीं है उसकी करनी भी जैसे—

(दाणं वमणं लिङ्ग शील र कुछ पालणं अहलं जरदा दव्व तवाई आणं दुक्खे नियानंच) ॥ अर्थ ॥ दान व्यसन सरीखा है शील रंक सरीखा है अर्थात् दरिद्रीकों स्त्री न मिलनेसे वो कहता है कि मै शीलवान हु तपोचर्या ज्वरके दाट सरीखी है और ध्यान कष्टरूप है इसी वास्ते समकित शुद्ध करो समकित बिना क्रिया मात्र निष्फल है। (जह मुलमि विणठे, दुमस्स परिवार नत्थी, परिवुट्टी तह जिण दंसण भट्टा, मूल विणठा णसिझति) जैसे वृक्षका मुल नष्ट होजाते है तो उसके पत्र पुष्प फलकी वृद्धि कभी नहीं होती है वैसेही बिना समकित करणी मोक्षरूप फलकी वृद्धि कभी नहीं होती हे प्रिय मित्रो इसी लिए कुगुरु स्वलिंगी श्रद्धा भिष्ट असत्पुरुषोंका औरकुलिंगीका दूरसे त्याग करो कहा है कि:—

वरंवाही वरंमच्चू, वरं दारिद संगमो ।
वरं अरण वासोअ, माकु मित्ताण संगमो ॥

व्याधि मृत्यु दरिद्रताका सगम श्रेष्ट है या वनमें निवास

करना परन्तु कुमतियोंका संगम नहीं करना इत्यादि इन्द्र वचनोंसे निश्चय होता है कि पूर्वोक्त संसर्ग करनेसेही दर्शन मलीन होता है इसी लिये तत्ववेत्ता पुरुषोंको बार २ यह विज्ञापना है कि आप लोग अपना देव गुरु धर्मकी आस्ता रखके अल्प जीवनमें अपना जन्म सफल करो। आजकालके समयमें कितनेही महानुभावोंसे पूछा जावे कि आप लोगोंका मूर्तिके विषयमें क्या मन्यता है जब कितनेक तो कहते है कि मूर्ति सूत्रोंमें चली है सो कामदेवकी है कितनेक कहते हैं कि मूर्ति तो अरिहंतोंकी है परन्तु वन्दनीक और पुजनीय नहीं है कितनेक कहते हैं कि वन्दन पुजन की विधि नही है कितनेक कहते है कि वादन पूजनका फल सूत्रमें नही है इत्यादि बहुत भिन्न भ्रम होरहा है इसपर हमारा कहना ये है कि अहो बन्धुओ आप लोग एकत्र होके जैन सिद्धान्तोपर ध्यान धरो जिससे आप लोगोंका भिन्न २ भ्रम दूर होगा भिन्न भिन्न२ भ्रम करनेवालोंसे यह जैन सिद्धान्तोंकी शैलीसे चार प्रश्न पूछते हैं

(१) जिन आगममें श्रीजिनेन्द्र देवकी प्रतिमा है या नहि उत्तर देना ॥

(२) जिन आगममें जिन प्रतिमा है तो वन्दनीक पुजनीक है या नही उत्तर दो ॥

(३) जिन आगममें जिन प्रतिमा वन्दन पूजन करनेकी विधि है या नही उत्तर दो

(४) जिन आगममें जिन प्रतिमा वन्दन पूजनका फल है या नही उत्तर दो

ये चार प्रश्न भव्य जीवोंके प्रतिवोधके लिये हैं जिसमें प्रतिमा अपूजक जो जो कुतर्क करते है उनका समाधान सुत्रार्थ हेतु युक्तीसे अच्छी तरह किया है सो वाचक वर्ग एक एक प्रश्नको अच्छी तरह ध्यानमें लावोगे तो स्वय बोधकी प्राप्ति हो जायगी इतना कहना मेरा स्मरण में रहे कि हर किसी संबधको पढो उसीको संपुर्ण पढके विचार पुर्वक हृदयमें धारण करना ॥

सुचना.

पाठक वर्गोको समजनेके लिये नीचे जो [स] ये मूर्ति अपुजकोंका सवाल समजना और (उ) ये चिन्ह मूर्ति-

पूजक जैनोंकी तरफसे उत्तर समझना तथा (स) सत्य है (उ) उसीका उद्धार करता हुं.

॥ प्रथम प्रश्न प्रारंभ ॥

॥ दोहा ॥

वर्द्धमान मंगल करो, तुम वचनामृतपान ।
जिनप्रतिमा छे सास्वती, तेहना सुणो वयान॥

स्थानकवासीयांसे जैनी पुछते है कि जिन आगममें जिन प्रतिमाका वर्णन चला है उसीको आप कैसे मानतेहो

(स) जिन आगममें जिन प्रतिमा सास्वती चली है वो अरिहन्तोंकी नही है

(उ) क्या प्रमाण कि प्रतिमा अरिहन्तोंकी नहीं है

(स) सम्यग्दृष्टी मिथ्या दृष्टी दोनों प्रकारके देव प्रतिमा पुजते है इसीसे प्रतिमा अरिहन्तोंकी नहीं है

(उ) ऐसा पाठ कोनसे सुत्रमें है कि सम्यग्दृष्टी मिथ्या-दृष्टी देवता सदृश पूजते है

(स) सूत्रमें जगह जगह लिखा है कि देवता सम्यग्दृष्टी मिथ्यादृष्टी उत्पन्न होते है सो ही जिन प्रतिमाको पुजते है

(उ) देवता दोनों प्रकारके उत्पन्न सुत्रमें कहा सोहम स्वीकार करते हैं परन्तु ऐसा पाठ बतलाओ कि दोनों प्रकारके देवता जिनप्रतिमा पूजते है

(स) आप इसको मानतो होयां नहीं

[उ] तुमारे जैसे हम नही मानते हैं

[स] इसीमें कोई सूत्रका प्रमाण भी है

[उ] हां हमसुत्रके प्रमाणसे ही बात कर रहे हैं

[स] बतलाओ कोनसेसूत्रमें कहा है

[उ] लो सुनो सूत्राय प्रसेणी (अन्ने सिंच वहवे विमाणिया देवेहिं देविहिं -अइणिज्जाउ) इसका तात्पर्य कितनाही देव देवियां (समदिष्ट) स्नात्र कराते है यावत् सेवा भक्ति करते हैं यदि जो एसा पाठ होना (सवेसिं) तो आपका कहना सत्य ठहरता परन्तु ऐसा पाठ सुत्रकारोंने नहीं फुरमाया है इसीसे सिद्ध हुवा कि कितनाई 'समादिष्ट' देवता जिन प्रतिमा पुजने हैं

[स] हमारे गुरुजी कहते हैं कि सम्यग्दृष्टी मिथ्यादृष्टी दोनों देवता जिन प्रतिमा पुजते हैं जिसीसे प्रतिमा अरिहन्तों की नहीं है

[उ] आप कुछ हृदयसे विचार करो कि गुरु किसको मानना चाहीये

(स)पंचमहाव्रतधारी श्री भगवानकी आज्ञाको आराधन करे उसीको हम गुरु मानते है

[उ] अब सोचो श्री भगवान कि आज्ञाका पाठ तो हम उपर लिख आये है सो उस पाठको उथापणेवालाको गुरू समझना तुमारी समझका भ्रम है

(स) हमको तो हमारे गुरु वचनोंकी पूर्ण प्रतीति है

(उ) लो तुमारे पूर्ण प्रतीतिकी पोलमें निकालता हुं सो सुनो कोई विद्वान जैन मुनिकी सेवा भक्ति सम्यग्दृष्टी मिथ्यादृष्टि दोनों करें तो आप उस जैन मुनिको क्या समजोगे

[स] उस मुनिकी अधिकताई समजते हैं कि सम्यग्दृष्टी तो भक्ति करते ही है परन्तु मिथ्यादृष्टियोंने भक्ति करना यह उस मुनीकी अधिकाताईका अतिशय है

[उ]प्रिय मित्रो आपके कहनेसे ही मिथ्यादृष्टी देवता जिन प्रतिमा पूजनेसे वो प्रतिमा अन्य देवकी कैसे समझते है मुनि दृष्टान्तसे तो जिन प्रतिमाकी आधिकता हुई देखो

नन्दीसूत्र [तिलुक निरखु महिय पूंयेहिं] जिनेन्द्र देव तीन लोकमें पुजनीक है मान लो प्रतिमा अरिहन्तकी

[स] ठाणांग सूत्रके तीसरे ठाणेमें जिन तिन प्रकारका कहा है सो यह प्रतिमा अवधिजनकी होगी।

(उ) जरा मोहनिद्रासे जागो देखो ठाणांग सूत्र (पाठ) तउ जिणापन्नता तं जहाहिउणाणी जिणा मणपजवणाणी, जिणा केवल णाणी जिणा) ये तीन प्रकारका जिन कहा है। इसीका भेद कोइ विद्वान जैन मुनियोंसे धारण करो। इसी ठाणामें तीन प्रकारके अरिहन्त कहा है (पाठ) तउ अरहापन्नं ता तं जाहा उहि नाणी अरहा मनप जव-नाणी अरहा, केवल णाणी अरहा ये तीन प्रकारके अरि-हन्त कहे हैं ' विचारो जो अवधीज्ञान वालेको अरिहंत कहोगे तो नरक, तिर्यंच, मनुष्य, देवतामें अवधिज्ञान है उस चारोगतिका जिन या अरिहन्त समजना चाहिये

(स) आप तिनु जिन और तीनु अरिहन्तको कैसे मा-नते हैं

(उ) लो सुनो तीर्थंकर भगवान जन्म धारण करते हैं। 'तब अवधि जिन या अवधि अरिहन्त कहते है (पाठ)

(अरिहन्ते जायमाणे) तथा (उपने खलू भोजन बुद्धि वे द्विवे भगवंतित्यथरे) १ भगवान दीक्षा धारण करते ही मनपर्यवज्ञान उत्पन्न होते है जब मनपर्यव अरिहन्त कहते है और केवल ज्ञान उत्पन्न होनेसे केवलि अरिहन्त कहाते हैं

(स) हमारे गुरु महाराज कहते हैं कि प्रतिमा अवधि जिनकी है

(उ) तुमारे भ्रमको दूर करो देखो सूत्र रायप्रसेणी (पाठ) (अठसयं जिणपडिमाणं जिणू स्सह प्रमण मेताणं साणि खिताणं चिठंति)

अर्थ। एकसो आठजिन प्रतिमा, जिनेन्द्र देवोंके शरीर प्रमाण अर्थात् जघन्य सात हात उत्कृष्ट ५०० धनुपकी अवगाहना है बतलाओ आपके कोनसा अवधि देवताकी ५०० धनुपकी अवगाहणा है देखो जीवाभि गम सूत्रमे देवताकी अवगाहणा उत्कृष्ट सातहात्यकी है और प्रतिमाकी अवगाहना पांचसौ धनुषकी है सिद्ध हुवा प्रतिमा अरिहंन्तोंकी है

[स] सुननेमें आते है कि देव लोकमें जिन प्रतिमा कही

सो काम देवकी है

[उ] बारे भव वादियो अपना नाक काटके दुसरेका अप सकुन करना यह लौकिक दृष्टान्त आपपर घटना करता है कि तीन लोकके पुजनीय परमेश्वरोकी मूर्तिको कामदेवकी कहना इससे बडके पाप कोनसा है दुराग्रहको दूर करके देखो भगवानके परम भक्त समदृष्टी देव नमो थुणं कहते है तो विचारो क्या कामदेवके अगाडी कहते हैं अपितु कभी नहीं उन्हीकी भक्ति और इन्होंकी प्रतिमा के सन्मुख होती है।

(प्र) आपही कहो कि कामदेव किसको कहते हैं ?

(उ) जिसको देखतेही कामविकार उत्पन्न हो जैसे अभी फागुनमें इलाजि या नाथुरामजीको कामदेव कहते है

(प्र) जिन प्रतिमा पूजना यह तो देवताओका जीत आचार है जैसे शाकिम हिन्दु मुसलमान गादी पर बैठते है उस समय बालाजी आदि देवको भस्म पूजते है जैसे ही समगद्दृष्टी मिथ्यादृष्टी देवता विमानमें उपजते ही जिनप्रतिमा अवश्य पूजते है इसीमे प्रतिमा अरिहन्तोकी नहीं है

(उ) हिन्दु बालाजी पूजते हैं तो क्या मतबके पूजते हैं?

(स) धर्म समझके अपने देवको पूजते है

(उ) मुसलमान हाकिम क्या समझके बालाजीको पूजते हैं

(स) राजनीति समझके बालाजीको पूजते हैं

(उ) प्रिय मित्रो आपके कहनेसे यह सिद्ध हुवा कि सम्यग्दृष्टी अपना देव जानके पूजते है और मिथ्यादृष्टी कितने ही नीतिसे पूजते हैं सो भी समकितको प्राप्त होते है, जैसे ईशान ईन्द्र प्रतिमा देखते ही समकितको प्राप्त हुवा (तर्क) इशान ईंद्रको पूर्वभवमें नियाणा नहीं किया उस समय जैन शैली आई सुनते है (समाधान तामली तापसको चर्म भव तक बाल तपस्वी कहा है. जैन फेर शैली कहांसे आई । इसीसे जिन प्रतिमा देखते ही की प्राप्ती हुइ अनन्तर भगवानके पास आकर ३२ प्रकार का नाटक किया बारह बोलके प्रश्न किये भगवानने सूर्याभकी तरह छै बोल प्रशस्त कहे हैं. देखो जिन प्रतिमाके प्रभाव.

(स) फेर तो सम्यग्दृष्टी और मिथ्याद्रष्टी दोनोंको मोक्ष होना चाहिये.

(उ) हम पुछते है कि साधु दीक्षा सम्यग्द्रष्टी मिथ्याद्रष्टी दोनो लेते है आपके कहनेसे तो दोनोंकी मोक्ष होनी चाहीये,

(स) मिथ्याद्रष्टी भी जैन दीक्षा लेते है.

(उ) हां लेता है.

[स] क्या प्रमाण है

(उ) भगवति म० १ उ० २ मिथ्याद्रष्टी साधु जघन्य भवनपाते उत्कृष्ट नव ग्रैवेयग जाता है.

(स) फेर मिथ्याद्रष्टीको पूजनकरनेसे क्या फायदा हुवा

(उ) जैसे सम्यग्द्रष्टी साधुव्रति पालन करके मोक्षकी आराधना करते हैं और मिथ्याद्रष्टी पुन्य उपार्जन करते है एसे ही प्रतिमामें समजना चाहिये

(स) आपने प्रथम लिखा था कि मिथ्याद्रष्टी प्रतिमा नहीं पुजे और यहांपर कहते है कि प्रतिमा पूजके पुण्य उपार्जन करते हैं ये परस्पर विरुद्ध क्यों

(उ) हमारा कहना आपके जैसा हठग्राही नहीं है हमारे जैन सिद्धांतोंका आशय स्याद्वाद मत है हमारे लेख

में देखो देवता सम्यग्द्रष्टी मिथ्याद्रष्टी सदिष्ट नहीं पूजते है जैसे यहांपर सम्यग्द्रष्टी पुरुषोंका अवश्य कर्तव्य देवगुरु की भक्ति करनेका है और मिथ्याद्रष्टीकी भजना याने जिसको मिथ्यात्वका तीव्र उदय होवे भक्तिभाव न करे उल्टी निन्दा करे और जिस्के मंद मिथ्यात्व हो या स्वाभाविक मकृति भद्रिक होय वह जैन मुनियों आदिकी भक्ति करै फल समकितकी प्राप्ति होवे तथा पुण्य प्रकृतिका बन्ध हो

(स) देवता जिन प्रतिमा पूजते हैं सो अपना राज मंगलीक और सांसारिक सुखके लिये पूजते है इसीसे प्रतीमा भी संसारी देवकी हैं.

(उ) प्रियमित्रों उत्सूत्रके पापसे किंचित्‌डरो अंतमेंतो पर भव जाना है सोचो कि जिस देहधारीकों(इशान)जिस वस्तुकी इच्छा हो उसी वस्तुकी देवके अगाडी प्रार्थना करते है जो राज मंगलीक सुखभोगके लिये प्रतिमा पुजते तो ऐसा पाठ होना चाहिये (राजलभेण, भोगलभेणं, सूहलभेणं, मंगल लभेणं) सो तो इस बातकी गन्ध भी नहीं. सूत्रमें तो देवता प्रतिमाके आगे सम्पूर्ण (नमोथूणम्) दिया है. जिसमें ऐसा कहा है (जिणांणं, जावयाणान्तिणाणं तारीयाणं बुद्धाणं बोहियाणं मुक्ताणं मोअगाणं) इस लेखमें सम्या

द्रष्टी देवता उल्लासभावसे मोक्षकी प्रार्थना कि है मोक्षका दाता भी अरहन्त है

(स) देवता तो बत्तीस वस्तु पुजी है तो क्या सब मोक्षके वास्ते ही पूजी है.

(उ) बंधुओ कानी हथिनीकी तरह मत देखो जरा निर्णय करो बुद्धि राखो बत्तीस वस्तु कहते हो परन्तु नमोथुण अरहन्तकी प्रतिमा आगे दिया है परन्तु अन्य वस्तुओंके अगाडी नहीं कहा है सम्यग्द्रष्टी जिनका नमोथ्थुणं अरहन्त या अरहन्तोंकी प्रतिमाके सन्मुख ही कहा जाता है अन्य स्थल नहीं.

(स) नमोथ्थुणं अरिहन्त या अरिहन्तोकी प्रतिमाआगे कहा जाता कहते है तो फेर भरत चक्रवर्त्तिने चक्ररत्नके आगे नमोथ्थुणं कैसे कहा.

(उ) यह भ्रम भोले लोगोके लिये है जैन सिद्धान्तोमें ऐसा लेख किसी स्थल पर नहीं है कि चक्र रत्नको नमोथ्थुणं कहा है

(स) क्या हमारे गुरूजी झूठाही कहते है.

(उ) झूठ सत्यका निर्णय करना बुद्धिवानका क-

तव्य है सो जम्बूद्वीप पन्नति भरत महाराज चक्र रत्नको प्रणाम किया है सोपाठ (चक्क रयणस्स पणाम करे इत्यादि) यह निस्संदेह लिखा है कि प्रमाण किया आपही विचारो कि नमोथ्थुणंका गुण चक्र रत्नमें होवे या नहीं

(स) गोशालाके मतवाले उन्हींको नमूथ्थुणं कहते हैं इसीसें यह नियम नहीं है कि नमोथ्थुणं अरिहन्त वा अरिहन्तोंकी प्रतिमाकेही सन्मुख कहना

(उ) वाजीवा हमने तो कहाथा कि सम्यग्दृष्टि नमोथ्थुणं अन्य स्थल पर नहीं कहते ऐसा पाठ कोई सूत्रमें होतो वताओ कि कोई मनुष्य देवता सम्यग्दृष्टि अन्य स्थल पर नमोथ्थुणं किया है और गोशालाका नाम लेते हो सो वतलाओ सो कोनसें सूत्रमें लिखा है कि गोशालाको उन्हींके मतवाले नमोथ्थुणं किया है परंतु ऐसापाठ उपासक दसामे है सो सुनो अ० ६

हंभो कुंडको लिया स० । सुन्दरेणं देवाणुपिया गोशालस्स मंखलि पुत्तस्स धम्म पणत्ति नत्थि उणेतिवा । कम्मेतिवा वले-

तिवा वीरी एतिवा । पुरिसाकार पराक्कम्मेतिवा॥ नीतिया सवभावा मंगुलीयेणं । समणस्स भ- गवओ महा वीरस्स । धम्मवणत्ति अत्थिउठा णेतिवा जाव परिक्कमेतिवा । आशीतिया सव्वभावा ॥

अर्थ–गोशालाका मतावलंबी देवता कुडको–लिया श्रावकसे ऐसा कहता हुवा कि अच्छा है गोशालेका धर्म जिसमें उठाण कर्म बल वीर्य पुरुषाकार पराक्रम करणेकी कोई आवश्यक्ता नहीं है याने तप संजमकी क्रिया करनेका कोई जरूर नहीं बिना क्रियाही स्वर्ग मोक्ष मिले है औगमाटी (भूडी) धर्म समण भगवन्त महावीरका जिसमें उत्थानाजाव पराक्रमादि क्रिया वतलाई है सब अनियत भाव है इस पर ध्यान दो कि गोशालेके मतावलंबी क्रियाको तो मानते ही नहीं है तो नमोथ्थुणं कहना कैसे सिद्ध हो अपि तु कभि नहीं और सूत्र ज्ञाताजीमें सुदर्शन शेठ शुकदेवका उपासकथा फिर थावचा पुत्र अनगारके पास समकित धारण किया अन्यदा शुकदेव सन्यासी आया तब सुदर्शन श्रावक प्रथम

बोलाभी नहीं अब विचारो नमोथ्थुणं कहना कैसे सिद्ध हो इसी तरहसे सगडाल कुम्भारकी भी समझ लेना इसके शिवाय कोई आचार्य उपाध्यायका प्रत्यनीक अपछंदीअविनीत अपना कृतव्यीमत चलानेकेलिये अंशमात्र जैनकी क्रिया करे तो उसीको जिन आज्ञाका आराधक नहीं कहा जाताहै ऐसे तो अभीभी वहुतसे जिन आगम प्रत्यनीक जिन प्रतिमाके द्वेशी भी कष्ट क्रिया करते है या नमोथ्थुणं कहते है परन्तु जिन आज्ञाका आराधक नहीं कहा जाता गोशालेके वत्.

(स) सूर्याभीदि देवताने नमोथ्थुणं किया हैं सो संसार सबंधसे है उसीसे हम नहीं मानते. समकितकी करनी होवे तो पाठ वतलाओ.

(उ) ठाणांग सूत्रके दसमे ठाणेमें दस प्रकारका मिथ्यात्व कहा है जिसमें मोक्षके मार्गको संसारका मार्ग सरदै तो मिथ्यात्व लागे इससे आंख मीचके सोचो सम्यग्दृष्टि सूर्याभे देवताने जिन प्रतिमाके आगे नमोथ्थुणं दिया है सो मोक्षके लियेही दिया है जिसका फलसूत्र उत्तराध्ययनजी अ० २९ वेमें

चैत्यवन्दन कार्यो अतस्तत् फलां प्रश्न पूर्व माह ।

थयथुई मंगले सांभंते जीवा किं जणे इ थयथुई मंगले णाणदंसण चरित्त वो हि लाभ जणयइ णाणदंसण चरित्त वो हि लाभ संपन्नेयजीवे अन्त किरियं कप्प विमाणे उववत्तियं आराएहइ आराएहेइ ।

देखो इस पाठमें प्रतिमाके सन्मुख नमोथ्थुणं कहनेसे यावत् मोक्ष फल बताया है जिस्को संसार विषय कहना केवल मिथ्यात्वका ही उद्देश्य है

(स) जिन प्रतिमा अरिहन्तोकी हो तो एकवार ही क्यों पूंजे वारंवार पुजना चाहिये.

(उ) जरा समतिकी वहिनको हृदयसे दूर करके सूत्रको देखो.

(पुव्वकरणीज्जं पच्छाकरणीज्जं)

इस पाठसे स्पष्ट मालुम होता है कि पहिले ओर

बोलाभी नहीं अब विचारो नमोथ्थुणं कहना कैसे सिद्ध हो इसी तरहसे सगडाल कुम्बारकी भी समझ लेना इसके शिवाय कोई आचार्य उपाध्यायका प्रत्यनीक अपछंदीअविनीत अपना कृतव्यीमत चलानेकेलिये अंशमात्र जैनकी क्रिया करे तो उसीको जिन आज्ञाका आराधक नहीं कहा जाताहै ऐसे तो अभीभी वहुतसे जिन आगम प्रत्यनीक जिन प्रतिमाके द्वेशी भी कष्ट क्रिया करते है या नमोथ्थुणं कहते है परन्तु जिन आज्ञाका आराधक नहीं कहा जाता गोशालेके वत्.

(स) सूर्याभीादि देवताने नमोथ्थुणं किया है संसार सबंधसे है उसीसे हम नहीं मानते. समकितकी नी होवे तो पाठ बतलाओ.

(उ) ठाणांग सूत्रके दसमे ठाणेमें दस मिथ्यात्व कहा है जिसमें मोक्षके मार्गको संसारका मार्ग सरदै तो मिथ्यात्व लागे इससे आंख मीचके सोचो सम्यग्द्रष्टि सूर्याभे देवताने जिन प्रतिमाके आगे नमोथ्थुणं दिया है सो मोक्षके लियेही दिया है जिसका फलसूत्र उ- त्तराध्ययनजी अ० २९ वेमें

चैत्यवन्दन कार्यो अतस्तत् फलं प्रश्न पूर्व माह ।

थयथुई मंगले सांभंते जीवा किं जणे इ थयथुई मंगले णाणदंसण चरित्त वो हि लाभ जणयइ णाणदंसण चरित्त वो हि लाभ संपन्नेयजीवे अन्त किरियं कप्प विमाणे ववत्तियं आराएहणं आराएहेइ ।

देखो इस पाठमें प्रतिमाके सम्मुख नमोथ्थुणं कह-के यावत् मोक्ष फल बताया है जिस्को संसार विषय क-ल मिथ्यात्वका ही उद्देश्य है

) जिन प्रतिमा अरिहन्तोकी हो तो एकवार ही वारंवार पुजना चाहिये.

(ड) जरा समतिको वहिनको हृदयसे दूर करके को देखो.

(पुव्वकरणीज्जं पच्छाकरणीज्जं)

इस पाठसे स्पष्ट मालुम होता है कि पहिले ओर

पीछें करने योग्य है.

(स) सूत्रमें तो उत्पन्न होते ही देवता एक ही वार जिन प्रतिमा पूजनेका अधिकार चला है आप किस आधारसे कहते हैं कि वार २ पूजा करी.

(उ) प्रिय मित्रो सूत्रमे अधिकार संबंध पर चलते हैं इस पर आपको भ्रम हो तो नीचे सूत्रोंमें जो एक २ वारका कथन चला है सो लिखता हुं. (नमुना)

१ सूत्र रायपसेणी सूर्याभ देवता एक दफे भगवानको वन्दना करनेको आनेका अधिकार है.

२ इसी सूत्रमें प्रदेसी राजा केशी महाराजको वन्दना करनेको एक ही वार आया.

३ भगवति स० १२ उ० १ शंख ओर पुष्पली श्रावकोनें स्वामिवच्छल एकवार ही करनेका अधिकार है.

४ इसी श्रावकके वन्दनेका अधिकार तथा पुष्कली श्रावक शंख श्रावकने घर जाना तथा उत्पला श्राविका पुष्कलीको वन्दन करनेको एक ही वार चली है.

५ भ. स. ११ उ. १२ मे में इसी भद्र पुत्र श्रावक

पोषद शालामें एकठा एक ही वार एकत्र होनेका अधिकार है.

६ इसी सूत्रमें पूर्वोक्त श्रावक भगवानको वन्दनेको जानेका अधिकार एक ही वार चला है.

७ भ. स २ उ. १ अग्निभूत वायुभूत गणधरका प्रश्न एक ही वार चला है ऐसा ही स ५ [उ. ८] नियंटी पुत्र नारद मुनिपुत्रिका प्रश्न ८ उपासक ० अ. १ आनन्द श्रावक भगवानको वन्दनेको एक ही वार गया है.

९ इसी सूत्रका अध्याय ६ कुंडको लिया श्रावकने सामायक एक ही वार चला है.

१० ज्ञाताजी अध्याय सूत्र ६ द्रौपदी महासती जिन प्रतिमा पुजनेका अधिकार एक ही वार चला है.

११ भ. स. २ उ ५ तुंगिया नगरीका श्रावक पारसनाथजीका सन्तानियाको प्रश्न पुछनेका अधिकार.

१२ उववाई सूत्रमें कोणाक राजा नगरी एक ही वार अलकृतका अधिकार एक ही वार चला है.

१३ भ स. १३ उ ६ उदाई राजा नगरी उपरवत्

१४ दशा. अ. १० श्रेणिक राजा. उपरवत्

१५ उपा० अ० ८ इसी राजाने अमर पडो एकवार

१६ अन्तगढ सूत्रमें कृष्णा वासुदेव दीक्षा दलाली एकवार करी चली है.

१७ विपाकसूत्रमें सुबाहुकुमार पूर्वभवमें मुनिको दान एकवार देनेका अधिकार

१८ ऐसे ही भद्रनन्दी कुमार.

१९ सुजातकुमार.

२० जिनदास.

२१ सुवास.

२२ धनपति.

२३ महाबल.

२४ भद्रनन्दी.

२५ माहचन्द.

२६ वरदत्त.

२७ निरावलकामें व० ३ में चन्द्रमा भगवानको वन्दनेका एकही वार अधिकार चला है.

२८ ऐसे ही सूर्या.

२९ शुक्र.

२० बहुपुतिया इत्यादि बहुत बोल है क्या उक्त बोलोको आप एकही वार समजते हैं जब इन बोलोको अनेक बार समझते है तो पुजाका अधिकारमें हठ कदागृह नहीं छोडते होये विद्वानोंका काम नहीं है मानलो प्रतिमा अरहन्तोकी है.

(स) उववाइ सूत्रमें भगवानका शरीरका वर्णन चला है जिसमें स्थान नहीं है और रायवसेणी सूत्रमें जिन प्रतिमाका वर्णन चला है जिसमें 'कणगामय चचुवा' याने प्रतिमाके स्तन है इसीसे प्रतिमा अरिहन्तोंकी नहीं है

(उ) यह कोनसा कुगुरु आपको भ्रमजालमें उतार दिया जब तुम स्वयमेव विचार करोगे तो निश्चय होगाकी पुरुषके स्तन नहो तो छाति पाटेकी तरह खराब मालुम होती है, एसा आदमी पृथ्वी पर दृष्टीगोचर नहीं होता न किसी जैन सिद्धान्त या अन्यमतियोंके शास्त्रमें ऐसा लेख है न जाने तुमको और तुमारा गुरुजीको यह भ्रमअज्ञान कहांसे प्राप्त हुवा है. हाय आप सोचो अयसे तीन लोकके अनुपम जिनका शरीर सर्व लक्षण संयुक्त एसे तीर्थंकर भगवानका शरीरको न्यून कहना यह कितना बडा अज्ञान है.

(स) सूत्रमें भगवानके स्तन नहीं कहा हैं फेर कैसा माना जावे—

[उ]तुम कहते हो कि सूत्रमें नहीं कहा सो किस आधारसे कहते हो क्या सूत्र तुमने पढा है प्रिय मित्रों जैन सिद्धान्तोंकी शैली बहुत गंभीर है जिसमें कोइ वस्तुका किसी स्थलपारस मान कथन होता है किसी वस्तुका अन्य स्थल विशेष कथन होता है जैसे दसवी कालिक अ० १० में साधुके लिये ऐसा पाठ है—

पुढवि णखणे णखणावए, सीउदंगनपिवे न पिवावए, अगनि सत्थं जहसनियंतं न जले न जलावए जेसभिक्खु

देखो इसमें लिखा है कि साधु पृथ्वी न खोदे खुदावै न कच्चा पानी पीवै न पिलावे अग्निका आरंभ आप न करे न करावे अब विचारो इस पाठसे साधुको पृथ्वी अप वेउ का आरंभ आनुमोदना कहां लिखा है और सूत्रोंमें साधुको त्रिविध हिंसाका निषेध किया हुवा है सो यहां संक्षेप बताया है* जैसे प्रश्न व्याकरण सूत्रमें ईन्द्र बत्तीस कहे हैं

---

* इत्यादि निन्यानै वाक्य तीसरे प्रश्नमें लिखे हैं सो देख लेना.

णांग ६४ जम्बूद्वीप पन्नति ४८ या उत्तराध्ययन अ १६ में आर्जीविका ४८२ भेद कहे है पन्नवणा पद १ में १३० भेद कहे हैं। सो कैसे सम्बन्ध मिलाना होगा

(उ) प्रिय मित्रो ! जैसे उस जगह प्रक्षेप लायके सबंध मिलाते है तो फिर इस जगह संबंध मिलाते कीउ सरमाते हो और देखो सूत्र उत्तराध्ययनजी अध्ययन बाइसमें नेमिनाथ परमेश्वर तोरणसे रथ फिराके दीक्षा लेनेका अधिकार चला है तत् पाठ—

सो कुंडलाण जुयणं सुत्तगं च महायशो आभणानिय सव्वाणि सारहिस्स पणामए २० मण परिणामयकरा देवाय जहोइयं समोइणा सव्वड्ढीई सपरिसा निक्खमणं तस्स काउ जे २१

इम पाठमें वरसीदान देनेका अधिकार नहीं चला है आप वरसीदान देणा मानते हो या नहीं.

(स) तीर्थंकर भगवान दीक्षा लेते है जब अवश्य वर्षीदान देते है मूलपाठमें नहीं है तब भी मानना पडता है.

(उ) जब फेर तीर्थंकरोके स्तन माननेमें क्यों हठवाद क रते हो. मिथ्या टेकको छोडकर सूत्रोंकी आज्ञानुकूल जिन प्र तिमा अरिहन्तोंकी समजो.

(स) जीवाभिगम सूत्रमें जिनप्रतिमाके वर्णनमें (रिष्टाम मसूया) याने डाढी मूछ कही है जिनसे यह जिनप्रतिम अरिहन्तोंकी नही है कोई अन्य देवकी होगी.

(उ) देवानुं प्रिय देखो समवायांग सूत्रमें भगवानके चौ- तीस अतिशयमें रोमराजी अशोभनिय नही होती इसीसे कु- छभी बाधा नही है.

(स) जो आप प्रतिमा अरिहन्तोकी मानते हौ तो भग- वान तौ त्यागी अचैल अवस्थामें थे और शास्वति जिनप्र- तिमाको देवता वस्त्र भूषण कडाधूप पखाल आदिसे भोगी- की तरह पूजत है (सो प्रतिमाभी भोगी देवकीही है अ- रिहन्तोकी नहीं.

(उ) मित्र जरा ज्ञानदृष्टीसे देखो जो वस्त्र भूषण पहि नाते हौ सो सम्यग्दृष्टी श्रावकोंकी भक्तिहै इसीसे भगवान त्यागीके भोगी नही होते है और आप एसे कहोगे तो लो- सुणो भगवान भाव निक्षेपसे समोसरणमें विराजतेथे उस समय

भक्त सम्यग्दृष्टी देवता भक्तिके लिये समोसरण रचतेथे भामंडल स्फटि सिंहासन छत्र चामर इंद्रध्वजा सुवर्णके कमल जोजन प्रमाण मंडल में पुष्पवृष्टी नाटकादिक भक्ती करनेका अधिकार चला है विचारो यह चिन्ह त्यागीकाहै या भोगीका है भावनिक्षेपे देवताओकी भक्ति कामपर आतीथी तो फिर स्थापना निक्षेपामें भावारोपण करके भक्ति करना श्रावक जिनोंका कर्तव्य है

(स) देवताजो भक्ति करते है उनका आचारहै परन्तु धर्म नहि है.

(उ) देखो रायप्रश्रेणी सूत्रमे असा पाठ है.

तंइधामिणं देवाणु वियाणं भक्ति पुव्वंग गोय मादिणं निग्गथाणं दिव्वं देवं दिव्वं देवज्जइं दिव्वं देवाणुभाव दिव्वं बत्तीस विहंनदवीहाणं उवदंसित्ती

इस पाठसे अवश्य निश्चय होता है कि पूर्वोक्तकाम भक्ति है भक्ति है सो संसारसे तिरनेका मार्ग है.

(स) धर्मकार्य होतो भगवान मौन क्योंकरते.

(उ) धर्म इसका लेख हम चौथे प्रश्नमें लिखेंगे सो लेना.

(स) भगवानके ऋषि मुनिकी परिषदा चली है और सास्वति जिनप्रतिमाके पास नागप्रतिमा यक्ष प्रतिमा है.

(उ) भगवानकी वारह प्रकारकी परिखदाचली है इसीमे नाग यक्ष अलग नहीं रहाहै.

(स) सास्वति प्रतिमा आगे धूप कुंडचा आदि चला है जिससे प्रतिमा अरिहन्तोंकी नही है.

(उ) सूत्रोंमें स्थान स्थानपर समोसरणका अधिकार चलता है जिसमे धूप पुष्प अगरादिककी सुगंधीका लेख है.

(स) सूत्रमें जिन प्रतिमा कही है परन्तु अरिहन्तोंकी प्रतिमा नहीं कही है तो बतलाओ. केसे माना जावे.

(उ) जिनका ओर अरिहन्तोका तात्पर्य एक ही है और देवलोकमें सिद्धायतन नाम गुणा निष्पन्न है ओर नन्दीसूत्रमें भगवान तीन लोकमें पुजनीय कहे इसीसे सिद्ध हुवा कि प्रतिमा अरिहन्तोकी है.

(स) हम ऐसे नही माने जो मूलसूत्रका पाठ होतो दिखलाओ

(उ) लोउने सूत्रभगवतीजी (म०)१० उ५ गौतम स्वामि भगवानको) प्रश्न किया कि चमर इन्द्र अपनी सुधर्मा सभामें देवांगना के साथ पचेन्द्रीयोंका सुख भोगकर सकते हैं भगवानने उत्तर दिया कि गौतम यह अर्थ समर्थ नहीं है गौतमने पूछा भगवान क्या कारणहै जब भगवानने फुरमाया कि चमरेन्द्रकी सुधर्मा सभामें माणिवेगा खभमें जिनेश्वर की डाढें है सो कितनेही असुर कुमारके देवना देवियोंके.

(अच णिज्जाउ वन्द णिज्जाउ णामस्स णिज्जाउं पुय णिज्जाउं मक्कारीजाउ समाणी णिज्जाउ कल्लाणी मंगलं देवयंचईयं पडुवास णिज्जाउं)

अर्थ. उन देवनाओंको बोडाढे है पखाल करने योग पुष्प चंदनादिकसे अर्चन करने योग्य है वंदन योग्य(स्तुती) पंचांग नमाके प्रणाम करने योग है पूजा करने योग्य सत्कार देने योग्य मनान देने योग्य कल्याणकारि मंगल कारी देव संबंधी चैत्य[जिन प्रतिमा]निपरे सेवा करने योग्य अब विचारो डाढोंको प्रतिमाकी तरह पूजा करणा कहा इसीसे सिद्ध हुवा कि सास्वति जिनप्रतिमा है सो अरिहन्तोकीही है

(स) सास्वती प्रतिमा जो अरिहन्तोकी है ऐसा मान लिया जावे तो आप अभी अशास्वती प्रतिमा कराते है सो किस सूत्रके अनुसार कराते है.

(उ) सूत्रमें स्थान स्थानपर प्रतिमा चली है आपके मोह पडलका चस्मा चडा हुवा है जिसीसे मालुम होता नहीं है जो चस्मा दुर करोगे तो जैसे शास्वाति प्रतिमा है जैसेही अस्त्रासति प्रतिमा है.

(स) सूत्रमें तो सुननेमें नहीं आती जो सूत्रमें असास्वति प्रतिमा होतीतो हमारे गुरुमहाराज प्रतिदिन सूत्र वांचते है सो क्या हम नहिं सुनते परन्तु सुने कहांसे सूत्रमे है नहिं.

(उ) प्रिय मित्रो जरा पक्षको दूर करो तुम कहते हो कि हमारे गुरुजी सूत्र वांचते है सो ठीक परन्तु तुमारे सरीखे भोले लोगोंको भ्रममें डालनेके लिये जहां जिन प्रतिमाके पाठ आते है वहांपर कितनेक तो गोप देते है, कितने अर्थ पर हरताळ याने सफेदा लगा देते है, कितनेक अर्थ फिराकर अनर्थ कर देते जिसीसे आप लोगोंको मालुम नहीं होती है मगर जो जैन मुनियों के पास सूत्र श्रवण करो जिससे मालूम हो जावे.

(स) आप ही आज्ञा करो कोनसे सूत्रमें अशास्वति जिन प्रतिमा चली है.

(उ) लो सुनो निचे लिखा सो पढ़कर आस्तिक सख्या में अपनी गणना करो

सूत्र पाठ अर्थ–१५पनरा प्रमाण तो हम प्रस्तावनामें प्रथम ही लिख चुके है सो देखो. सुत्र ज्ञाताजी द्रोपदीके अधिकारमे जिनघर जिन पडिमा है (तर्क) उसके समय पुजी है सो प्रतिमा कामदेव आदिकी है (समाधान) नमोथ्थुणं का गुण कामदेवमें है या अरिहन्तोमें है सो विचारो

१७ सुत्र उववाई पाठ (बहवे अर्हन्त चई या णीवा) याने चंपा नगरी बहुतसे अरिहन्तोके मंदिरोंसे शुसोभित हैं

१८सूत्र दसवैकालिक में श्री सज्जवभद्द शान्तिनाथजीकी प्रतिमा देखके प्रतिबोधित हुवा है (तर्क) यह निर्युक्ति है परन्तु मूल पाठमें नही है (समाधान) निर्युक्ति श्री भद्रबाहु स्वामीकी रची हुई है चुलिका श्री मंदिर स्वामीको आज्ञा की हुई है.

१९ सूत्रसूयगडांग अध्ययन६आद्रकुमारको प्रतिमादेखके ज्ञान उत्पन्न हुवा (तर्क) वह प्रतिमा नही हैं पूजनीया मुहपत्ति

देखनेसे ज्ञान हुवा है (समाधान) कुछ प्रमाण भी है यह मुंह-से ही कहते हो प्रमाण हो तो बतलाओ [तर्क] आप जो कहते हो सो टीकाकी वात है इसीसे हम नहीं मानते [समाधान टीका निर्युक्तिमें गाथा है उसकी टीका है टीका मानना सुत्रमें कहा है और जो आपके पास टीका वा प्राचीन लेख कथामें लिखा हो कि मुंहपत्ति देखके ज्ञान उत्पन्न हूवा तो बतलाओ नहीं तो पुर्वाचार्योंके लेखको स्वीकार करो.

२० सुत्र ठणांग १० में ठाणे "ठवणे सच्चे" जिनराजकी प्रतिमा है सो सत्य है या आचार्यके अभावमें स्थापना आचार्य ही की कहा है [तर्क] अर्थमें है "समाधान" अर्थ मानना ठणांगमें कहा है सो सत्य है देखो आवश्यक सत्रमें पाठ

आगमे तिवीहा पन्नत्ता तंजाहा सूत्रागमे अर्थागमे तदुभयागमें.

इसीसे अर्थमें लिखा हूवा सत्य है.

२१ सूत्र समयांगमें उपासक दशा सुत्रके नुदनुवादका पाठ.

सेकिंतं उवास गदसांऊ उवास गदसासुणं उवास याणं नगराई उज्जाणइं चेइयाइं वण स-

झाई रायणोअम्मा पीयारोवम्मा यरिया.

याहां श्रावकोंका मदिर कहा है.

२२ सुत्र प्रश्न व्याकरणमें साधु प्रतिमाकी वैयावच्च करे तर्क) बांहा चैय्यठे निर्ज्जरा ठी शब्द है सो ज्ञान या निर्जरा कहा है " समाधान " तपस्वी या नवा शिष्य या ग्लानके पास ज्ञान कैसे लेवे इसी वास्ते चैत्यका अर्थ प्रतिमा ही होता है.

२३ व्यवहार सूत्र उद्देश्य पहला साधु प्रतिमाके पास आलोयण लेवे- [तर्क] वहां चेइय शब्दसे ज्ञानवान श्रावकके पास आलोयण लेना कहा है "समाधान" ज्ञानवान पीछाकडा श्रावकका पाट जुदा चला है इसीसे प्रतिमाके पास ही आलो यण लेना.

२४ आनन्द अवडादि श्रावकोंने प्रतिमाको वन्दन कर- ना रखा है सो आगे लिखेंगे

२५ सूत्र भगवती शतक ३ तीसरा उद्देस पहला चमरे इंद्र प्रतिमाका शरणा लेनेका अधिकार चला है इत्यादिक तुमारे माने हुवे बत्तीस सूत्रोंमें अमास्त्रति प्रतिमाका लेख है जो आत्मकल्याणकी इच्छा होवे तो वीतराग प्रणित सुत्र अर्थको धारण करो.

(स) जो प्रतिमा आप अरिहन्तोंकी मानते हो तो हम पूछते है कि पांच पदोंमें कोनसा पद है सो सिद्धान्तकी प्रणालीसे बतलाओ.

(उ) बावा रे भ्रम वादीलागों तुम अपना भ्रम दूर करो सुनो इस उत्सर्पिणी कालमें श्री ऋषभादिक चतुर्विशन्ति जिनेश्वर मोक्ष पधारे हैं, जिनके नामकी माला फेरते हैं, यह पांच पदोमें कौनसा पदमें गिनोगे उत्तर दोगो कि अरिहन्तों के पदमें गिनोगे तो तुमारे मंतव्यमें मिथ्यात्व लगेगा कारण अरिहन्तोंके चार अघातिया कर्म बाकीहै,और जो सिद्ध पदमें गिनोगे तो सिद्धोंके नाम नहीं है, वहां भी मिथ्यात्व आया और तुमारे तत्व दो यही रहेंगे गुरु तत्व धर्म तत्व विना देवके शासन नहीं चल सकता है जिससे क्रिया भी तुमारी निष्फल होगी भाव नेत्रसे देखो सूत्र भगावतिजी सतक २० उद्देश आठमें श्री वीर प्रभुने आज्ञा किया है मेरा शासन २१००० वर्ष तक चलेगा सो भी तुमारे मंतव्यसे नहीं रहेगा तो अब किस छिद्रमें जावोगे आपका नाम लेना कोंनसे पदमें गिनोगे सो कहो. प्रिय मित्रो आप कोई विद्वान जैन मुनियोंकी सेवा भक्ति विनयसे जैन सिद्धान्तोंकी शैलीको अच्छी

तरहसे समझो मेरेको आपकी भाव दया आ रही है कि बिचारे भद्रीकजीव इतनी कष्ट क्रिया करने पर भी उत्सूत्रसे दुःर्गतिके भाजन बन रहे हैं अहो आश्चर्य ३

(स) आप कहो नाम लेना और प्रतिमा ये दोनो कौंनसे पदमे है.

(उ)जैन सिद्धान्त आनेकान्त है जिसमें नय निक्षेप प्रमाण स्याद्वाद समांन विशेष उत्सर्ग अपवाद अनेक शैलीसे भीं रहे सामान्य बुद्धिवालोंकी समजमें आना कठिन है परन्तु पूर्वाचार्य गंभीरबुद्धि वालापंचंगागी रचके भव्य जीवों पर उपगार कीया है जिसीको बहु मान देके श्रवण करो जिसीसे आपके हृदयमें ज्ञानदीपक प्रगट हो सुनो प्रथम तो नाम लेना और (प्रतिमा) स्थापना करना जिसका अधिकार अनुयोगद्वार सूत्रका यह लेख हं.

॥ गाथा ॥

जत्थयजं जाणिज्जा निख्खेवं निख्खिवे निरवसेसं
जत्थवियनजाणिज्जा चउक्कयं निख्खिवे तच्छ॥१॥

यह वीतरागा देवोंका वचन है कि वस्तुमें चार निक्षेप

अवश्य करना चाहीये अब अरिहन्तोंके चार निक्षेप नीचे लिखता हुं सो पढो.

१ नाम निक्षेप जैसे नाम श्री महावीरजी.

२ स्थापना निक्षेपा श्री महावीर स्वामीकी मूर्ति (द्रव्य णिक्षेप).

३ जब तक महावीर स्वामिकुं केवल ज्ञान नहीं उत्पन्न हुवा तब तक द्रव्य निक्षेप है.

४ भाव निक्षेप महावीर स्वामिको केवल ज्ञान उत्पन्न हुवा समोशरण चौतीस अतिशयकर संयुक्त ये समान प्रकार के निक्षेप कहे हैं इसमें नाम लेना और प्रतिमा ये दोनों अरिहन्तमें समझना विशेष समझना हो तो नयका स्वरुप सुणो प्रथम नैगमनयके तीन भेद हैं अंश, आरोपना, विकल्प.

१ अंश तो अंश मात्र वस्तुको ग्रहण करके वस्तुको वस्तु मानना जैसे निगोदके जीवोंको सिद्ध मानना और चौद वे गुणठाणेवालेको संसारी मानना.

२ आरोपनके तीन भेद हैं अतीत आरोपण दुसरा वर्त्तमान आरोपण तीसरा अनागत आरोपन इस प्रकार है.

१ अतीत आरोपना जैसें आज भगवानका जन्म है तथा

है कि आपके प्रतिमा ही के साथ द्वेश है.

(स) नाम लेनेसे तो प्रत्येक लाभ होता है जैसा स्थापनासे लाभ नहीं होता है.

(उ) प्रिय मित्रो हम नामका निषेध नहीं करते हैं मगर नामसे स्थापनासे जादा गुणोंकी प्राप्ती होती है देखो किसी पुरुषनें जम्बूद्वीपका नाम लिया किसी पुरुषनें जम्बूद्वीपका पट देखा तो कहो ज्ञान किसमें ज्यादा हुवा सो विचारो.

(स) नाम लेनेसे सर्पादिकका जेहर उत्तर जाता है लेकिन स्थापना देखनेसे नहीं उतरता.

(उ) नाम लेनेसे सर्पका जेहर कैसे उतरता है.

(स) मंत्रादिक पढनेसे जेहर उतर जाता है.

(उ) मंत्र कैसे गिना जाता है.

(स) ॐ ह्रीँ क्लीँ ब्लीँ इत्यादि.

(उ) अरे भोलो ये तो हमारा ही कहना स्थापना संयुक्त नाम ही सिद्ध हुवा.

(स) कैसे सिद्ध हुवा.

(उ) देखो नंदी सुत्रमें श्रुत ज्ञानके चौदह भेद कहे हैं जिनमें पहला ही (अक्खर सुयं) यह स्थापना सुत्र अक्षरोंको

कहता है इसीसे सिद्ध हुवा कि स्थापनासे ही क्रियाकी सिद्धि है.

(स) एक राजवैद्यकें दो लडके थे उनके पिता मरने पर एक लडकेनें अपने पिताकी मूर्ति बनवाई दुसरा लाडका अपनें पिताकी लिखी हुई पुस्तकें देखता रहा अब औषधिका ज्ञान किसको अधिक हुवा हमारे ध्यानमें तो पुस्तक देखनें वालेको ज्ञान अधिक होना चाहियें

[उ] मित्र आप स्थापनाके भेदको समझो स्थापना दो प्रकारकी होती है सत्य भाव स्थापना और असत्य भाव स्थापना जैसें राजवैद्यकी मूर्ति है सो सत्य भाव स्थापना है और कागजमें नाम लिखा वोह असत्य भाव स्थापना इसीसे मूर्ति और पुस्तक दोनों ही स्थापना है जो कि राजवैद्यका नाम लेनेसे पीडा चली जावे तब अपना कहना ठीक मालुम होता परन्तु ऐसा तो नहीं होसकता है

(स) एक पत्थर खानसे लाकर उसकी एक गाय एक सिंह एक प्रतिमा शिलावटने बनाई है अब वो गाय दूध दें और सिंह मारे तो हम निश्चय प्रतिमाको समझकें वंदन पुजन करेंगे.

(उ) मित्र जबतो आपका नाम लेना ही निष्फल हुवा (क्या कारण) जब वो पत्थरकी गायके पास बरतन लेके खडा होके मुंहसे पुकार करो गाय दुध दे तो क्या आपका पात्र भर जावेगा.

(स) क्या पत्थरकी गाय भी दुध देती है उसके पास पूकार करना निष्फल है.

(उ) वैसे ही आप परमेश्वरका नाम लेते हो सो भी आपके कथनानुसार निष्फल होगा.

[स] कोइ पतिव्रता स्त्रीका पति परदेश गया है वो स्त्री अपने पतिकी तसवीर अपने पास रखकर अपना मनोवांछित सुखकी प्राप्ती कर सके तो प्रतिमा भी तार सकती है नहीं तो दोनो निष्फल है.

[उ] तो वो बाई एक गादी बिछाकर हाथमें जप करनेके लिये माला लेवें और प्रतिमाका जाप करे तो पतिका सुख भोग सकती है.

(स) बाइजी वो स्त्री क्या कर सके भर्ताका नांमसे क्या होवे.

[उ] तो फिर आपका नाम लेना निष्फल हुवा मित्रो ऐसी सूमतिकी बहिन तुमारे हृदयमें कहांसे प्रवेस हुइ है

जीसीसे तुमको ये उत्सुत्र रूपी तर्का पैदा होता है परन्तु विचार करो विना स्थापना तुमारा कोइ भी काम नहीं चल सकता है जिसकी गतिका कुछ निर्णय नहीं है उसीका फोटु पगल्या समाधी कराके भक्ती करते है है। नारकी वगेरहका चित्र भंगाकी "स्थापना देशकी" देवलोककी" दिशाकी सेणी–संठाणकी–मेरुकी–जम्बूद्वीपकी–अठाई द्वीपकी–लोककी इत्यादि स्थापना रखते है। जहां पर परम पवित्र त्रिलोकी में पूजनीय परमेश्वरोंकी प्रतिमाका अधिकार आता है जब आपके हृदयमें उत्सूत्ररुपी सूल चलती है जरा परभवसे डरो उत्सूत्रका पाप जबर है मारवाडमें गीरीगाम उपासराके दरवाजे पर हरकचंदजी ढुंढियाकी मूर्ति है जिसका दर्शन लोक हमेशा करते है तो वे क्या हरकचंदजी मौजूद है सोचो जिन प्रतिमाके द्वेषी बनके क्यों जन्म विगाडते है.

(स) जो आशास्वति जिन प्रतिमा होती तो जीवाभिगम सूत्रमें लवण समुद्रकी वेलका अधिकारमें अर्हन्त चक्रवर्ती इत्यादिक बहुतसे जनोंको प्रभाव चला है परन्तु प्रतिमाका प्रभाव नहीं चला है इसीसे सिद्ध है कि अशास्वति जिन प्रतिमा नहीं है.

(उ) मीन्न प्रभाव है सो भाव निक्षेपका है इसीसे प्रतिमाका निषेध नहीं होता है देखो वहां पर नवकार मंत्र या वन्दना याक्षांत्यादिक दशयति धर्म वगेरहका प्रभाव नहीं चला है इनको आप कैसे मानते है जरा विचारो यह कथन वीर प्रभुका मुखारविंदका है और प्रतिमा भी प्रभुने आज्ञाकी है हम दोनों ही सत्य मानते हैं.

(स) द्वारका नगरी जिस समयमें जली थी जब प्रतिमा होती तो सहायता क्यों नहीं करती.

(उ) ये आपके स्मृतिका भ्रम मालुम होता है देखो भगवतिसूत्र सतक १५ में समोशरणमें भगवानके दो साधुको गोशालाने वाल दिये थे उन्होंको भगवान क्यों नहीं बचाये समझनेका इतना ही है कि भाविभाव किसीसे नहीं टलता है आप ऐसा कहोगे तो वहां द्वारिका नगरीमें भगवानके नाम लेने वाले भी बहुतसे थे फिर नगरी जलनेसे तुमारा नाम लेना ही निष्फल हुवा देखो प्रतिमाका प्रभाव नन्दी सूत्रमें मुलपाठ (थुभ) यह विशाला नगरीमें श्री मुनि सुव्रतस्वामीका थुंभ होनेसे नगरीकी रक्षा हुई है और अब भी बहुत चमत्कारी प्रतिमा यहां वर्तमान है.

(स) श्रेणिक राजाने नरक गति टलानेके लिये भगवानने चार बोल बतलाये है परन्तु मंदिर प्रतिमा करना नहीं बतलाया.

(उ) तुम्हारे माने हुए बत्तीस सूत्रोंमे यह लेख कौनसे सूत्रमें है सो बतलाओ

(स) सूत्रोंमे तो नहीं है परन्तु ग्रन्थोंमें तो है

(उ) लो अन्तमें तो हमारा ही शरना लेना पडा लो सुनों भगवानने तो ऐसा ही नहीं कहा है कि श्रेणिक साधुओंको वन्दना कर या नवकार मंत्र भण सो तेरी नारकी टल जायगी तो जब आप वन्दनामें और नवकार मंत्रमें धर्म समजते हो या नहीं जेसे वन्दना नवकार ऐसे ही प्रतिमा समझना.

(स) सालीभद्रजीने दान दिया तो चला है परन्तु प्रतिमा कराई तो नहीं चली है

[उ] प्रिय मित्रो देखो सालीभद्रजीका चरित्र उनके घरमें रत्नोंकी जिन प्रतिमा चली है.

[स] ऐसी युक्तिया तो बहुत है परन्तु कोई बत्तीस

सुत्रमें अमास्वाति जिन प्रतिमा चली हो तो बतलाओ सो हम स्वीकार करेंगे.

[उ] एक कविने कहा है " वर शृंगार मंदिर चढी पिवका फुटा नैन । वहरा आगे गायके विर्था गमाया बैन" प्रथम ही हम वहुत सूत्रोंकी साक्षी लिख आये है उसपर जरा ध्यान रखना और अधिक स्पष्ट आग लिखेंगे सो पढलेना.

(स) महानिशीथ सूत्रमें पाचवें नव निस्सार अध्ययनमें कमलाप्रभाचार्यने कहा है कि चैत्य प्रतिमा सावद्य कर्म है और ऐसा कहो कि तीर्थंकर गोत्र वांधा है आप धर्म कैसे कहते हो.

[उ] महानिशीथ सूत्रका अक्षर २ हम सत्य मानते हैं और जो आचार्यों कहा है सो भी सत्य है इसका तात्पर्य गुरुगम्यमें रहा है सो आप सरीखे उत्सुत्र भापन करनेवाले को मालुम नहीं होती है यह तो महावीर प्रभुके परपराय वाले ही जानते हैं हम पुछते है कि ये हम महानिशीथ आप मानते हो तो फिर इस सूत्रका तीसरे अध्ययनमें मंदिर बनानेसे श्रावक बारहमें स्वर्गमें जाता है जिसका 'पाठ'

काउंपि जिणाय यशोदि मंडियं, सव्व मेयं-णी यीदं, दाणाई चउक्केसा, सह्रो गच्छेज्जं अच्छु-अं, जाव.

इसको ही स्वीकार करो

(स) आप महानिशीथके पाठको कैसे समजते हो.

[उ] शास्त्रमें विधि चैत्य अविधि चैत्य कहा है और कमलप्रभाचार्यको वो द्रव्यलिंगी चैत्यवासी सावद्य कर्तव्यके करने वाले आमन्त्रणार्थी उसपर आचार्य महाराजने आज्ञा किया कि ऐसा सावद्य कर्तव्य याने अविधिचैत्य कराना मैं नहीं कहता हुं.

[स] अविधि चैत्य किसको कहते है.

[उ] जो साधु द्रव्य इकट्ठा करके चैत्य करावे या गृहस्थ मान या ममताके लिये चैत्य करावे या विना विधिसे चैत्य करावे जिसको अविधि चैत्य कहते है इसीसे कमलप्रभाचार्य अविधि चैत्यका निषेध किया है सर्वज्ञकी वाणिमें कभी पुनरपि दोष नहीं आता है देखो महानिशीथ सूत्रके तीसरे अध्ययनमें तो चैत्य करानेसे बारमा स्वर्ग जाता है और पाच-

वें अध्ययनमें निषेध करा यह परस्पर विरुद्ध होता है इसीसे समझना चाहिये कि कमलप्रभा आचार्यने निषेध किया है सो उन द्रव्यलिंगि चैत्य प्रतिमा उपासक साधुकी ममता मूर्च्छा आश्रयी है परन्तू विधि चैत्यका निषेध नहीं है जैसे सामायक करना श्रेष्ठ है परन्तु ममता मान तथा इस लोकके सुख धनके लिये सामायककी रजा मुनिके पास मांगना मुनि मना करके रजा नही देवे ऐसे ही कमलप्रभाचार्य समज लेना चाहिये.

(स) जिन दत्तसूरिकी बनाई हुई संदेह दोलावलीमें भी मंदिर प्रतिमाका निषेध है. वा सिंघपटा गर्थमें भी निषेध है

(उ) वहां अवधि चैत्यका निषेध है उसी आचार्य महाराजके की हुइ प्रतिष्ठाके मंदिर अभी विद्यमान है दर्शन करके अपना जन्म सफल करो मुख्य कारण यह है कि आप लोग गुरुगमसे शास्त्र नहीं पढते है। जिससे ऐसी कुतर्के पैदा होती है.

(स) सुत्र प्रश्न व्याकरण अध्ययन पहलेमें प्रतिमा मंदिर शुभ पादुका वगेरह कराने वाला मंद बुद्धिया नरक गामि होता है और आचारांग सुत्रमें अध्ययन पहलामें जन्म मरण

मिटानेके लिये जीव हिंसा करे तो वोध बीजका नाश हो एसो पाठ है तो फिर मंदिर प्रतिमा करानेसे धर्म कैसा समझा जावेगा.

(उ) प्रिय मित्रो इसका तात्पर्य मुलपाठ अर्थ के साथ हमें चौथे प्रश्नमें लिखेंगे यहां हम इतना ही पुछते हैं कि सुत्र ज्ञाताजी अध्ययन आठमेंमें श्रीमल्लिनाथ परमेश्वर आप सरीखी मूर्ति (पुतला) बनवाई थी उनीको आपके प्रश्न व्याकरणके पाठसे क्या समझोगे और उस पुतलीमें एक २ ग्रास हमेशा डालते थे जिसमें असंख्याते जीवोंकी उत्पत्ति हुई थी यह काम केवल छे* मित्रोंको प्रतिबोध करानेके लिये ही किया था अब आप क्या आचारांग सूत्रके लेखानुसार इन परमेश्वरोंको कैसे समजोगे.

(स) (पूर्वोक्त)दोनों सुत्रोंके पाठको आप कैसे समझते हो.

(उ) प्रिय मित्रों हम पूर्वाचार्योंका किया हुवा यथार्थ अर्थको मानने वाले है पूर्वाचार्य इन दोनों पाठोंको अन्य मतियोंकी अपेक्षा कहा है वैसे ही हम मानते है विस्तार पूर्वक देखना हो तो चौथे प्रश्नमें देखो

(स) आप जो प्रतिमा अर्हन्तोंकी मानते हो वो प्रतिमा अजीव है जिसमे कुछ भी लाभ नही होता केवल धाम-

---

*धर्मके लिये हिंस्या हुइथी

धूम करना निष्फल है.

(उ) आप जो अजीव देखकर प्रतिमाका निषेध करते हो मगर देखो दशमी कालिक सुत्रके अध्ययन आठमेमें ऐसा पाठ है.

चित्तं भित्तं न णिज्झाए नरी वासु अलंकिय भख्खरं पिवदठूणं दिट्ठिं पडिसमाहारे.

अब विचार करो उपर पाठमें चित्रकी हो स्त्री जहां पर साधुको नहीं रहना चाहीये चित्तवृत्ति मलिन होती है तो क्या उस स्त्रीमें जीव है अपितु नहीं है जैसे ही परमेश्वरोंकी मूर्ति चित्तवृत्ति निर्मल करती है अन्तकरण शुद्ध होनोंसे कई मनुष्य या पशु भी वोधको प्राप्त हुए हैं सो लेख शास्त्रोंमें विद्यमान हैं देखना होवे तो सनातन मुनियोंकी सेवा करो.

(स) जो प्रतिमा अरहन्तोंकी मान ली जावे तदपि आप लोग जिन प्रतिमा जिन सारिखी कहते हो तो केवल हठही है.

(उ) प्रिय मित्रो कानी हथिनीकी तरह मत देखो जरा भाव नेत्र खोलके गणधरोंके वचनों पर ध्यान धरो जिन प्रतिमा जिन सारिखी हम हमारी मतिसे नहीं कहते हैं श्री गणधर भगवाननें कही है.

(स) क्या गणधर भगवान आपके ही कानमें उपदेश कर गये हैं जो कि सूत्रमें लिखा हो तो पाठ निकालके बतलाओ सो हम स्वीकार करेंगे.

(उ) अब यह वात तो आपको मंजुर है कि बत्तीस सुत्रोंके मूलपाठमें जिन प्रतिमा जिन सारखी गणधर देवोंने आज्ञा की हो तो मानके मिथ्या हठको छोड देना.

(स) हां यह वात हमको स्वीकार है.

(उ) लो सूत्र रायप्रसेणीमें सुर्याभ देवताके पूजाके अधिकारमें गणधर भगवानने कहा है कि—

धूवं दाउणं जिन वराणं

इस पाठमें कहा है कि धूप जिनराजको दे के देखो प्रतिमाको जिनराज कहा है ऐसी ही पाठ जीवाभिगम सुत्रमें है इससे सिद्ध हुवा कि जिन प्रतिमा जिन सरखी है.

(स) यह पाठ हमारे गुरुजी हमको क्यों नहीं सुनाते है.

(उ) प्रिय मित्रो यह केवल भोले भद्रिक लोगोंको ठिपे नेकी रचना है जिसमें कोई भव्य जीव आत्मकल्याणकी इच्छावाले गवेषणा करते है जब सत्य धर्मकी प्राप्ती होती है

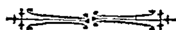
आप ही विचार करो कि जो इन लोंकोमें विद्वान होता है सो तो सर्पकी कांचली मुताबिक इनको छोडके सत्य धर्मको धारण कर लेता है इसीके लिये मूर्तिके विषयमें सच्चा अर्थ आप लोंगोंको नहीं सुनाते हैं.

(स) गणधरके वचनोंको हम प्रमाण मानते हैं परन्तु समजनेके लिये हम पुछते हैं कि ऐसे और भी कोई प्रमाण है.

(उ) वाहरे मित्रो लो सुनो (सूत्र) अंन्तगढ या ज्ञाता, या निर्या वलिकामें द्वारिका नगरीका वर्णनमें ऐसा पाठ है 'पच्चखं देवलोक भूया' अब विचारो कहां तो देवलोक कहां द्वारिका परन्तु गणधरोंने कहा है कि द्वारिका प्रत्यक्ष देवलोक सरीखी है फिर भगवती ज्ञातादि सुत्रोंमें ऐसा पाठ है 'इदं मोहे तिवा' इत्यादि देखो इन्द्रकी प्रतिमाकों इंद्र महोत्सवकों कहा है फिर लकडीका घोडा वालकके पास हो तो साधु उसको घोडा कहे इसीसे सिद्ध हुवा कि सुत्रानुसार जिन प्रतिमा जिन सारिखी कहने वाला ही वीतराग वचनोंका आराधक है देखो इन सुत्रोंसे वालकोंको ही मालुम हो जाता है कि जिन प्रतिमा सास्वति असास्वति है सो अरहन्तोंकी है जिन प्रतिमा जिन सारखी है विचार करो एक जिन प्रतिमा उत्था-

पनेसे कितने सुत्र उत्थापके बत्तीस सुत्र माने जिसमें भी टीका निर्युक्ति अर्थादि उत्थाय अब बत्तीस सुत्रोंके पाठ मानना रक्खा जिसमें भी मूर्तिके अधिकारको उलट पुलट कर दिया और ग्रन्थोंसे जोर ढाल चोपाई बनाई है जिसमेंसे प्रतिमाका अधिकार निकालना पडा देखो कितनी जिन सास्त्राकी आशातना करनी पडती है यह केवल प्रतिमा उत्थापनेका कारण है इतने परिश्रा करनेसे भी झूठेके सच्चे तो कभी भी नहीं बन सकोगे अब मानना न मानना मरजी तुमारी है (बुद्धे फलं तत्व विचारणं च) इस वास्ते बुद्धिवानोंका कर्तव्य तत्व विचार करनेका ही है अन्य शंका हो तो सवाल करे।

इति प्रथम प्रश्न समाप्तम् ॥



॥ सिद्ध जिन पडिमा ॥

अथ द्वितिय प्रश्न प्रारंभ ॥

दोहा—जिन प्रतिमा पूजन वन्दन द्वितिय प्रश्न छे एम।
सावधान थइ साभलो निम उपजे मन प्रेम ॥१॥

[स] मान लिया जावे कि जिन प्रतिमा सास्वती असास्वती अरिहन्तोंकी है तथापि कोई दशामें वन्दनीय तो नहीं ठहर सकती है.

[उ] में आपको धन्यवाद देता हुं सत्यार्थको धारण करने वाले जो कि ऐसे भ्रमजालमें फसे हूए मिथ्यात्व टेकको छोडकर श्री जिनागममें लिखी हूई जिन प्रतिमा अरिहन्तोंकी मानी है जिसीसे मेरा परिश्रम सफल हुआ परन्तु हमारा कहना यह है कि आप जो परदेशी राजाकी तरह न्यायपर खडे रहोगे तो आपको निश्चय सत्य धर्मकी प्राप्ती होगी प्रिय मित्रो हमारे किसी ही मतका पक्षपात नही है केवल उपगार दिष्टीसे ही उत्तर करता हुं अगर आप कहते हो कि जिन प्रतिमा तो अरिहन्तोंकी है परन्तु वन्दनीय नही है यह बडी भूल है जब आपने देव मान लिया तो उसको अवन्दनीय कहना कोई विद्वानोंका काम नही है इसको सामान्य मनुष्य भी समझ सकता है कि अपने देवको वन्दना न करनेसे अवनीत गीना जाता है आप जिन प्रतिमा वन्दनीय नही कहते हो इसका मुख्य तात्पर्य प्रगट करो आपका भ्रम दुर होजाय.

[स] वन्दना हम गुणको करते है और प्रतिमा है सो

भगवानका आकार है परन्तू वहां भगवानका गुण नही हैं,

[उ] जब तो नाम लेना ही निष्फल हुआ कारण भगवान तो मोक्ष पधार गये उन्हीका नाम लेना भी आपके मंतव्यानुकुल कुछ भी गुण नही होगा जब आप लोग नाम लेनेमें अच्छा लाभ समझते हो तो प्रतिमा वन्दनेमें अधिक लाभ समझना चाहिए कारण नाम लेनेमें एक ही निक्षेप है.

[प्र] नाममें गुण नही है परन्तु हम नामके साथ भाव मिलाते है जिसीसे चित वृत्ति निर्मल होके कर्म टुटते है.

[उ] प्रिय मित्रो यह आपकी समजका फरक है जो नाममें भाव मिलाते हो तो क्या मूर्तिमें नाम नही है उसमें भाव क्यों न मिलाते हो नाम लेनेसे भगवानका स्वरुप हृदय उत्पन्न नहीं होता है परन्तु मूर्तिकी शान्त मुद्रा देखनेसे हृदयमें भगवानका स्वरुप प्रगट होता है आर्द्रकुमार ‘शंभवा दिकको ज्ञान उत्पन्न हुवा है यह प्रत्येक लाभ है.

[प्र] ऐसे तो करकंडु आदि चार प्रत्येक बुद्धको लकडी थंभ आंब वृषभ देखके ज्ञान उत्पन्न हुवा है उन्होंको भी वन्दना चाहिए.

[ड] जिसका भाव निक्षेप वन्दनीय हो उसीका चार निक्षेप भी वन्दनीक होते हैं.

(स) प्रतिमा आप जो वन्दते हो तो प्रतिमाको बनाने वाला तो प्रतिमासे ही बढके हुवा उसीको ही वन्दना चाहिये.

(उ) प्रिय मित्रो प्रतिमावंदणासे तो तूमारे पूर्ण द्वेष है परन्तु साधुको तो आप ही वन्दते हो और तुमारे साधु नाई कुंम्भ कार खाती वगेरहको दिक्षा देते है उनको भी वन्दते हो तो उनके उत्पन्न करने वाले माता पिताको क्यों नहीं वन्दते है सो विचारो.

(स) प्रतिमा जबतक अप्रिष्ठित हो तो नही वन्दते हो और प्रतिष्ठा करनेके अनन्तर वन्दने है। सो क्या भगवानके गुणआकें प्राप्त होगये.

(ज) अब तक आपको मिथ्यात्वकी लहरें आ रही है परन्तु सुनो तुमारे गुरुजी जाट कुमहार तेली आदि अयोग्य अनपढ आदिने दीक्षा देना चाहते है परन्तु जहांतक दिक्षा नहीं लिया है तबतक उनको तुम नहीं वन्दते हो और दीक्षा देनेसे ही वन्दने लग जाते हो। तो क्या उस अनपढ साधूमें साधुपनेका गुण आ गये.

(स) प्रतिष्ठा की हुई प्रतिमाकी तो, आसातना टालते हो अप्रतिष्ठीकी असातन नहीं टालते हो-सो क्या गुणामें न्युनाधिक है।

(उ) साधूके पाठकी आप लोग अशातना टालते हो वो ही पाठ अपने घर पड़ा होवे तो उसकी आसातना नहीं टालते है।

(स) सुत्रमें जिन प्रतिमाका अधिकार तो चला है परन्तु साधु श्रावक वन्दी ऐसा कोई सूत्रमें नहीं चला, चला हो तो बतलाओ

(उ) सूत्रमें तो बहुत श्रावक साधु वन्दी है परन्तु आपको मालुम न पडती यह कुगुरु लोगोंका प्रताप है सो सच्चे गुरु जिनोंकी संगत करोगे तो ठीक २ मालुम होगा.

(स) क्या हमारे गुरुजी सूत्र नहीं पडते है.

(उ) हो गुरुगमसे नहीं पडते हैं जिसीसे समझमें नहीं आता है जहां पर प्रतिमा वन्दनेका अधिकार आता है वहां अर्थको पलटाके आप सरीखे भोले जीवोंको फन्देमें डाल देते हैं

(स) क्या उनको परभवका डर नहीं है सब साधू उत्सूत्र भाषण करते हैं.

(उ) देखो श्रीवीर प्रभुकी मोजुदगीमें गोशाला जमालि आदि मिथ्या कदाग्रहसे अपना मत चला रह था जैसे ही अभी भी जिन मूर्तिका उत्थादि समज लेना.

[स] समझ लिया जावे कि जिन प्रतिमा अरहन्तोंकी है दर्शन करना वन्दना नमोथ्थुणं यह कहना ठीक है परन्तु आप लोग बडी धामधुमसे पूजा करते हो। इसीमें तो प्रत्यक्ष छे कायके जीवोंकी हिंसा होती है और भगवानने स्थान स्थान पर माहन २ वचन फरमाया है और त्यागी पुरुषोंको जल पुष्प वगेरह चढावना जैन सिद्धान्तोसे बिलकुल विपरीत है इसीसे पूजा करना हम ठीक नहीं समझते है.

[उ] प्रिय मित्रो प्रथम तो पूजनीय होगा सो ही पुरुष पुजा जायगा आप कहते हो कि सुत्रमें माहन २ बचन कहा है सो हम स्वीकार करते है परन्तु आप भगवानके समोशरणका अधिकार कभी सुना है नही तो अब सुनो जोजन प्रमाण मांड लीया कितने वायुकाय और त्रसकायकी हिंसा हूई होगी यहां देवताओंका कोई घर सम्बंधी काम नही है केवल परमेश्वरोंकी भक्तिके लियेही मंडल तयार किया है ऊसमें जलकी वृष्टि पुष्पोंकी वृष्टि की है कहो अब आपका

माहन २ शब्द कहांपर प्रवेस हूवा आप कहते है कि पूजा करना ठीक नहीं है परन्तु देखो उववाई सुत्रमें ऐसा पाठ है

अप्पे गइआ वन्दन वत्तियाए अप्पे गइया पुयणा वत्तियाए

यह मुल सूत्रमें पाठ है कि भगवानकी पूजा करनेके वास्ते गया है तो अभी हम लोग शास्त्रानुसार पूजा करते है इसीमें कोई बाधा नहीं

(म) सूत्र भगवती आदि बहुतसे सुत्रोंमें अधिकार एसा है सचित पुष्पादिक बाहर रखकर फिर समोसरनमें लोक जाते है.

(उ) जो सचित वस्तु बाहर रखते है सो अपने उपभोग की है ऐसे कहोगे तो समोसरनमें धींचण (जानु) प्रमाण पुष्प सचित्त ही रहते हैं.

(स) वो तो पुष्प देवताके वैक्रिय बनाया हुवा अचित है.

(उ) देखो समवायाग सूत्रमें अतिशयके अधिकारमें ऐसा पाठ है.

जलज थलज दसद्ध वन्नाहिं पुप्फे हिं इत्यादि

३४ अतिशयमें एक अतिशयमें ऐसा है कि जलमें उत्पन्न

हुवा कमलादि स्थानमें उत्पन्न हुवा गुलाव वगेरहका पुष्प जानु प्रमाने पूंज करै आवश्यक चूर्णिका भी एही पाठ है अव इस पाठसे सिद्ध हुवा कि समोसरनमें पुष्प सचित है.

(स) जो समोशरणमें पुष्प सचित्त हो तो मुनियोंका गमनागमन किस रीतिसे होता होगा.

(उ) यह प्रश्न आपकी बुद्धिके प्रभावको वतलाने वाला है वो देवता महा विवेकी परमेश्वर और गौतमादि मुनियोंके परम भक्तोंने समोसरनकी रचना की है तुमारेसे तो देवता बुद्धिवान होगा किसी सनातन जैन मुनियोंके पास समोसरनकी रचना सुनो सो मालुम हो कि मुनि समोसरनमें गमनागमन कैसे करते हैं.

(स) हम आपसे ही पुछते हैं कहिये.

(उ) प्रकरणमाला ग्रन्थमें समोसरण प्रकरण नामका २४ श्लोकका एक ग्रन्थ है उसको देखो यहां ग्रन्थ वढनेके भयसे नहीं लिखा.

(स) कुछ भी हो वो तो देवताका जीत व आचार है जिससे करते हैं.

(उ) प्रिय मित्रो जरा निर्णय बुद्धि रखो वीचारो जीत व्यवहारकी श्री परमेश्वरोंने आज्ञा दी है और आज्ञा है सोई धर्म है.

(स) जीत व्यवहारमें भगवाननें कब आज्ञा दी थी यदि जो आज्ञा हो तो पाठ बतलाओ.

(उ) लो सुनो सूत्ररायपसेणीका पाठ

पोराण मेयं देवा जीया मेयं देवाकीचामयदेवा करणी जंमयदेवा आचिण मेयं देवा अभणुन्नाय मेय देवा.

अर्थ—भगवान कहते हुए देवताओ तुमारा पुराणा आचार है जीत आचार है गत कालमें देवताओंने किया है अब करने योग्य है गये भूतकालमें तीर्थकरोंने आज्ञा दी है में भी आज्ञा देता हुं इस पाठसे सिद्ध हुवा कि देवताओंकी करनीमें जिन आज्ञा है वो ही धर्म है

(स) धर्म पुण्य है सो देवताओंका है परन्तु भगवानके एक लाख गुण सट हजार श्रावक हुवा सुत्रामे चले आते हैं जिनोंमेंसे किसी श्रावकनें जिन प्रतिमाकी पूजा कीहो तो बत्तीस सूत्रका मूलपाठ बतलाओ.

(उ) बहुतसे श्रावकोंने द्रव्यभावसे पूजा की है तुमारे अन्तराय कर्मोंका वेग है पूजा करना तो दूर रहा परन्तु जिन

प्रतिमाका दर्शन करना ही कठिन हो गया और उलटी श्री जिन प्रतिमाकी असातनासे दुर्गतिके भाजन बनते है.

(ख) आप मुखसे ही पुकारते है कि बहुत श्रावकोंनें पूजा की है परन्तु एक दो श्रावकोंका बत्तीस सूत्रके मूल-पाठसे नाम तो बतलाओ.

(ग) जब तक मिथ्यामोहनीका जोर है तब तक सत्य वस्तुकी प्राप्ति नहीं होती है जो आपको आत्मकल्यानकी ईच्छा हो तो नीचे लिखे बत्तीस सूत्रोंके मूलपाठमें जिन श्रा-वकोंने पूजा की है जिसका पाठ अर्थ पर ध्यान देके सुनों.

१ सूत्ररायपसेणीमें सूर्याभदेवताने जिनप्रतिमाकी पूजा करके अपना जन्म सफल किया है.

२ सूत्रउपासक दसाध्ययन पहलोमें आनन्द श्रावकनें प्रतिमावन्दी और पुजाकी ऐसीही एक लाख गुण सठ हजार श्रावक समझ लेना.

३ सूत्र ज्ञाताजी अध्ययन सोलम द्रोपदी महा सतीनें जिनप्रतिमा पूजी है ऐसे ही तीन लाख साट हजार समझ लेना.

४ सूत्र भगवति शतक २० उ० ९ में जंगा चारण विद्या

चारण मुनियोंने जिनप्रतिमावन्दी है ऐसे ही चौदा हजार मुनि छतीस हजार साध्वी समज लेना यह बत्तीस सूत्रमें वीर प्रभुके चतुर्विध संघने प्रतिमा पूजी है जैसे ही अतीत अनागत कालके तीर्थंकरोंके शासनमें चतुर्विध सघ प्रतिमा पूजी और पूजते हैं और पूजेंगे

(स) देवताओंने जिन प्रतिमा पूजी है वो हम स्वीकार करते हैं परन्तु आनन्द श्रावक प्रतिमा वदने पूजनेका अधिकार सत्रमें नहीं है.

(उ) लो अब सुनों आनन्द श्रावक वीर प्रभुसे सम्यक्त्व लेते समय ऐसा कहा है सो पाठ

नो खलुमे भंते कप्पइ अज्ज पभइं चणं अन्न उच्छियावा अन्न उच्छिय देवीयां, एवां अन्न उच्छिय परिग्गहि याअरिहंत चेइयाइं वंदित्तएवा नमं सिं त्तएवा पुछिछू आलवित्तएवा संल वित्तएवा तेसिं असणवा पाणंवा खाइमंवा साइ मंवा दाउंवा अणुपदा उंवा.

अर्थ—आनन्द कह रहा है कि भगवान नहीं कल्पे मुझको

आज पीछे अन्य तीर्थी १ और अन्य तीर्थियोंके देव हरिहलधर देवोंकी प्रतिमा २ अन्य तीर्थोंके गृहण की हुई जिन प्रतिमा-को वन्दना नमस्कार करना या पहले बोलना (बतलाना) तथा उनको अशनादिक आहार देना दिलाना इस पाठमें जिन प्रतिमा वन्दनीय सिध होती है.

(स) प्राचीन उपासक दशामें तीसरा पाठमें अरिहन्त शब्द नहीं है पीछेसे मिलाया मालुम होता है.

(उ) चैत्य जो तुम साधु या ज्ञानार्थ करते हो सो साधु ज्ञान किसका है.

(स) साधु ज्ञान अरिहन्तोंका है.

(उ) आप कहते हो कि अरिहन्त शब्द नया डाला है फिर अरिहन्त शब्द कहांसे लाये.

(स) अरिहन्त शब्द प्रक्षेपसे कहना पडता है.

(उ) फिर आपकी तर्क अरिहन्त शब्द नहीं है वो कहना निष्फल हुवा.

(स) तीसरे पाठमें श्रद्धा भ्रष्ट अरहन्तोंका साधु है जिसको वन्दना करनेका आनन्द श्रावकनें निषेध किया है.

(उ) प्रिय मित्रो जो श्रद्धा भ्रष्ट हुवा साधु तो पहले ही

पाठमें आ गया था जिस साधुकी श्रद्धा भ्रष्ट हुई वो अरिहन्तका साधु नहीं कहा जाता है और ऐसे कहोगे तो ज्ञाताजी सूत्र सुकदेव सन्यासी तथा भगवति स० २ उ० पहला खंदक सन्यासी तथा स० ११ सिवराज ऋषीस्वर तथा पोगल सन्यासी इत्यादिक भगवानके पास दीक्षा लेनेसे स्वतीर्थका साधू कहा जाता है वैसे ही स्वतीर्थी साधूकी श्रद्धा अन्य तीर्थी कि हो जाती है सो पहला पाठमें आ गया तीसरे पाठमें जिनप्रतिमा ही है.

(स) जिन प्रतिमा अन्य तीर्थ ग्रहण करनेसे क्या प्रतिमाका गुण चला जाता है.

(उ) आप लोग जैन सास्त्रों कि रहस्यकों नहीं समझते है कि व्यवहार शुद्ध और अशुद्ध किसको कहते हैं हम पूछते हैं कि तुमारे साधु कोई वेश्या या कसाई के वहा बैठा हो उनको आप वन्दते हो या नहीं.

(स) वाजी हम कैसे वन्देंगे व्यव्हार अशुद्ध है.

(उ) उसी प्रकार प्रतिमामें समझ लेना प्रिय मित्रो किंचित् वव्यहारको समझो (१) असोच्या केवलीको केवल उत्पन्न होनेसे वाणी (देशना) नहीं देवें केवल व्यवहारके लिये ही.

२ वीर प्रभु जानते थे कि हमारे रोगकी स्थिति पूरी हो गई है तथापि औषध किया.

३ केवली रात्री दिवस एक सरीखा जाने है तथापि रात्रमें व्यवहार नहीं करै.

४ मल्लिनाथ प्रभु अवेदि अवस्थामें आर्याकी परिषदामें रहते थे सो विचारो.

५ साधु गवेषणा करके आहार लाया जिसमे कथंचित् असुध आहार आवे वो आहार केवली करे तो व्यव०

६ राजादिककी असज्याई टालनी सो व्यव.

७ सुख मालिका साध्वीको जुदी नहीं की. वी सो.

८ भगवनका दो साधुका आयुष्य निकट था तथापि गोसालेसे चरचा करते कामना किये ते व्यव.

९ साधु वर्षामें वृक्ष नीचे खडा है कोई स्त्री आवे तो वर्षामें अन्य स्थान जावे सो व्यव.

१० इत्यादि वहुत वाक्य व्यवहारके हैं जिनको अच्छी तरह समझो.

(स) सूत्रमें ऐसा नहीं कहा कि आनन्दनें प्रतिमा पूजी है कहा हो तो वतलाओ.

(उ) किसी कविनें कहा है कि, "अन्धा ऊंदर थोथा धान। जैसा गुरु तैसा ही यजमान" मालुम पडे कहासुं हम पूछते हैं कि आनन्द श्रावके साधुको वन्दना करना. कीस पाठमें रखा है वोह बतलावे.

(सं) साधूको वन्दना करना तो जब अन्य मतावलं-वियोंके साधूका वन्दनाका निषेध हुवा तब स्वतीर्थियोंके साधुको वन्दना करना आपसे ही रहा.

(उ) प्रिय मित्रो भाव निद्रा दूर करो जो पहले पाठसे साधूकी वन्दना सिद्ध करते हैं। तो दूसरे पाठमें अन्य तीर्थियोंकी प्रतिमाका निषेधमेंसे स्वतीर्थियोंकी प्रतिमाका वन्दना आपके कहनेसे ही सिद्ध हो गया अब किस बातकी दंत कटाकट कर रहे हो

(स) जो दूसरे पाठमें प्रतिमा सिद्ध हो गई तो पुनः तीसरा पाठ किस लिये कहा है.

(उ) जो दूसरे पाठमें कही हुई जिन प्रतिमा अन्य तीर्थि-यों ग्रहण की उसको नहीं वन्दना इसी वास्ते तीसरा पाठ कहा है.

(स) अन्य तीर्थो जिन प्रतिमा किस वास्ते ग्रहण करते हैं.

(उ) जिन प्रतिमा तथा उनके अधिष्टायक देव बहुत च-

मत्कारी होते हैं इस भव पर भवमें बहुत अच्छे मुक्ति रुप फलके दाता हैं कोई समय किसी क्षेत्रमें जैनियोंकी स्वल्प संख्या होने पर अन्य मती जिन प्रतिमाको अपना दैवत करके ग्रहण करते हैं दृष्टांतके वास्तें नीचे लिखता हुं.

१ श्री शान्तिनाथजीकी प्रतिमाको जगन्नाथजीमें अन्य तीर्थी अपनी करकें पूजते हैं.

२ श्री पारसनाथजीकी प्रतिमाको बद्रीनाथजी बनाकें अन्य तीर्थी पूजते हैं.

३ श्री ऋषभदेवजीकी प्रतिमाकोका गडाकाकिलामे अन्य तीर्थी पूजते हैं.

४ श्री चंद्प्रभुजीकी प्रतिमाकुं केसरियाजीके पाट्टणमें केसरियाजी करके पूजते हैं.

(स) जो आप जिन प्रतिमा कहते हौ तो वहां आनन्दनें कहा है कि में बोलुं बुलाऊं नहीं अशनादिक देऊं दिलाऊं नहीं तो क्या पूर्वोक्ति बोल प्रतिमाको कैसें करें

(ज) जिस बोलमें संभव हो बोल लगाना चाहिये कहो अन्य तीर्थियोंकी प्रतिमाको कैसे बोलावे समजनेका इतना है कि अन्य तीर्थोको तो सर्व बोल है और प्रतिमाको वन्दना नमस्कार है जैसे ठाणांग

सूत्र उवाइ व्यवहार सूत्रमें सिंघरी वैयावच्च करणा कहा है अब विचारीए साधू तेरे बोलसे श्रावककी वैयावच्च कैसे करे परन्तु यह विचार गुरुगममें है यथा संभवसे समझ लेना

(स) ये तो युक्तिया है जो मूलपाठमें हो तो बतलाओ सो हम स्वीकार करेंगे.

(उ) हम पूछते हैं कि आनन्द श्रावक अपने जीवनमें क्या ? काम किया सो बतलाओ

(स) और काम सूत्रमें नहीं लिखे परन्तु जो प्रतिमा बन्दना पूजना मंदिर कराना ये तो धर्मके काम सुत्रमें अवश्य होने चाहीये.

(उ) जिन प्रतिमामे तो आपका द्वेष मालूम होता है परन्तु सामायक करनेमे तो आप लोग धर्म समझते है और आनन्द श्रावकके सामायक करनेका मूल सुत्रसे पाठ बतलाओ कि आनन्द श्रावकनें अमुक दिन सामायक करी है

(स) सामायकका पाठ तो सुत्रमें स्पष्टतया चला है सो देखो (पाठ) "सीलवय गुण वेर-मण पचखाण" इत्यादि इस पाठमें लिखा है कि आनन्दनें आचार व्रत क्षमादि गुण बहुत किये हैं व्रतमें सामायक आ गई परन्तु प्रतिमा पूजी नहीं कही.

(उ) बाहेर मत पासियो भावलोचन तो दपटा रहा ही है परन्तु द्रव्यनेत्र भी ढक गया है (दपटा गया) देखो यहां पहिले समकितकी कर्णी बतलाई है पीछे चारित्रकी करनी सो उन्होंके परम्परा वाले हम लोग करते हैं.

[स] शीलका अर्थ तो आचार होता है आप पूजा कहांसे लाये.

[उ] आचार क्या आप निम्बूके बनाये थे.

[स] नहीं जी आचार समकितकी करणीका है.

[उ] नवी बधुकी तरह प्रतिमाका नाम लेते क्यों शरमाते हो वही समकितकी करणी मंदिर प्रतिमा यात्रा स्वामि- वत्सलादि दीक्षा महोत्सव प्रभावना इसका नाम आचार है हम पूछते हैं कि आनन्दनें अन्य तीर्थोंको कितना निक्षेपा वन्दना छोडा है सो कहो.

[स] आनन्द अन्य तीर्थियोंके देवका चार ही निक्षेपा वन्दना छोडा है.

[उ] बस आपका ही कहना सिद्ध हुवा कि अन्य तीर्थि- योंका चार निक्षेप छोडा तो स्वतीर्थी श्री परमेश्वरका चार निक्षेपा ही उत्साह भावसे वांद पूजके अपनी आत्माका क-

त्याग करके एकावतारी हुए हैं जैसे आनन्द श्रावक जैसे ही १५९००० श्रावक समझ लेना चाहीए

[स] हम तो ऐसे नहीं माने ऐसा पाठ बतलाओ कि कुछ श्रावकोंको जिन प्रतिमा वन्दना कल्पे.

(उ) तुम नहीं मानोगे तो क्या शासन आपके आधारसे ही चल रहा है मानो न मानो खुशी आपकी है जो कि हम कल्पनेके पाठ बतला देवे तब भी तुम नहीं मानो तो हमारा जोर जबरदस्ती है नहीं

[स] क्या हमको आत्माका डर नहीं है सो भगवानके बचनोंको नहीं माने जरूर मानेंगे.

[उ] जो मानते हो तो सुनों "सूत्र उववाइजीका पाठ"

अंबडस्सणं नो कप्पइ अन्न उत्थिएवा अन्न उत्थिय देवया णीइवा अन्न उत्थि अ परिग्गाहियाइं अरिहन्त चेइयाइंवा वंदित्त एवा नमं सित्तएवा नन्नत्थ अरिहंतेवा अरिहन्तचेइ आणित्ता.

इस पाठमें नहीं कल्पनाका पाठ तो आनन्द सरीखा है और अरिहन्तको या अरिहन्तोंकी प्रतिमाको वन्दना कल्पे ऐसा सूत्रमें लिखा है.

[स] यहां प्रतिमा नहीं है अरिहन्त तो तीर्थंकर और अरिहन्त चैइयाणिमें साधु है जो प्रतिमा कहोगे तो साधू वन्दनेका ही त्याग हो गया.

(उ) प्रिय मित्रो अरिहन्तोंमें साधु आ गये या संग्रह नयका शब्द है (जैसे कोई साहुकारको जीमनेका निमंत्रण घरके मालकके नामसे आवे तो सब घरके मनुष्य जीमनेको जा सकते हैं) और जो आप अर्थको पलटाके साधू कहोगे तो आचार्य उपाध्याय साध्वीको वन्दनाका त्याग हो गया.

[स] हमारे गुरुजी तो अरिहन्त चेइयाणंका अर्थ साधू करते हैं.

[उ] ये तुमारे गुरुजीका कृत्रिम कथन कहां तक चलेगा " दाबी दूबी नार हे रुई लपेटी आग " लो तुमारे और तुमारे गुरुजीका भ्रमको दूर करता हूं देखो भगवति सुत्रस. ३ "उ. पैला पाठ"

नन्नच्छ अरिहन्तेवा अरिहन्त चेइयाणि वा भावि अप्पणा अणगारस्सवा णिस्साए उढं उप्पयन्ति जावसो हम्मे कप्पे.

अर्थ—चमर इंद्रके अधिकारमें तीन सरणा कहे हैं देखो अंबडके अधिकारमें अरिहन्त चेइयाणिका अर्थ आप साधु कहते हो सो यहां पाठ अलग है इसीसे अरिहन्त चेइयाणका अर्थ प्रतिमाही होता है ऐसा अर्थ पूर्वाचार्योंने किया है.

[स] यहां दूसरा पाटका अर्थ छद्मस्थ अरिहन्त होता है.

[उ] बाहरे हटवादियो बतलाओ छद्मस्थ अरिहन्त पांच पदोमें कोनसे पदमें है जो कि अरिहन्तोंके पदमें कहोगे तो पहले शरणेमें आया जो कि साधु पदमें कहोगे तो तीसरे शरणेमें आया परन्तु दूसरा शरणा तो प्रतिमाकाही रहा अब हट छोडके आनन्द और अवडके अलावामें कही हुई जिन प्रतिमाको स्वीकार करो.

[स] चमरेन्द्र जो प्रतिमाका शरणलेके जाता तो नन्दीश्वर दीपमें जिन प्रतिमा थीं तो यहां वीर प्रभुके पास आनेकी कोनसी आवश्यक्ताथी.

[उ] प्रिय मित्रों जिसका शरणा लेके जावे उन्हीके पास आनाही पडता है जो आप छद्मस्थ अरिहन्त कहोगे तो अर्द्ध पुष्कर तथा घातकी खंडमें भाव तिर्थंकर थे उन्हीके पास क्या नहीं रहा देखो भय पाते हुए कोतो एक पावडेकाभी

फासला मिलना काफी है तो वहां तो लाखो योजनका अन्तर था तथापि समजनेका इतनाही है शरणा लेके जावे वहां अवश्य आना पडता है राजनीतिमें भी कहा है.

[स] जो प्रतिमा होती तो पीछे दो असातना क्यों कहते.

[उ] इसीसेंही सिद्ध हुवा कि जिन प्रतिमाकी आशातना सोई अरिहन्तोंकी आशातना है " पाठ " दस विकालक उ. ९।२।१८

संघदरत्ताकारणं तहाउवहिणामवि खमेह अवराहंमें वइजान पुणारिअ ॥१॥

इस गाथामें कहा है कि गुरुकी ऊपाधिकी आसातना है सोही गुरुकी आसातना है गुरुसेही अपराध क्षमाया जाता है और अन्तगढ सूत्रमें सुलसा हरीणे गमेसी देवताकी प्रतिमा आराधन करनेसे देवताका आराधन हुवा है जैसेही जिन प्रतिमाकी आराधना करनेसे जिनेन्द्र देवोंकी आराधना होती है.

[स] आनन्द अंबड श्रावकाकि जिन प्रतिमा वन्दनेका पाठ है सो हमको स्वीकार है परन्तु पूजनेका पाठ नहीं है हो तो बतलाओ.

[उ] देवानुप्रिय इसी श्रावकाने जिन प्रतिमा अच्छी तरह पूजी है और समवायाग सूत्रमें आनन्दादिक श्रावकोंके मंदिर कहासो पाठ हम पहले प्रश्नमें लिख आये है सो देख लेना और विस्तार पूर्वक देखना हो तो द्रोपदी महा सतीके अधिकारमें देखो.

[प्र] चमकके बोला कि हम द्रोपदीकी पूजा नहीं मानते है.

[उ] प्यारे चमको मत क्या कारण है सो द्रोपदी महा सतीकी पूजा नमोथुणं नहीं मानते हो.

[स] द्रोपदी पूर्वभवमें धर्मरुचि अनगारको कडुवा तूंबा बैराया वो अयुक्त काम किया.

[उ] खैर पूजा तो इस जन्ममे करी है परन्तु पूर्वजन्ममें शुकमालिका के भवमें साधुपना कैसे आ गया.

[स] द्रोपदी शुकमालिका के भवमेंही बहुत अयुक्त काम किया इसीसे पूजा हम नहीं मानते है.

[उ] देखो राज परदेशी उसी भवमें कितने अयुक्त काम किये है तदपि उसीको समकित आया तो द्रोपदीको क्यों नहीं आये यह आपको मालुम है कि वीर परमेश्वर पूर्वभवमें

कैसा २ त्रिदंडियोंका भव किया है और अभि जो साधु होते है वाँ पूर्व भवमें क्या २ काम किये होगे परन्तु समजनेका इतना ही है कि यह एक मूर्ख भद्रीक जीवोंके वास्ते जाल रचा है.

(स) द्रोपदी तो मिथ्यात्वनी थी जिससे उसकी पूजा हम प्रमाण नहीं करते.

(ज) अरे भाइयो जरा परभवसे तो डरो आपने भगवति सूत्र सुना होगा कि किसी जीव पर अछता आल देनेका कसा पाप है और ठाणांग सूत्रमें चतुर्विध संघका अवगुण वाद बोलनेसे दुर्लभ बोधित्व उपार्जन करता है सो ठाणांगके पांचवें ठाणेमें देख लेना आप द्रोपदीको मिथ्यात्वनी कहते है। सो आपको कोई अतिशय ज्ञान उत्पन्न हुवा है सो सूत्रमें वीतरागके वचन स्वीकार नहीं करते और अपने हट कदाग्रहको नहीं छोडते हो परन्तु हमारेको आपकी भाव करुणा आ रही है मित्रो सूत्र पर ध्यान धरो जिससे ठीक २ ज्ञात हो.

(स) हमारे गुरुजी कहते हैं कि द्रोपदीने पूर्व भवमें नियाना किया था जिससे जब तक पांच पती नहीं मिले वहां तक मिथ्यात्वनी थी.

(उ) विचारो जब परमाधर्मीके हाथमें जावोगे तब गुरुजी छुडानेको नहीं आवेगा नियाणेके भेदको समजो सुन समवायांगमें कहा है कि सब वासुदेव निदान कृत होते हैं फेर श्री कृष्णाजीको समकिती मानते हो या नहीं.

(स) कृष्णजी वासुदेवको नियाणा पूर्ण होनेसे समकित आया है जैसे ही द्रोपदीका नियाणा पूर्ण होनेसे समकित आया परन्तु पूजाकी जिस समय समकित नहीं था.

(उ) सूत्र दसा श्रुत स्कदमें लिखा है कि मनुष्य काम भोग संबंधीका नियाणा करे तो केवली परुपक धर्म[1] श्रवण भी नहीं मिलती है तो आपके कहनेसे तो द्रोपदीजीको भव भरमें ही समकित नहीं होना चाहीये और आप कहते हो कि नियाणा पूर्ण होनेसे समकित आया है यह भी कहना मीथ्या है कारण दशा श्रुत स्कन्ध सूत्रका अध्ययन १० में नवमा नियाणा साधुपनेका है.

साधूत्वका नियाणा करने वालेको आगले भवमें साधूपना आ जाता है परन्तु नियाणाके प्रभावसे उस भवमें केवल ज्ञान नहीं उत्पन्न होता है सो पाठ

एवं खलु समणाउसो तस्स निदाणस्सइ

1 ए कथन छोड़ सूतामे है या गालपुर्णमे है

मेयारुवं पावफल विवागे जं णोसंचाएति ते णोवभव गहणेणं सिज्झेत्ता जाव सव्व दुखाण मंत करेत्ता.

विचार करो साधुपना आनेसे ही नियाणाके प्रभावसे केवल ज्ञान नहीं उत्पन्न होता है तो फिर कृष्णजी और द्रोपदीको समकित कैसे आया.

(स) आप श्रीकृष्ण वासुदेवको समकित मानते है या नहीं.

(उ) हमतो कृष्णजी और द्रोपदी महासति दोनोंको समकित अच्छी तरहसे मानते है.

(स) किस कारणसे मानते हो.

[उ] नियाणे दो प्रकार के होते है मंद रस और तीव्र रस जिसके मन्द रसका नियाणा हो उसको समकित सुखे आता है जिसके तीव्र रसका नियाणा हो उसको सूत्रमें लिखाहुवा धर्म नहीं मिलता है.

[स] सुनने में आता है कि. द्रोपदी के एक पुत्र होनेसे समकित आया है.

[उ] एकीस आधारसे केहते हो तुमकों सुत्रांपर तो वीसवास नही है और सुणणेसे ही भर्ममे उत्तर जाते है लो सुणो.

जब नारद आया उस समयका [पाठ]

तएणां सा दो वइ देवी कच्छुलं नारयं असंजय अविरय अपडिहय पच्चक्खाय पावक मं तिकट्ठु नो आढाई नोपरिजाणाइं णोअब्भु ठेइ.

इस पाठमें द्रोपदी महासती नारदको असयति जानके नमस्कार नहीं किया विचारो यह करनी सम्यग्दृष्टीकी है या मिथ्या दृष्टीकी है और उस समय उसके पुत्र हुएका प्रमाण हो तो सूत्र पाठसे बतलाओ और देखना होतो लो सुनो पाठ

तएणंसे पउमे दोवइ एणयमठं पडि सुणेइंश्ता दोवइदेवी कन्नते उरे ठावइ तएणं सा दोवइ देवी छठं छठेणं अणि क्खित्तेणं आयं बिल परिग्गाहि एणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावे माणे विहरइ.

इस पाठमें द्रोपदी महासती पद्मोत्तर राजाके महलमें बेले २ पारणा किया है यह करणी समकितकी है विचार

करो ऐसी महासती को मिथ्यात्वनी कहनेवालो के मिथ्या-त्वोदय मालुम होता है.

[स] सूत्रमें द्रोपदी राज कन्या कही है परंतु श्रमणोपासिका नहीं कही है इसीसे समकितका संभव नही है.

[उ] सूत्र ज्ञाताजीमें मल्लिनाथ प्रभुको राजकन्या कही है और चेलना, देवकी, नन्दा, राजमति, आदि लेके बहुतसी जनीको श्राविका नही कही है इसीको आप समकिती मानते है या नहीं.

[स] द्रोपदी जीके समकित थी तो उन्हीके घरमें छै प्रकारका आहार किस वास्ते होता.

[उ] इसीसे समकित नही जाती है द्रोपदी का आहार करणाका पाठ हो तो बतलावो.

[स] द्रोपदीने नही किया तोभी उसके घरमें वो छै प्रकारका आहार हुवाथा.

(उ) ऐसे कहोगे तो सूत्र उपासक दशाध्यन ८ मे में महासतक श्रावकके घरमें रेवती प्रतिदिन मांसका आहार करतीथी तो क्या महाशतकका समकित चला गया था अपितु कभि नहीं देखो द्रुपद राजाके घरमें जिन मंदिर था इसका पाठ ज्ञाताजी सूत्रमें देखलेना और व्याह के समय छै प्रकारका आहार चला है इसका तात्पर्य यह है किव्याह के समय कई सम्यग्द्रष्टी कई मिथ्याद्रष्टी आदि

एकत्र होनेसे राजनिति में यथा योग्य भोजन सत्कार करना राजाओंका कर्तव्य है देखो भगवती सुत्र शतक ७ उ० ९ मा में वरुणनाग नतुवों श्रावक होनेपर सग्राममें गया है और संग्राम किया है.

[स] समकित या श्रावकपना द्रोपदीके होता तो पांच भर्तार किस वास्ते करती

[ज] प्रियमित्रों विचारो पांच भर्तार [1]वरिया है सो पूर्व नियाणेका उदय था इसीसे समकितको कोई बाधा नही है देखो निरयावलका सुत्र अध्ययन पहलामें चेलनाराणीका

ततेणंसा चेल्लणादेवी सेणियस्स रन्नो तेहिं उदरबली मसेहिं सोल्लेहं जावदोहल्ल विणेति.

इस पाठमे चेलनाराणी को मासका आहार डोहलाके प्रभावसे किया है परन्तु समकित को बाधा नही है ऐसेही द्रोपदी नियाणेके प्रभावमे पांच भर्तार करीया है

[स] खेर द्रोपदी को समकित हो परन्तु उन्होंने व्याह के समय भरतार के लिये कोई अन्य देवादिककी प्रतिमा पुजी होगी.

---

१ इसीको कृष्ण आदि राजाने काहा है "सुवरिय"

[उ] प्रिय मित्रो मोह निद्राको दूर करो और सूत्रको देखो (पाठ)

तएणं सा दोवइ रायवर कन्या जिणे व मज्जण घरे तेणेव उवगच्छई मज्जण घर मणुप्पविसइ एहाया कयबल्लिकम्मा कय कोउमंगल पाय च्छित्ता सुधपावेसाइं वत्थाइं परिहियाइं मज्जणण घराओ पडिणिक्खमइ जेणेव जिण घरे तेणेव उवा गच्छई जिणघर मणु पविसइ पविसइत्ता आलाए जिण पडिमाणं पणामं करेइ लोमहत्थयं परामुसइ एवं जहा सुरियाभो जिण पडिमाओ अच्चेइ तहेवज्ञाणियव्वं जावधुवं डहइधुवं डहइत्ता-वामं जाणु अंचेइ अंचेइता दाहिण जाणु धरणी तलंसि निहट्टु तिक्खत्तो मद्धाणं धरणी तलंसि निवेसेइ निवेसइता इसिं पच्चणमइ करयलजाव कट्टु एवं वयासिनमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं जावसं पत्ताणं वंदइ नमस्सइ जिनघराओ पडिणिरकमइ.

अर्थ–तबसे द्रौपदी राजवर कन्या जहां स्नान मंजन करनेका घर है तहां आवे मंजन घरमें प्रवेश करे स्नान करके किया है वलि कर्म पुजा कार्य अर्थात् घर देहरेमें पूजा करके कातुक तिलकादि मंगल दधि दुर्वा अक्षतादिक सोई प्रायश्चित दु:स्वप्नादिके घातक किये हैं जिसने शुद्ध और उज्वल बडे जिन मंदिरमें जाने योग्य ऐसे वस्त्र पहरके मंजन घरमेंसे निकले जहां जिन घर है वहां आवे जिन घरमें प्रवेश करे करके देखत ही जिन प्रतिमाको प्रणाम करे पीछे मोर पीछी लेकर जैसे सूर्याभदेवता जिन प्रतिमाको पूजे तैसे ही विधि जानना जो सूर्याभका अधिकार यावत धूप देने तक कहना पीछे धूप देके वाम जानु (डावा गोडा) ऊंचा रक्खे जिमणा जाणु (सज्जा गोडा) धरती पर स्थापन करे करके तीन वेर मस्तक पृथ्वी पर स्थापे स्थापके थोडीसी नीचे झुकके हाथ जोडके दसों नखोंको मिलाके मस्तक पर अंजलि करके ऐसे कहे नमस्कार होवो अरहन्त भगवन्त प्रतियावत् सिद्ध गति को प्राप्त हुवे हैं यहां यावत् शब्दसे सपूर्ण शक्रस्तव कहना पीछे वन्दना नमस्कार करके जिन घरसे निकले ऊपर लिखे हुवे पाठमें खुलासा मालुम होती है कि द्रौपदी महासति सत्तरे

प्रकारसे जिन प्रतिमा पूजी और नमोत्थुणं दिया है जिसमें मोक्षकी प्रार्थना की है तदपि मोहके कारणसे कहते है कि भरतारके लिये पूजनकी है यह बीतरागके वचनको छोडके आपका वचन कोई अकलका अंधा ही मानेगा जो ऐसा हो तो ऐसा पाठ होना चाहीये (भत्तार लभेणं सो तो है नहीं है "तीनाणं तारीयाणं" सिद्ध हुवा कि द्रोपदी महासती जिन प्रतिमा पुजी है सो मोक्षके लिये ही पुजी है.

(स) ठाणांग सूत्रके तीजे ठाणे जिन तीन प्रकारके कहे हैं जिसमें ये जिन प्रतिमा अवधि जिनकी होनेकी संभव है.

[उ] इस प्रश्नके विषयमें हम पहले प्रश्नके अंदर अच्छी तरहसे सिद्ध किया है सो देख लेना और विचारो नमोत्थुणं के गुण अवधि जिनमे है कि अरिहन्त जिनमें है सो विचारो और ज्ञाताजी सूत्रके दूजे अध्ययनमें भद्रासे ठाणीके अधिकारमें [नाग पडिमा यक्ष पडिमा भुत पडिमा वे सम न पडिमा कहा है तथा भगवति सूत्रमें (इंद मोहे तिवा) खंद मोहे तिवा इत्यादि पाठ चला है परन्तु जिन पडिमा अन्य देवोंके अधिकारमें कहां ही नहीं चली है चली हो तो बतलाओ.

(स) सुननेमें आता है कि नमोत्थुणंका पाठ ज्ञाताजी सूत्रमें पीछेसे डाला हुवा है.

(उ) देवानुप्रिय यह कथन तुमारे सरीखे भोले जीवों के लिये जाला रचा हुवा है तुम स्वयमेव विचार करो कि तुमारे मतको ही २४१ वर्ष हुवे है जिसमें वहुतसी जगह चरचा वार्ता हुई है जिसमें तुमारे विगर नमोथ्थुणंकी पडत कौनसे भंडारमें धर रक्खी है जो हो तो निकालके वतलाओ नहीं तो हमारे पास वहुत प्राचीन पुस्तक देख लो कि जिस समयमें तुम लोगोंका बीज भी नहीं था वस अपना मिथ्या हट छोडके शास्त्रको मानते हो तो माननाही पडेगाकी द्रौपदी महासती पुजाकी है सो मोक्षके लिये है.

(स) हमारे पारवतीजीकी बनाई हुई पुस्तकमें लिखा है कि नमोथ्थुणं पीछेसें डाला.

(उ) तुमारे पारवतीजी तो विद्यमान है तो फिर किस बातकी देरी है निकालके वतलाओ परन्तु वतलावें कहासे है ही नहीं.

(स) जो द्रौपदीजी मोक्षके वास्ते पुज करी कहेते है तो एकवार क्यों पुजें वार २ पुजनी चाहीये

(उ) देखो देखो द्रौपदी महासती अपने नेयम धर्ममें कैसें

दृढता रखी थी कि व्याहके समय ही जिनेन्द्र देवोंकी पुजा की है तो और वखतका तो कहना ही क्या.

(स) सुत्रमें तो एक ही वखत चला है आप वार २ पुजाकी कहते है सो किस आधारसे कहते है.

(उ) इस प्रश्नका उत्तर हम पहले प्रश्नमें एकवारके वारेमें ५१ बोल लिख आये है सो देखो.

(स) पूजामें भोलावण सुर्याभ देवकी है जिसमे यह पूजा प्रमाण नहीं है.

(उ) भोलावण किसने दी है यह भी तो आपको मालुम है भोलावण देव ढिगणीजी शास्त्र भडजाणाके लिये दी है लेकिन तीर्थंकर भगवान तो संपूर्ण अधिकार कहते है ऐसे नहीं मानोगे तो सुनो.

[१] श्री मल्लिनाथ प्रभुकों जमालिकी भोलावण.

[२] ज्ञातामें मेघकुमारको जमालिकी भोलावण.

[३] विपाकमें सुवाहुको जंमालिकी भोलावण.

[४] आनन्द श्रावककों पूर्ण तापसीकी भोलावण.

[५] अनेक राजाओंको कौणककी भोलावण.

[६] द्वारिका नगरीकों चंपाकी भोलावण.

[७] भगवति में पंन्नवणाकी[1] भोलावण.

[८] भगवति में नदीकी भोलावण

[९] अन्तगढ में जमालिकी भोलावण

विचारो मल्लिनाथ परमेश्वर कब हुवाथा और जमालि क्षत्री कुमार वीर प्रभुके शासन में हुवाथा इसीसे सिद्ध हुवा भोलावण सुत्र लिखती समय दी है और सम्यग्द्रष्टीकी सम्यग्द्रष्टीकों भोलावण देना उचित है तात्पर्य जिस जगह विस्तारसे वर्णन हो उसीकी भोलावण दीजाती है.

(स) आप जहां दातबीतका काम पडे वहां परही केह देतेहीकी द्रोपदीजी प्रतिमा पूजी है तो क्या और लाखो श्रावक श्राविका हुवे है उन्हो ने प्रतिमा नहीं पूजी होगा.

(उ) जैसे द्रोपदीजीनें जिन प्रतिमा पूजी है वेसेही सब श्रावक सरावका पुजी है परन्तु विस्तार द्रोपदीजी के अधिकारमें ही चला है आप जो ऐसी कहोगे तो लो सुनो

१ औषध एक रेवत्तं बाईने ही बेराया तो क्या चौईसी में किसि दुसरे श्रावकनें नहीं बेराया होगा भगवति सुत्र स० १५

२ पाट पाटलाकी आज्ञा ऐक श्रेणिक राजाकी चली है दशाश्रुत्स्कंध अ० १०

---

१ भगवती सुधर्मा स्वामी कृत्यह और पन्नवण श्यामाचर्य तेवीसवे पाट कृत्य है

३ नगरी एक कोणक राजाने ही शृणगारी है सूत्र उव-वाई (तर्क) कोणककी भोलावण बहुतसे राजाओंको है (समाधान) ऐसे ही पूजाकी भोलावण बहुतसी जगह " कय बलिकम्मा" है.

४ अमर पडा श्रेणिक राजा हीने बजाया है सुत्र उपासक दशां । अ० ८ मा.

५ स्वामिवत्सल शंख पोखली श्रावकोंने किया सुत्र भगवति । स० १२ उ० १

६ पोखकद शालामें इकठे आलंभिया नगरीके श्रावक हुए हैं भग. स. ११ उ. १२

७ अन्य मतियोंको उत्तर एक मंडुक श्रावकने ही दिया है भ० स० १८ उ० ५

८ दीक्षाकी दलाली एक कृष्ण वासुदेवने ही की है सुत्र अंन्तगढ व० ५ उ० १

९ प्रश्न एक तुंगिया नगरीका श्राविकोंने पूछा भ० स० २ उ० ५

१० सय्यातरी एक जेवन्ती बाईकों ही कही है भ० स० १२ उ० २

प्रिय मित्रो विचारो पूर्वोक्त बोल एक एकका ही उदेस करके चला है विचारो दुसरे किसीनें किया हो गाथा नहीं समजनेका इतना ही है जिसका सवध हो उसीकी वक्तव्यता वीतराग करै हैं परन्तु ऐसा नहीं समजना कि पूर्वोक्त काम एक एक जनेने ही किया है अपि तु बहुनसे जनोंने किया है और सुत्रोंमें जिन प्रतिमा एक द्रोपदीनें पुजी कहते है सो आपके मोह कर्मका जोर है लो सुनो.

१ दशा श्रुत स्कंध सुत्र अध्ययन ८ मे में सिद्धार्थ राजानें जिन प्रतिमा पुजी है जिसका (पाठ)

तएणं सिद्धत्थे राया दगाहियाए ठिइ वडि-याए वढमाणी ए सइराय साहस्सिराय सयसाह-स्सिराय जाएय.

ये सिद्धार्थ राजा पारसनाथजीका श्रावक कथा और भगवानके जन्म समयमें बहुतसे जिन मन्दिरमें मोत्सवके साथ जिन प्रतिमाकी पूजा करी और करवाई है

२ ज्ञाता सु० अ० ८ मांये श्री मल्लिनाथ परमेश्वर सिद्धोंकी प्रतिमा पूजी है पाठ "कयवलिकम्मा".

३ सुत्र भगवतिजी स० २ उ० ५ तुंगिया नगरीका श्रावकों जिन प्रतिमा पूजी (पाठ) "कयवलिकम्मा".

४ सूत्र भगवतिजी स० ७ उ० ९ मामें वर्णनाग नतुवा श्रावकनें प्रतिमा पूजी.

५ भगवतिं स० १२ उ० २ शंख पुष्कली श्रावकोंनें प्रतिमा पूजी है.

६ सुत्र भ० स० १२ उ० २ जेवंति मृगावति श्राविका तथा उदाई राजाने प्रतिमा पूजी है.

७ उपासका दशांग सुत्रमें दस श्रावक प्रतिमा पुजी है.

८ भ० स० १३ मा उ० ७ उदाई राजा प्रभावति रानीनें प्रतिमा पुजी.

९ रायप्रश्रेणीमें सुर्याभ देवता प्रतिमा पूजी.

१० जीवाभिगममें विजय पालकीयाने प्रतिमा पुजी. इत्यादि बहुत श्रावक श्राविकाओंने प्रतिमा पुजी है विस्तार सहित आगें लिखेंगे.

(स) ऊपर लिखे हुवे बोलोंमें कितनी जगह "कयवलि-कम्मा" पाठ आया है उसीको आप प्रतिमा पुजा करना कहा है सो हम नहीं मानते.

(उ) यह अर्थ हम हमारी ईच्छासे नहीं करते हैं परन्तु गणधर देवोंका किया हुवा है

(प्र) फिर द्रौपदी महा सतीके अधिकारमें पहले कय-बलिकम्मा का पाठ है और पीछेसे पुजाका पाठ अलग है जिसीसे बलिकम्माका अर्थ देव पुजा नहीं होता है

(उ) देरासर दो प्रकारके होते है एक तो गृह देहरासर तथा दूसरा ग्राम देहरासर सो द्रौपदीजी पहले गृह देहरासरकी पुजा करके फिर बाहर जाने योग्य वस्त्र पहनके नगर देहरासरकी पुजा की है.

(प्र) गृह देरासर कोई सूत्रमें कहा है.

(उ) प्रत्यक्ष देखना हो तो बीकानेर, जेसलमेर, कोटा, गुजरात वगेरहमें सनातन जैनियोंके घरोंमें देहरासर है और आगम प्रमाणसे तुंगिया नगरी आदिके श्रावकोंका अधिकार लिख आये है.

(प्र) कयबलिकम्माका अर्थ पानीका कुल्लाना स्नानका विशेषण है.

(उ) यह अर्थ किस सूत्रमें लिखा हुवा है कि गाल-पुराणसे निकाला है.

(स) सूत्रमें तो गृहदेवताकी पूजा कि है सो कुलदेवी आदिकी पूजा की है.

(उ) प्रिय मित्रो देखो सूत्र ज्ञाताजी अ० ८ मा श्री मलीनाथ प्रभुके अधिकारमें (कायिवालि कम्मा) का पाट हैं अब विचारो तिर्थंकर भगवान कोनसा देवताकी पूजा करी है सो विचारो.

(स) हसके बोला अच्छा सुनाया तीर्थंकर किसकी पूजा करै वहां तो खुद ही परमेश्वर है यहां आप क्या अर्थ करते हो.

(उ) हम तो यहांपर (कयिवालि कम्मा) का पाट है वहां पर भी पूजाका ही अर्थ करते हैं.

(स) मल्लिनाथ प्रभु किसकी पूजा करी.

(उ) सिद्धांकी प्रतिमा पूजी है अरिहन्त सिद्धको नमस्कार किया है यह लेख आचारांगमें है.

(स) ज्ञातासूत्रमें भद्रासेठाणी वावडीमें स्नान करनेको गई उस समयमें कयिवालि कम्मा पाट है सो वावडीमें किसकी पूजाकी.

(उ) वावडीमें अनेक आलिआदिमें वहुत जगह मूर्तियां

रहा करती हैं इन्हीको जल चढाना या सूर्यको अंजलि देना इसीको ही देवपूजा कहते हैं.

(म) रायपसेणी सूत्रमें कठियारे जंगलमें स्नान करने पर कठियारेकम्मा कहा है वहा जंगलमें किस देवताकी पूजा की.

(ड) जंगलमें भैरव क्षेत्रपालादि अपने माने हुवे देवकी पुजाकि होगी.

(म) जैसे श्रावकादि भी अपने मगरीके लिये कुट देव याने कुलदेवताको पूजा देगा

(ड) श्रावकोंके अधिकार सूत्र गड, रंग भगवति वगैरह सूत्रोंमें चला है जिसमें ऐसा पाठ है.

असहिज्जा देवा सुरानागा सुवण जख रख-स किन्नर किं पुरुष गुरुल गंधव मोहरगादि एहिं देवगणेहिं.

इस पाठमें कहा है कि श्रावक वैमानिक असुर व्यन्त-रादि कोई देवोंसे मगर याने नहीं याने कोई देवको नम-स्कार नहीं करे दिखाते अब आप देवकी मानता करे तो

समकितमें अतिचार लागे ऐसा आवश्यक सूत्रमें कहा है तो पूजा करना कैसे सिद्ध हो सकता है अपितु कभि नहीं.

(स) तो फेर अभयकुमार कृष्ण वासुदेव भरतराजा आदिनें देवताओंको अष्टम भक्त करके कैसे आराधन किया.

(उ) प्रिय मित्रो वहां अन्य देव नहीं है श्रावकोंकें ऐसा कोई कारण आन पडे तब सम्यग्दृष्टी देवको आराधन करते हैं परन्तु श्री मल्लिनाथजी या तुंगियानगरीके श्रावकोंकें क्या कष्ट पडाथा सो देवताको आराध्या परन्तु आप लोगोंको इतनाही मालुम नहीं है कि देवपूजा किसकों कहते हैं और देवता आराधन किसको कहते हैं.

(स) क्या देवपूजा और देवता आराधना अलग २ होती है.

(उ) देखो जहां श्रावकका पाठ कयिवलिकम्माका है वहां तो द्रोपदीजीके सदृश पूजाकर नमोथ्थुणं देते हैं जहां अभयकुमारादिक देवता आराध्या वहां मनमें देवताका स्मरण किया है सावधी जैनके इतना फरक है.

(स) जो वलिकम्माका अर्थ पूजा करोगे तो भरत-

राजा या कोणकराजाका स्नानका संपूर्ण अधिकार चला है जिसीमें यह पाठ नहीं है (कयिवलि कम्मा)

(ड) भरतकोणकको भगवानका वन्दनेका अति उत्साह होनेसे गृह देहरासरकी पूजा नहीं की तदपि कोई बांधा नहीं है ऐसे कहोगे तो देखो सूत्र उत्तराध्ययनजी अ० १९ में मृगापुत्र साधुजीको देखकें वैराग्य उत्पन्न होते ही माताके पास आज्ञा लेनेको गया परन्तु साधुको वन्दना नहीं की यह वैराग्यका उत्साह है जैसे भरतकोणक समझो देखो सूत्र अवश्यकमें साधुको गोचरीके समय कहा है (वलिपाडडियाए) यह साधु देवपूजाका द्रव्य नहीं लेवे तथा नाममाला आदि कोश ग्रन्थोंमें भी वलि शब्दका अर्थ पूजा है (पाठ)

पूजार्हणासपर्यार्चाउपहारवलीसमोः

ऐसीही वस्तुशास्त्र और जोतिःशास्त्रमें भी कहा है और रायप्रसेणी सूत्रमें पूजाकी सामिग्री वली पीठपर रक्खी जावे इत्यादि शास्त्रोंसे सिद्ध हुवा कि वलिकम्माका अर्थ देवपूजा ही होता है इनीसे पूर्वोक्त श्रावकोंने श्री अरहन्त देवाकी प्रतिमा उत्साह भावसे पूजी है उन्हीके परपरायके श्रावक अभीभी उत्साह भावसे द्रव्यभाव पूजा करके अपना जन्म सफल करते है.

(स) पूजा करनेमें धर्म हो तो साधु क्यों नहीं करते हैं.

[उ] साधुको द्रव्यपूजा करनेका अधिकार नहीं है और भावपूजा साधु करते है जिसका लेख सूत्र भगवती स० २० उ० ९ में में ऐसा पाठ है.

जंघाचार स्सेणं भंते तिरियं केवइए गति विसएपन्नता गोयमासेणं एगेणं उपाएणं उप्पाएणंरु अगवरे दीवे समोसरणं करेइ करइत्ता तहिं चेइआइं वंदइ वंदइत्ता तओ पडिनियत्त माणे वी इएणं उप्पाएणा णं दीसरे दीवे समोसरणं करेइ तहिं चेइआइं वंदइ वन्दइत्ता इहमा गछइ इह चेइयाइं वंदइ जंघाचारस्सणं गोयमातिरियं एव इण विसए पन्नता जंघाचारस्सणभंते उड्ढंकेवइए गइं विसएपन्नता गोयमासेणं इत्तोएगेणं उप्पाएणं पंडगवसे समोसरणं करेई करेइत्ता तहिं चेइयाइं वंदइ बन्दइत्तातओ परिनियत्तमाणे वितिएणं उप्पाएणं णंदणवणे समोसरणं करेइ

करइत्ता तहिं चेइयाइं वंदइ वन्दइत्ता इह-
मागच्छ इहमागच्छइत्ताइह चेइआइं वंदइ जंघा-
चारस्सणं गोयमाउर्द्ध एवइ ए गति विसए
पन्नता.

अर्थ–भगवन् जंघाचारण मुनिका तिरछी गतिका विषय कितना है भगवान उत्तर देते हैं हे गौतम सो एकडगले रुचक वर जो ते रह मा द्वीप है तिसमें समवसरण करै करके तहां के चैत्य अर्थात् सास्वते जिन मंदिर सिद्धायतनमें शास्वति जिन प्रतिमाको बन्दे वन्दके तहांसे पीछें निवृता हुवा दूसरे ढगलें नन्दीस्वर द्वीपमें समवसरण करै करके तहाके चैत्योंको वन्दे बन्दके यहां अर्थात् भरतक्षेत्रमें आवै आ करके यहाके चैत्य अर्थात् असास्वति जिन प्रतिमाको वन्दे गौ० जंघा चारणका तिरछी गतिका विषय इतना है [प्र] हे भगवन् जंघाचारण मुनिका ऊर्ध्व गतिका विषय कितना है

गौतम सो एकडगलेमें पडुक वनमें समवसरण करै करके तहाके चैत्योंको वन्दे बन्दके वहांसे पीछे फिरता हुवा दूसरे डगलेमें नन्दन वनमें समवसरण करै करके वहां

के चैत्य वन्दे वन्दके यहां आवे आ करके यहां के चैत्य वन्दे (हे गौतम) जंघाचारणकी ऊर्ध्व गतिका विषय इतना है जैसे जंघाचारणकी गतिका विषय पूर्वोक्त पाठमें कहा है तैसे विद्याचारण मुनिकी गति विषय भी इन्ही उद्देशोंमें कही है विद्याचारण यहांसे एक डगलामें मानुपोत्तर पर्वत पर जाके वहांके चैत्य वन्दते हैं और दूसरे डगलेमें नंदीश्वर द्वीपमें जाकें तहां के चैत्य वन्दते हैं पीछें फिरते हुवे डगलेमें यहां आ के यहां के चैत्य वन्दते हैं इस प्रकार विद्याचारणकी तिरछी गतिका विषय है ऊर्ध्व गतिमें एक डगलेमें नन्दन वनमें जाकें तहांके चैत्य वन्द और दूसरे डगलेमें पांडुक वनमें जाकें यहांके चैत्य वन्दते हैं पीछे फिरता हुवा एक ही डगलेमें यहां आकें यहां के चैत्य वन्दे इस प्रकार विद्या चारणकी ऊर्ध्व गतिका विषय कहा है इस पाठके अर्थसे स्पष्ट २ मालुम हुवा कि मुनि जिन प्रतिमाको वन्दे याने भाव पूजा करै.

(स) इस पाठमें मानुपोत्तर पर्वत पर चैत्यवन्दन कहा है परन्तु सिद्धायतन प्रतिमा सूत्रमें नहीं चली है इसी वास्ते चैत्य शब्दका अर्थ ज्ञान होताहै उन मुनियोंने भगवानके ज्ञान कों ही वन्दा है.

(उ) सूत्र द्वीपसागर पन्नतिमें कहा है तथा क्षेत्र समासमें ऐसा पाठ है.

चउसुवि इसुयारे सु इक्किक्किंनर नगंविचत्तारि कूडोवरि जिण भवणा कुलगिरि जिण भवण परिमाणा.

अर्थ—चार इक्षुवाकार पर्वत पर एक २ और मानुंषोत्तर पर्वतमें चार कूट पर चार जिन भवन हैं सो कुल गिरिके परिमाण जिन भवन है. (पाठ)

तत्तो दुगणपमाणा चउ दारायुत्त वणिय सुरुवा नं दीश्वर वावणा चउ कुंडलि रुयगिचत्तारि.

अर्थ—पूर्वोक्ति जिन भवनमे दुगणे प्रमाणके चार द्वार वाले और पूर्वाचार्योंने वर्णन किया स्वरुप जिनका ऐसे नन्दीश्वरमें ५२ कुडलगिरिमें ४ रुचक पर्वत ४ येकुल ५० जिन भवन है इसीसे सिद्ध हुवा कि पूर्वोक्ति मुनियोंने प्रतिमा ही वन्दी है.

(स) यह सूत्र बत्तीसेमे नहीं है

(उ) आप ठाणायंग मानते हो या नहि?

(स) हो ठाणायांग हम मानतें हैं.

(उ) ठाणायंगजीके तीजे ठाणे (पाठ) तउ पणंती उकालेणं अहिज्यंति तं चंदपणंत्ति सूर पन्नति दीव सागर पन्नती तथा नन्दी सूत्रमें भी दीवसागर पन्नतीका नाम है यह सत्य है तो इसम लिखा हुवा संबंध भी सत्य है.

(स) चैत्यका अर्थ प्रतिमा करके पीछा आते समय ही प्रतिमा वन्दी कहते है तो साधुके उपासरामें प्रतिमा कहांसे आई.

(उ) उत्सूत्रके पापसे जरा डरो तुम उपासरा कहते हो सो कौनसे आधारसे कहते हो यहां पाठ हम प्रथम ही लिख आये हैं जिसमें यहां आनेका है यहां आके जिन मंदिरमें जिन प्रतिमा वन्दते हैं.

(स) जो प्रतिमा वन्दते तो वंदइ नमंसइ होना चाहिये सो पाठमें नहीं है.

(उ) वन्दइ और नमस्सइ नहीं कहते हो सो मिथ्या है पाठमें वन्दइ हैं सो संग्रह नयका शब्द है.

इसीमें सपूर्ण चैत्यवंदन होता है

[स] जो प्रतिमा वांदनेको जाते तो आलोयणा किस बातकी लेते

[उ] तुम कहते हो कि ज्ञानको वदे तो वतलावो ज्ञान वंदणेसे आलोयणा लेणा यह जिन अज्ञा है कि ज्ञानको वंदके आलोयणा लेणा.

[स] ज्ञान वदनेकी आलोयणा नहीं है आलोयणा तो लब्धि फोडणेकी है

[उ] प्रिय मित्रो २८ लब्धिमें कितनी लब्धिका प्रयाश्चित्त कहा है परन्तु इस जगह आपको तेरा पथी वणना पडता है. कारण तेरेपंथी वीर प्रभुको चुका, इसी वास्ते कहाते है वो आपके लिये सचा वणते हैं परन्तु ज्ञान दृष्टि करके देखो तो माया कपटाईकर लब्धि कोरे उसीको आलोयण करणासे आराधिक कहा है ऐसा कहोगे तो वहुत लब्धियाका मुनि उपयोग करते है जेसे पुर्वोका ज्ञान तथा पाच ज्ञान भी लब्धि है.

[स] तो फेर प्रतिमा वदनेको गये तो आलोयणा किस भांतिकी लेवे सो बतलावो.

[उ] आलोयणा चैत्य वंदनकी नहीं है परन्तु गमनागमनमे प्रमादकी है जेसे मुनिगोचरी जाके पीछा आनेसे आलोयणा करते हैं सो गोचरीकी नहीं है परन्तु पांच समत्यादिकमें हुए प्रमादकी है जैसे ही मुनि स्वभाव लब्धि तीरके वेगके सदृश गति करतां शास्वता अशाखता चैत्य विना वांदेरेह गया हो वा गमनागमन करणेकी आलोयणा कही है.

(स) जो प्रतिमा वांदवा जाता तो पाछा आवता मानुषोत्तर पर्वत उपर प्रतिमा क्यों नहीं वांदी है.

(उ) आप कहते थे कि मानुषोत्तर पर्वतपर प्रतिमा नहीं है फेर यह कहांसे आई परन्तु समजनेका यह है कि उन मुनियोंकी गतिका स्वभावही ऐसा है सो (पाठ) हम प्रथमही लिख आये हैं सो देख लेना. और विद्याचारण उक्त पर्वतपर चैत्यवन्दण कीया है वो पाठ भगवती मे मोजुद है.

(स) चारण मुनिकी सर्व गतिका विषय बतलाया है परन्तू कोइ मुनि नंदिश्वरद्वीप गया नही कारणके लवण समुद्रकी वेल सतरे हजार जोजन ऊंची कही है सो पाणी मांहिसे मुनि केसे जावे.

(उ) चारण मुनियोंकी ऊंची जानेकी १००००० जोजन पांडुकवनतक विषय बतलाया है.

(म) ये तो ऊंचे जानेका विषय कहा मगर तिरछी जाने कि विषय नहीं कहा है.

(उ) देखो समायंग सुत्रमें स० १७ में चारण मुनि सतरे हजार जाजेगी उची गति कही है और भ० में कहा है के पाठा आपने अमाम्वना चैत्य वादे इसीसे सिद्ध हुवा की बहुत चारण मुनि मास्वनि जमासनति जिन प्रतिमा वादी है.

(म) हमारे गुरुमहाराज कहते हैं कि भगवानने नंदी स्वर द्वीपका वर्णन किया था जिस वखतमें जंघाचारण विद्याचारण मुनियोंके मनमें विचार उत्पन्न हुवा इस वास्ते नंदी-स्वरद्वीप देखनेको गये है वहां जाके वीतराग देवोंके ज्ञानको वंदन किया है परन्तु प्रतिमा नहीं है.

(उ) यह भ्रमत्वादियोंकी जाल है एसात सुत्रार्थ मे तोहनाही न जांगे कीस लुपक पुरांण से नीकाली है विचारो भगवानके वचनोंमे उन मुनियोंको कुत्रार्थ कार्थी और ज्ञानको वादिया करते हो तो ज्ञान एकवचन है चैत्य द्वितीया विभक्तिका बहुवचन है इसीसे बहुत चैत्यको वादा है. देखो भगवति सूत्र स० ८ उ० ९ में

नाणे पंचविहे पन्नता तथा नंदी अनुजोग द्वारपन्नवणादि बहूत सूत्रोंमें नाण कहा है तथा केइ मुनि इग्यारे अंगका ज्ञान केई चवदा पूर्वका ज्ञान कहा है परन्तु किसी जगह ज्ञानको चैत्य नही कहा है

(स) समवायांग सूत्रमें तिर्थकरोंका चैत्य वृक्ष कहा है यहां चैत्य नाम ज्ञानका है.

(उ) क्या कारण है.

(स) इस वृक्ष नीचे परमेश्वरको केवल ज्ञान उत्पन्न हुवा, जिसीसे चैत्य वृक्ष कहा है.

[उ] सूत्र रायपसेणीमें सूर्याभके विमानमें चैत्यवृक्ष कहा है कहो वहां कौणसा भगवानको ज्ञान उत्पन्न हुवाथा परन्तु विना गुरुके शास्त्र शस्त्र होता है यहां चैत्यवृक्ष कहा है सो (सचत्वर) जिनप्रतिमाके पास चांत्रा वंद वीक्ष को चैत्य वृक्ष कहा है इसीसे चारण मुनि प्रतिमाही वंदी है सिद्ध हुवा अस्तु और देखो भगवति सूत्रकी आदिमें-नमो बंभिए लिविए यह गणधर भगवान् स्थापन ज्ञानको नमस्कार किया है.

(स) यहां नभि लिपीका करता रिषभदेव भगवानको नमस्कार किया है

(उ) यहां जो एसा कहोगे तो सर्व लिखणे वालों-को नमस्कार करणा पडेगा कारण दूर है सो अशुद्ध नैगम नयसे जिससे वाचके समीप लेना वहा शुद्ध नैगमनय है जिमपर अनुजोग द्वारमें प्रस्थ [पायली] का या वस्तीका दृष्टांत समज लेना.

(न) नभि लिप्पीकी क्रिया बतलाने वाले श्रीरिष-भदेवको वांदा है.

(उ) प्यारे सज्जनों किंचित् जैन सिद्धान्त नयनिक्षे-पका ज्ञान करो जो कर्ता वंदनीक है तो क्रिया तो आपसेही वंदनिक होगइ अधिक देखना हो तो देखो नंदीसूत्रमें जिनवाणी द्रव्य सूत्र कही है,

पाट–केवलनाणणच्छो णाउं, जेतच्छपणवणजो गो, ते भासइ तिच्छयरो वइजोग सुअंहवइसेसं.

अर्थ–केवल ज्ञानमें अर्थ जो पदार्थोंको जानके जो प्ररूपवा योग्यवे तिर्थंकर उनके वचनोंके योगमे कहते है सो द्रव्यसूत्र है व वंदनीय है जो तुम कहते हो कि

हम वंभि लिप्पीके करणेवाले रूषभदेवजीको वांदते हैं तो भी उस वगतमें ऋषभदेव भगवान द्रव्य निक्षेप था और द्रव्य निक्षेपो आप लोग अवंदनीक मानते हो तो फेर गणधर भगवान किसको वांदा है मित्रों देखो एक प्रतिमा नहीं माननेसे आप लोग कितना परिश्रम किया है तथापि विद्वानोंके आगे सर्व निष्फल है केवल भद्रीक जीव ही आप लोगोंकी ग्रासमें आपडते हैं लेकिन आपही विचारो कि श्री ऋषभदेव प्रभुके तो नमस्कार पहले.

णमो अरिहंताणं मैंही आगयोफर नमो बंभीए लिवीए.

कहनेकी क्या आवश्यकता थी परन्तु गणधर भगवानने स्थापनाज्ञानको नमस्कार किया है.

(स) अक्षर लिखना तो वीरप्रभुसे नो सो असी वर्ष (९८०) पीछेसे चला है पहला नहीं था.

(उ) कौनसे सूत्रका प्रमाण है कि पहिले लिखना नहीं था क्या ऋषभदेव भगवानके आज्ञा कि हुई (१८) लिपीका विछेद हो गया था और सऊकारी लेना देना कैसे चलता था देखो सूत्र नंदीमें अक्षरश्रुत कहा है और अनुजोग द्वारमें पाठ)

द्रव्यावस्सयं जंपत्तयपोथीय लिहियं.

ये द्रव्यसूत्र पाना पोथीपर लिखा हुवा है सिध् हुआ-कि स्थापनाज्ञान और द्रव्यज्ञानको मुनि वादते है तो प्रतिमाका तो कहेना ही क्या और आचारांग दुजा अध्ययन १५ मे में मुनिके लिये तिर्थ जाना करना कहा है प्रश्न व्याकरण अ० ६ में भावपूजा करणा साधुका अधिकार है सो आगे लिखेगे विशेष देखना हो तो सूत्र प्रश्न व्याकरणमें साधु प्रतिमाकी वेयावच्च निर्जराके लिये करते है सो (पाठ)

अहकेरिसए पुणाऽ आरइए वयमिणं जेसे उवहि भत्तपाणे संगहदाण कुसले अचंतबाल १ दुब्बल २ गिलाण ३ वुड्ढे ४ मास खपणे ५ पवत्ते ६ आयरिय ७ उवझाए ८ सेहे ९ साहम्मिए १० तवसी ११ कुल १२ गण १३ संघ १४ चेऽयट्ठे १५ निजरट्ठी वेआवच्चं अणिस्सियं दसविहं वहु विहंपकरे)

अर्थ-शिष्य पुछता हुआ कि भगवान साधुती सरावतको कैसे आरांधे जब भगवानने उत्तर आज्ञा किया है

गौतम साधू उपधी भात पाणी यथा विधि लावानेको कुशल हो बालक दुर्बल ग्लान वृद्ध मास क्षमणादिकका करनेवाला तथा प्रवर्तक आचार्य उपाध्यायादिक और साधर्मी तपस्वी कुलचंद्रादि गण संघ या जिन प्रतिमा कि व्यावच्च निर्जराके अर्थ यश मान रहित दश प्रकारकी या बहुत प्रकारकी व्यावच्च करे.

(स) या चेइठे कहा है सो ज्ञानके अर्थ साधु व्यावच्च करे जो आप प्रतिमा कहते हो तो प्रतिमाको भातपांणी कैस संभवे.

(उ) यहां ज्ञान नहीं है जो ज्ञानार्थ करोगे तो बालक दुर्बल ग्लान तपस्वि नवे शिष्य के पास ज्ञान कैसे लेवे इसीसे चैत्यका अर्थ प्रतिमा ही है.

(स) जो प्रतिमा कहोगे तो भात पाणी कैसे दिया जावे.

(उ) केवल भात-पाणीसे ही व्यावच्च नहीं कही जाती है देखो साधु संघकी व्यावच्च करे तो संघमें श्रावक भी आ गया तो साधु श्रावकको अहार पाणी कैसे देवे इसी वास्ते चैत्यका अर्थ प्रतिमा ही है.

(स) प्रतिमाकी साधु क्या व्यावच्च करे.

(उ) गण कुल संघ प्रतिमाकी कोइ परयनीक निंदा अवज्ञा करे तो उसीको उपदेशादिक देके अमानना नहीं करणे देवे उसीका नाम व्यावच्च है.

(स) प्रतिमा तो अजीव है और गण संघ आदिकी निंद्या अवज्ञा वगेरे करे तो साधुका धर्म क्षमा करणेका है.

(उ) तुमने विष्णुकुवारका अध्ययन सुना या नहीं देखो विष्णुकुवार गणकुल संघके लिये लक्ष जोजनका रूप किया है और नमूचि प्रधानको दंड देके शासनकी उन्नति की

(स) यह अधिकार बतीस सूत्रोंमें नहीं

(उ) जो बत्तिस सूत्रमें देखना हो तो सूत्र उत्तराध्ययनजी अध्ययन बारमे में जक्षहरकेसी मुनिके लिये ब्राह्मणोको (मारे है) याने ब्राह्मणोको तकलीफ दिनी है जिसको हरकेसि मुनि कहा है कि यक्ष मेरा व्यावच्च कर रहा है सो (पाठ)

एयाइ तीसेवयणाइ सोच्चापत्तीइ, भद्दाइ सुहासियाइं इसिस्स वेयावडियट्ठयाए, जक्खा कुमारे विणिवार यन्ति तथाजक्खाउवेयावडियं करेति.

ये व्यावच्च करणा महाफल है तुम कहते हो कि प्रतिमा अजीव है परन्तु भावनेत्र खालोगे जब विदित होगा कि व्यवहारसूत्रमें प्रतिमा पास आलोयण लेणा कहा है.

(स) व्यवहार सूत्रमें प्रतिमाका नाम नहीं है

(उ) लो सुनो साधू प्रायश्चित स्थानक सेवन कियाहो तो वहुश्रुती आचार्य उपाध्याय के पास आलोयणा करे आचार्य ऊपाध्याय न हो तो संभोगी साधु वहुश्रुतके पास आलोयणा लेवे वो नहीं हो तो अन्य संभोगी बहुश्रुतके पास आलोवे वो नहीं हो तो रूप * साधु बहु श्रुतके पास आलोवे वो न हो तो ‡ पीछा कडा श्रावक वहुश्रुतके पास आलोवे वो न हो तो [पाठ]

जथेव समंभावियाइं चेइयाइं पसिद्या तस्स आंतीए आलो वेद्या

ये भाली तरै प्रतिष्टाकी हुई जिन प्रतिमाके पास आलोवणा करै ये प्रतक्ष जिन प्रतिमाके पास आलोवण लेवै.

---

* चारित्र से शीतल है परन्तु साधुका लिंग है और वहुश्रुती है.

‡ पेहली साधु था फिर मोहकर्मके उदे पीछा श्रावक हो इसी वास्ते साधु पणामे वहु श्रुती था.

[स] जिन प्रतिमा क्या आलोयणा सुण सकति है.

[उ] मिथ्या टेकको दूर करो देखो जहां परजिन प्रतिमा न हो तो ग्राम नगरादिक वाहिर जाके सिद्धों कि -साक्षीसे आलोयणा लेना कहा है तो क्या सिद्ध सुनते हैं या मुंहसे बोलके प्रायश्चित देते है.

क्या हेला देनेसे, या [पुकारनेसे] आलोयणा हो जाती है यहा समजनेका इतना ही है कि पहिले प्रतिमाका पाठ कहा जिसमें सिद्धोंके नाम और स्थापना दो निक्षेप है ये कदाचित् न होनेसे नगर बाहर आलोयण कहा है वहां सिद्धोंका नाम निक्षेपा ही है स्थापन का आरोप है और उस निमित्तसे अपना पाप प्रकाशित करना इसीका नाम आलोयणा है.

[स] सिद्ध तो जानते ह परन्तु प्रतिमा क्या जाने.

[उ] जैसे जगलमें सिद्ध जानते है तैसे ही प्रतिमाके पास भी सिद्ध जानते है दोनों जगहमें प्रतिमा विशेष है जिसीने पहले कहा है.

(स) यहांपर अर्थ ज्ञानवान श्रावक होता है.

(उ) किसी सुत्र अर्थ भाष्य वृति आदिमें कहा है या अपने मनका ही गपोडा लगाते हो देखो आलोयणा करना सो

बहु श्रुतके पास कहा है और ज्ञानवान् श्रावक पछा कडा का पाठ पहले आ गये दूसरं श्रावकोंको सूत्र पढनेका निषेध किया हुवा है विना सूत्रके जाणकार क्या आलोवणा सुणे क्या प्रायश्चित्त देवे.

(स) एतो ठीक है परन्तु क्या श्रावकोंको सूत्र नहीं पढना यह बात आप नई ही सुनाई.

(उ) हां सूत्रमें श्रावकोंको सूत्र पढना मना है देखो सूत्र निशीत उ० (पाठ)

जेभिखु अणोच्छीयेणं-वा, गारथीयेणं-वा, वाए तीवा ३.

इस पाठमें लिखा है कि साधु अन तीर्थी और गृहस्थीको सूत्रकी वाचना देवे दिलावे देता ने भला जाने तो साधुको च्यार महिनोंका प्रायश्चित्त कहा है.

(स) उपासक दशा सूत्रमें श्रावकोंको (सुय परिग्गाहा) कहा है तथा उतराध्ययन अ० २१ मेमें (कोविये) कहा है तथा तुंगीया नगरीके श्रावकोंको बहुत जाणपणा था.

(उ) इन्हीं श्रावकोंने आवश्यक सूत्र पढके उपधान तप किया है परन्तु और सूत्र पढनेका श्रावकोंको अधिकार नहीं है

और (कोविये) कहा सो जिनागममें कुशल है अर्थको जानते हैं तुंगिया नगरीके श्रावकोंका पाठ यह है-

लध्ठा गृहठा पुछेठा. परंन्तु वधू श्रुता नही काहा

इत्यादिसे सिद्ध हुवा कि अर्थके जांणने वाले श्रावक है देखो प्रश्न व्याकरण दूसरा संवरद्वारिका (पाठ) *

तं सच्चं भगवंत तित्थगर सुभासियं दसविहं चउदसपुव्वाहिं पाहुडच्छ वेइयं महरिसीणय स- मयप्पदिन्नं देविंदनरिंदे भासियअर्थं

इस पाठमें लिखा है कि सूत्र तो मुनियोंको दिया है और अर्थ देवता या राजा वगेरहको दिया है और व्यवहार सूत्र उ० १० मामें एसा (पाठ है)

तिवास परियागस्स निगंथस्स कप्पइ आ- यारकप्पे नामं अय्यणं उद्दिसित्तऐवा.

इस पाठमें लिखा है कि तीन वर्षोंकी दीक्षा वाला योग साधुकों आचारांग निशीथ सुत्र पढना कल्प है कहो श्रावक के कितने वर्षकी दीक्षा है सो सूत्र पढना कहते हो देखो

कार्तिक सेठ घरमें रहा प्रतिमा (पडिमा) धारण करी थी तथा आनंदादिक बहुतसे श्रावकका वर्णन चला है परन्तु सूत्र पढनेका अधिकार नहीं चला है सूत्र वाचना तो दूर रहा परन्तु श्रावकके तीन मनोरथमें भी ऐसा नहीं चितविया कि मैं सूत्र पढूं सूत्र पढना साधुका अधिकार है साधुके तीन मनोरथमें सूत्र पढनेका पाठ है और निशीथ सूत्रमें सूत्रकी असज्झाय साधुके लिये टालणा कहा है और सूयगडांग सूत्र अ० ९ मे में कहा है कि गृहवासमें रहा सूत्र दीवा नहीं देखा इत्यादि बहुत सूत्रोंसे सिद्ध है कि आचारंगादि अंगोपांग श्रावकको पढनेकी आज्ञा नहि है जो पढे तो आज्ञा विरुद्ध है मित्र मित्रो जिनोंको शुद्धि अशुद्धि कपडा शरीर स्थान भाषा वगेरहका कुछ ख्याल तो है नहीं न कोई सूत्र सिद्धांतकी विनय भगति मालुम है और समुत्सम पंडित वण जाते हैं इसीसे ही इन मतकी फूटाफूट या साधुओंका अनादर मालुम होता है इसीसे वीर वचन रसिक बनों आज्ञाको आराधन करो उपर लिखे जिन प्रतिमाकी अनंदादि श्रावक द्रोपदी आदि श्राविका वा चारणादि मुनियोंने वंदी वा पूजी वा व्यावच्च आलोयणा वगेरहका शब्द सूत्र प्रमाणसे लिखा है उसीको प्रमाण करो या

आपके मनमें कोई शंका हो तो प्रगट करो सो यथा जोग्य समाधान किया जावेगा.

(स) प्रतिमा हे भाव पुजा करणा ठीक है परन्तु द्रव पूजामें इतनी शंका जरूर है कि द्रव्य पूजामें धर्म हो तो साधु क्यों नहीं करे साधु तो धर्मके लिये ही घर छोडा है

(उ) पूजामे तो आपके द्वेप है परन्तु साधुको दांन देनेमें तो आप ही धर्म समजते हो तो साधु असंभोगी साधुको दान असनादिक क्यों नहीं दे उसीमें भी तो धर्म है

(स) साधुका कल्प नहीं है

[उ] मियवंयवे। जो यह धर्मका काम निर्वेध करणी है तदपि साधु कल्पके सिवाय काम नहीं कर सक्ते हे. तो फेर पुजाका वारामे मीथ्या हट करना ए एक वाललीला नहीं तो क्या है.

[स] साधु तो नहीं कर सकते हैं परन्तु श्रावक सामाइक पोहसेमें द्रव्य पूजा क्यों नहीं करे

(उ) मित्रों द्रव्य पूजामें सव जल पुष्पादि सामग्री अवश्य होना चाहिये और समाइयकमें श्रावक उस द्रव्यका

त्यागी हैं परन्तु द्रव्य पूजाका अनुमोदन साधु श्रावक अच्छी तरहसे करते हैं आपके भ्रमको दूर करनोके लिये सुनो श्रावक सामाइयिक पोहसामें साधुको असनादिक नहीं वेहराते हैं सो क्या पाप समजके नहीं वेराते सो विचारे. इसपर तो आपको अवश्य केहनाही पडेगा की जीस वक्तमे जीस कार्य की मर्यादा हे वोही-करणा उचीत है.

(स) साधु श्रावक वृतमें द्रव्य पूजाकी अनुमोदना करना कहते हो इसीसे साधुका महावृत कैसे रहता होगा कारण साध तीन कर्ण तीन जोगसे त्यागी है.

(उ) हम पुछते हैं कि किसी गृहस्थने साधुको दान दिया अठाइ वगरहका मोत्छवह तथा साधुको लेने वास्ते सामाने गये। तो अब वनकी साधु अनुमोदना करते हो या नहीं करते हो तो इस काममें अवश्य हिंसा है.

(स) वृती साधु श्रावक हिंसाकी अनुमोदना नहीं करते लेकिन इस कार्यमें विनय भक्ति उदारता है उनहीका अनुमोदना साधु २ श्रावक करते हैं.

[उ] इस मुतात्रिक द्रव्य पूजामें साधु श्रावक भक्तिकी अनुमोदना करते हैं.

[स] और बातें सब हमारे समजमें आ गइ है परन्तु भगवान तो ठामठाम अहिंसा धर्म कहा है और द्रव्य पूजामें हिंसा होती है और उसको धर्म समजना यह हमारे समजमें नहीं आया है.

[उ] देवाणु प्रिय, जो भगवानने अहिंसा धर्म कहा है सो हमारे सिर पर है, हम अहिंसामें अधर्म नहीं समजते है परन्तु आप लोग जब तेरहपथी यांसे चर्चा करते हो जब कहते हो कि जलसे मछिया बचानी पैसेसे जीव बचाना कबूतरोंको धान डालना रंक गरीबको जल पिलाना जिसमें हमको अनुकंपा धर्म प्रवृति पुण्य होते हैं जिसमें प्रदेशी राजाकी दानशाला सुबुद्धि मंत्रिका पाणी अछा करनेका चित्तसार-थीका रथ फिराना मल्लीनाथ प्रभुका मोहन घर प्रीतमाया भोजन सनत्कुमारादिक तथा साध्वीको जलसे निकालना साधुको नदी उतरणा पारसनाथजीका अग्निसे सर्प बचाना मेघ रथ राजाका परेवा बचाना इत्यादिक दृष्टांत लगाके हिंसाको अहिंसा शुभ जोगकी प्रवृत्तिसे सबर मानते हो जिस किसीको शका हो तो कनीरामजीके बनाया हुआ सिद्धांत सार तथा टीकमदासजीके बनाई हुई नव तत्व या-रेसराजजीके बनाया हुआ सत्यार्थ सागरादि ग्रंथोको पढो सो

तुमारा भ्रम दूर हो देखो जब परमेश्वरकी भक्तिका कथन आवे जब आप तेरहपंथीयोंके बच्चे बन बेठते हो लेकिन यह काम कहां तक चलेगा वो समय गया.

(प्र) आप लोग पूजामें धर्म कहते हो सो कोई सूत्रमें भगवानने कहा हे तो बतलाओ.

(उ) हां पूजामें अज्ञा है सोही धर्म जिनेंद्र देवोंने फरमाया है सो हम चोथे प्रश्नमें मूल सूत्रसे बतलावेंगे सो देख लेना* इतना तो आप ही विचार करो कि जब इस कार्यमें धर्म न होता तो इतने साधु श्रावक किस वास्ते वंदन पूजन करते अवश्यमेव धर्म है.

[स] हमारे लूंकाजीने बत्तीस सूत्र माने हैं जिनमें तो कहां भी सुननेमें नहीं आया.

[उ] प्रिय मित्रों इसका कारण पहिला लिख चूके हैं आप वारंवार पुकार करते हो के बत्तीस सूत्र २ परन्तु यह केवल आपका हट है जिसका समाधान तीसरा प्रश्नमें लिखेंगे.

---

* याहा दुजा प्रश्नमे प्रतिमा वन्दना पुजनाका अधिकार चलता है वास्ते चोथा प्रश्नमे पुजाका फल बताते जिन पुजा मे धर्म है ए मुल ३२ सुत्रां से सिद्धकर बतलावेगा.

और प्रश्नकी समाप्तिमें आपका भ्रम दूर करनेके लिये बत्तीस सूत्रोंमें प्रतिमा है उन सूत्रोंसे लिखता हुं (१) सुत्र आचाराग दूसरा श्रुत स्कद अ० १५ माकी वृत्ति

दर्शन शुद्धिर्भवतीति किंच जन्माभिषेकगाहा अठावयगाहा तीर्थकृतां जन्म भूमिषु तयानि कृमण चरण ज्ञानोत्पत्ति निर्वाण भूमिषु तथा देवलोक भवनेषु मदिरेषु तथा नंदीश्वर द्वीपादौ भौमेषु च पाताल भवनेषु यानिशास्वतानि चैत्या निवदेहमिति द्वितीय गाथाया तेक्रियेत्वेवमष्टापदे तथा श्री मद्रजयतगिरौ गजाग्रपदे दशार्णकूटवर्तिनि तथा तक्षशिलायां धर्म चक्रे तथा अहिछत्राया पार्श्वनाथ स्वधरणेंद्र महिमा स्थाने एवरथावर्त्ते पर्वते वैर स्वामिना यत्नपादपोगमनं कृत यत्रच श्री वर्द्धमानमाश्रित्य चमेरंद्रेणोत्पतनं कृतमेतेषु च स्थानेषु यथा संभवमभिगमन वदन पूजन गुणोत्कीर्त्तनादिकाः क्रिया कुर्वता दर्शन शुद्धिर्भवतीति.

इस पाठमें समकितकी भावना कही है जिसमें तिर्थकरों के पचकल्याण या तिर्थस्थान समकित शुद्धिके लिये वंदन पूजन जात्रा करणाका कहा है

२ सुत्र सुयडायग वृतिका (पाठ)

ततोऽभयेन प्रथमं जिन प्रतिमा बहुप्रभृत युताऽर्द्रक कुमाराय प्रहित्ता इदंप्रभृतमेकांते नि-रूपणीय मित्युक्तं जनस्य सोप्पार्द्रकपुरं गत्वा यथोक्तं कथयित्वा प्राभृतमार्पयत् प्रतिमां निरू-पयतः कुमारस्य जातिस्मरणं उतपन्नं धर्मे प्रतिबुद्धं.

इस पाठमें कहा है कि आर्द्रककुमारको अभयकुमारने प-तिमा भेजी थी रिषभ प्रभुकी प्रतिमा देखतांही आद्रककुमारको ज्ञान हुवा है.

२ सुत्र ठाणायंग ठा ४ में एसा (पाठ) है.

चउविहा सच्चेपणंत्ता नामसच्चे ठवणा सच्चे द्रव्य सच्चे भाव सच्चे। तथा ठा १० ठवणा सच्चे.

इस पाठमें लिखा है कि अरिहंतोंके विरहमें अरिहंतोंकी प्रतिमा या आचार्यके विरहे स्थापना आचार्यस्थापणा तथा नंदीसर द्वीपके वर्णनमें अंजनगिरि दधिमुखादि पर्वतों पर सिद्धायतन जिन प्रतिमा चली है.

४ सूत्र समवायंग समवाय १२ में कृतिकर्मके अधिकारमें स्थापना आचार्य कहा है तथा समवाय १७ में जंघाचारण विद्याचारण मुनि प्रतिमा वंदनेको जावे तो १७००० हजार जोजन झाझे राऊंची गति करे कहा है यहां बहुतसे शास्वता सिद्धायतन जिन प्रतिमा हैं

५ सूत्र भगवतिजी

(१) स. २ उ ५ तुंगिया नगरीके श्रावक (२) स. ३ उ. १ चमरेंद्रके अधिकार (३), स १२ उ. १२ शंखपुष्कली जेवती बाई(४)स १३ उ.७ उदाइ राजा प्रभावति राना(५) स ७ उ. ९ वरुणनाग नत्वो (६) स. २० उ. ९ जघाचारण विद्याचारण (७) स ११ उ १२ इसी भद्रपुत्र आलंभियाका (८) स. १८ उ. ६ मडुक श्रावकराज गिरिको और भी कितनेइ देवताओंका अधिकार हैं

उपर लिखे हुए स्थानोंमें जिन प्रतिमा अधिकार है.

६ सुत्र ज्ञाताजी श्री मल्लीनाथ प्रभु या द्रोपदी महासतिया कितने ही श्रावकोंका अधिकारमें जिन प्रतिमा कही है.

७ उपासक दशा सूत्रमें आनन्दादि दश श्रावकके अधिकारमें जिन प्रतिमा कही है इन ही श्रावकोंका मंदिर समावायागमें कहा है.

८ सूत्र अंतगड दशामें चंपानगरी जिसका वर्णन उववाई सूत्रमें कहा है सो पाठ

(वाह वे) अरिहंत चेइयणीवा.

९ सुत्र अणुत्तरोवाइमें राजगृही आदि नगरियोंका चंपानगरीकी भोलावण है और चंपामें बहुत जिन मंदिर कहा है

१० सुत्र प्रश्न व्याकरण पहिले संवरमें अहिंसाका ६० नांम कहा हैं जिसमें ५७ मा नाम (पुया) ये पूजाको अहिंसा कही है तथा तीजे संवरमें प्रतिमाकी व्यावज साधु करे सो पाठ

चइयठे य निज्जरठी अर्थ टीका चैत्यानि प्रतिमाए तायांयोर्थः प्रयोजनं सतथा तत्र च निर्जरार्थी कर्म क्षय कामः वैयावृत्त्यं.

११ सुत्र विपाकमें राजगृही हथनापुर नगरको चंपानगरीकी भोलावणया सुबाहु आदि श्रावकोंको आनंद सरीखे समजना.

१२. उववाइ सुत्रमें चंपानगरीमें जिन मंदिर (पाठ)

(वाह वे अरिहंत चइयाणिवा.)

तथा अंवड श्रावकने प्रतिमा वंदी है सो प्रथम लिख आये हैं.

१३ सूत्र रायप्रश्रेणीमें प्रदेशी राजा चित्त तथा सूर्याभ देवताने प्रतिमा पूजी है.

१४ जीवाभिगममें विजयदेवताने प्रतिमा पूजी है.

१५ सूत्र पन्नवणा पद पहिलेमें राजगृही आदि नगरीयांका अधिकार है सो नगरीयाँ चंपासरीखी जान लेना चंपामें मंदिरका अधिकार प्रथम लिख आये है तथा पद ११ में (ठावणे सच्चा) स्थापन सत्य है.

१६ सूत्र जंबुद्वीप पन्नतीमें श्रीआदिनाथ परमेश्वर मोक्ष पधारे जब इंद्रने थूब(मंदिर)कराइ है तथा डाढों ले जाते है ये कार्य धर्मके लिये या भक्तिके लिये है पाठ.

केइ जिणभत्तिए केइ जीय मेयं, ति कट्टु केइ धम्मोत्तिकट्टु.

इस पाठमें कई जीत व्यवहारसे कई भक्तिके लिये कई धर्म समजके तथा जृंभकादि देवताओंने प्रतिमा पूजी है.

१७ चंद्रपन्नत्ति सूत्रमें विमानमें प्रतिमा कही है.

१८ सूर्य पन्नत्ति सूत्रमें सूर्यका विमान प्र०

१९ सूत्र निर्यावलिकामें चंपानगरी (बाहवे अरिहंत चेइयाणिरा) में बहुत मंदिर है

२० सूत्र कप्पवडिंसि या चंपानगरीमें मंदिर सोपाठ पहिले लिख आये हैं.

२१ सूत्र पुफियामें चंद्रमा सूर्य शुक्रादि दश देवताओंने नाटक किया है प्रतिमा पूजी है.

२२ सूत्र पुष्पचूलियामें श्रीहरि धृति कृति आदि दश देवियोंने प्रतिमा पूजी नाटक किया,

२३ सूत्र वह्निदशामें द्वारकानगरी चंपानगरी जैसी या निसेडादि बारह श्रावक आनंद सरीखे जान लेना.

२४ सूत्र उत्तराध्ययनजी. अ० १० में गौतम स्वामिका अधिकार

अथ भगवता व्याख्यानसरे एव मादिष्टं यो भूमिचरः स्वलब्ध्याऽष्टापदाद्रौ चैत्यादि वंदते सते नैव भवेसिद्धिं यातीति श्रुत्वा गौतम स्वामिनं पृच्छति भगवन्नहं मष्टापदे चैत्यानि वंदितुं यामीति भगवता उक्तं व्रजाष्टापदे तत्र चैत्यानि वन्दस्व ततोहृष्टो गौतमो भगवच्चरणौ वंदित्वा तत्र गतः पूर्वंहि तत्राष्टापदे तद्दग जनसम्वाद

श्रुत्वा पंच पंचशत परिवारास्त्रयः कोडिन्न १ दिन्न २ सेवाला ३ ख्यास्तापसागतास्सन्तितेषु कोडिन्नस्तापसः सपरिवारः एकान्तरो पवासेन भुंक्ते पारणे मूलकंदान्पाहारयति सोऽष्टापदे प्रथम मेखलामारूढोस्ति द्वितीयो दिन्न तापसः सपरिवारः प्रत्यहं पष्ट पष्ट पारणके परिशाटितानि पर्णानि भुंक्ते सद्वितीय मेखला मारूढोस्ति तृतीय सेवाल तापसः सपरिवारो निरंतर मष्टमष्ट पारणके सेवालं भुंक्ते सतृतीय मेखला मारूढोस्ति एवं तेपुक्लिश्य मानेषु गौतमः सूर्यकिरणाव लम्बेन तत्रारोढु मारब्धः ते तापसाश्चिं तयन्ति एवंः स्थूलवपुः कथमत्राधिरोढुं शक्यते वयं तपस्विनोपि अशक्ता एवं चिंतयत्स्वेयतेषु पश्यत्सु सगौतमः क्षणादष्टापद पर्व शिखर मधिरूढः ते पुनरेवं चिन्तयन्ति यदा सावयतरिष्पति तदा स्पशिष्यावयं भविष्या

मः गौतम स्वामी प्रासाद मध्ये प्राप्तो निज निजवर्ण परिमाणोपेता श्चतुर्विंशति जिनेंद्राणां भरतकारिताः प्रतिमा वं वन्दे.

यहां ग्रंथ बढनेके भयसे स्वल्प संबंध उत्तराध्ययन दीपिकासे लिखा है विशेष देखना होतो सूत्र उत्तराध्ययनमें देखो यहां हमारे पास इस समय विद्यमान है पूर्वोक्त लेखमें लिखा है कि गौतम स्वामि अष्टापदकी तिर्थ यात्रा कि है तथा उदाई राजाकी प्रभावती रानी अपने घरमें जिन मंदिर बनायाथा जिसमें जिन प्रतिमा स्थापन करके त्रिकाल पूजा करतीथी ऐसेही उदाई राजाभी परमेश्वरका पूर्ण भक्त था जिसका लेख सूत्र उत्तराध्ययन अ० १८ में है.

ततं प्रभावत्या अन्तःपुर मध्ये चैत्य गृहं कारितं तत्रैयं प्रतिमा स्थापितातां च त्रिकालं सा पवित्रा पूजयति अन्यदा प्रभावती राज्ञी तत्प्रतिमायाः पुरोनृत्यति राजाच्चवीणां वादयति.

अध्ययन २९ में चैत्यवंदनके फलका गौतमस्वामिने पृच्छा की है सो लेख [प्रत्याख्यानानंतरं चैत्यवन्दनाकार्यां अतस्तफलं

प्रश्न पूर्वमाह-थयथुइ मंगलेणं भंतेजीवे, किं जणय,इथयथुइ मंगलेणं नाणदंसण चरितबोहि लाभं जणयइ नाणदंसण चरित्तबोहि लाभसंपन्ने यजीवे अन्तकिरियं कप्पविमाणो ववत्तियं आराहणं आराहेइ)

इस पाठमें लिखा है कि प्रतिमाके आगे नमोत्थुणं देणेसे ज्ञानदर्शन चारित्र बोधी लाभ होता है यावत् अंत क्रिया करे या कल्पविमानमें जावे देखिये प्रतिमाका प्रभाव.

२५ सूत्र दशवैकालिकमें पाठ

सिज्जंभवं गणधरं जिणपडिमादंसणेण पडिबूधे

इस गाथामें कहा है कि श्रीसिज्जंभवभट्ट श्रीशांतिनाथ प्रभुकी प्रतिमा देखके प्रतिबोध पाया

२६ सूत्र नंदीमें पाठ (स्थूभ) यह विसाला नगरीमें श्रीमुनिसुव्रत भगवानका स्थूभ कहा है जिसके प्रभावसे नगरीका बचाव हुवा

२७ सूत्र अनुयोगद्वारमें च्यार निक्षेपा मानना कहा है जिसीसे परमेश्वरोंका च्यारही निक्षेपा वंदनीक है.

२८ सूत्र व्यवहार उ० पहिलेमें साधुको प्रतिमाके पासमें आलोयणा लेना कहा है सो पाठ हम पहिले लिख आये है.

२९ सुत्र दशाश्रुतस्कंध अ० ८ मामें सिद्धार्थ राजाने प्रतिमा पूजी है सो पाठ हम पहिले लिख आये है.

३० सूत्र निशीथ उ० जिसमें दस नगरियां कही है चंपा आद लेके जिन नगरियोंमें मंदिरोका वर्णन उववाइसूत्रमें किया है.

३१ सूत्र बृहत्कल्पमें चंपानगरीतक साधुका विहार कहा है वो चंपानगरी पुर्व्ववत् मंदिरों करके शोभायमान हैं.

३२ सूत्र आवश्यकमें प्रतिमा अधिकार.

१ सव्वेलोए अरिहंत चइयाणि वाकरे मि-काउसग्गं.

२ जंकिंचीनाम तीत्थं सग्गेपयालेमणु सेलोए जाइं जिणबिंबाइं ताइं सव्वाइं वंदामि.

३ जावंति चेइआइं उढेअ अहेअ तिरिअ लो-एअ सव्वाइं ताइंवंदे इह संतोनत्थ सताइं

४ भरतराजा अष्टापदपर चौवीस तीर्थंकरोंकी प्रतिमा भराइ है.

५ श्रावक वसुपूरीमतालकाने मंदिर कराया है

६ श्रेणिक राजाने बिंब भराया है.

७ कीताय वंदीय महीया याई बुजा है

इत्यादिक सूत्रमें वहूत जनोका अधिकार चला है

यह बत्तीससूत्रोंमें अधिकार प्रतिमा सबधी सक्षेपसे लिखा है विशेष देखना होतो सनातन जैन मुनियोंकी सेवा करो सो मालुम हो इण सिवाय भी देखना हो तो सूत्र महाकल्प जिसका नाम नदीसूत्रमें है सो [पाठ]

उक्कालिअ अणेग्ग विहं पन्नंतां तंजहा दस वेकालिअं कप्पिया कप्पियं चुल्लकप्पसुयं महाकप्पसुयं उववाइयं रायपसेणियं

इत्यादि मूल पाठमें है उसमें इस तरहका पाठ है

तेणंकालेणं तेणं समएणं जाव तुंगिआए नयरीए वहवे समणो वासग्ग परिवसंति संखे सयए सिलप्पवाले रिसिदत्ते दमगे पुख्कली निविघ्ने सुप्पइट्ठे भाणुदत्ते सोमिले नरवम्मे आणंदे कामदेवा इणोअन्नेअन्नत्थ गामे परिवसंति अंड्ढादित्ता

विल्थिप्ल्ला विपुलवाहणा जावत्तनद्धट्ठा गहि अट्ठा चाऊ दसह मुद्दिठ पुणिणमासिणीसु पडिपुंणं पोसहं पालेमाणा निग्गंथाणं निगंथीणं फासुए सणिज्जेणं आसणं पाणं खाइमं साइमं पडिलाभे माणा चेइआलाएसु तिसंझासमये चंदण पुप्फ- धूव वत्थाईहिं अच्चणंकुणमाणा जावजिणहरे विहरंति सेकेण ट्ठेणं (गोयमा) जोजिण पडिमं पूयेइ सोनरो सम्मदिट्ठी जाणिअव्वो जोजिण प- डिमं नपूयेइ सो नरो मिच्छादिट्ठी जाणिअव्वो

इस पाठमें लिखा है सुगंधि पुष्प चंदनादिकसे जिन प्र- तिमा पूजे वो समदृष्टि है और प्रतिमा नहीं पूजे वो मिथ्या- दृष्टि है और देखो इसी सूत्रमें कहा है कि साधु श्रावक छति शक्ति जिन मंदिर नहीं जावे तो प्रायश्चित कहा है सो (पाठ)

से भयवं तहारूवं समणं वा माहणं वा चेइय हरे गच्छेज्जा हंतागोयमा दिणेदिणे गच्छेज्जा से भयवं जत्थ दिणेण गच्छेज्जा तओ किं पायच्छित्तं

हवेज्जा (गोयमा) पमायं पडुच्च तहारूवं समणं वा माहणं वा जो जिणघरं न गच्छेज्जा तओछट्टं अहवा दुवालसमं पायच्छित्तं हवेज्जा से भयवं समणो वासगस्स पोसहसालाए पोसहिए पोसह वंभयारी किं जिणहरं गच्छेज्जा (हंता गोयमा) गच्छेज्जा से भयवं केणट्ठेणं गच्छेज्जा गोयमा णाणदंसण चरणट्ठयाए गच्छेज्जा जे केइपोसहसालाए पोसह वंभयारी जओ जिणहरे न गच्छेज्जा तओ पायच्छित्तं हवेज्जा गोयमा जहा साहू तहा भाणियवं छठ्ठं अहवा दुवालसमं पायच्छित्तं हवेज्जा.

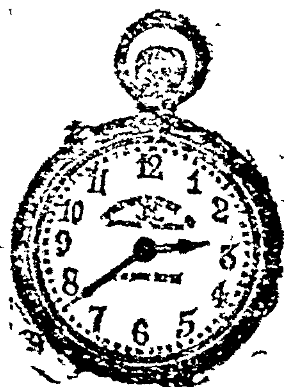
इस पाठमें स्पष्ट लिखा है कि साधु श्रावक जिन मंदिर न जाय तो प्रायश्चित्त आवे इत्यादि बहुत सूत्रोंमें प्रतिमा वांदना पूजनेका अधिकार है

(स) आप फरमाये वे सुत्रार्थ स्वीकार है परन्तु द्रव्य पूजा करनेमें अवश्य हिंसा होती है इसीमें धर्म समजना यह

हमारे समजमें नहीं आया इसका खुलासा बत्तीस सूत्रसे कहें.

(उ) प्रियमित्रों आपकी समजकोमैं धन्यवाद देता हूं कि श्रीजिनेंद्र देवोंका आज्ञा किया हुए सूत्रार्थको आपने स्वीकार किया अब आप जो न्याय पर खडे रहोगे तो तीसरे प्रश्नमें आपके बत्तीस सूत्र मानना अन्य सूत्र नहि मानना इसका भ्रम दूर होगा और चौथे प्रश्नमें हिंसाका भ्रम दूर करेंगे इसी वास्ते यह दूसरा प्रश्न समाप्ति करता हूं ॥ इति ॥

इति जिन प्रतिमा वंदनं पूजनं द्वितिये प्रश्नं समाप्तम् ।



॥ अथ तृतिय प्रश्नं जिन प्रतिमा पूजनं विद्धि प्रारंभं ॥



दुहाः—प्रतिमा वंदण पूजणा विद्धि सूत्र मझारः
सावधान हेई सांभलो आगमके अनुसार ॥१॥

(स) मान लिया जावे कि प्रतिमा अरिहंतोंकी है अपने मंगलिकके लिये वांदन पूजन करणा अपना कर्त्तव्य है परन्तु धर्म विधिमें होते तो जैसे सामायक पोसाकरणेकीवा सूत्र दशा श्रुतस्कध अध्ययन ६ में पडिमाका कल्पविधि कहा है ऐसे ही पूजा करणेकी विधि श्रावकके लिये होना चाहिये सो तो कोई सुत्रमेंहे नहीं, फेर किस तरहसे समजना चाहिये.

(उ) वाहरे हठवादियों इतना तो हरकोई मनुष्य समज सकता है कि जब प्रतिमा वंदनीक पूजनीक है तो क्या वांदने

पूजनेकी विधि न होगा जैसे किसीने कहा इस साहुकारके लडकेका व्याह हुवा तो अब व्याहकी विधि न होगा अपि तु निश्चय ये होगा ऐसे ही प्रतिमा वांदने पूजनेकी विधि सुत्रोंमें है परन्तु तुम्हारे मोहका पटल आ रहा है अब खोजना करोगे तो जैसे पूर्वोक्त दो प्रश्न सिद्ध हुए तैसे ही यह भी समजमें आ जावेगी.

(स) बतलाओ बत्तीस सुत्रमें कौनसे श्रावक किस विधिसे प्रतिमा पूजी है.

(उ) आप बारबार पुकारते हो कि बत्तीस सुत्रसे बतलाओ हम पूछते हैं कि आप बत्तीस सुत्र किस आधारसे मानते हो.

(स) बत्तीस सुत्र भगवानके आज्ञा किये हुए हैं.

(उ) कौनसा प्रमाण है कि बत्तीस सुत्र भगवानके आज्ञा किये हुए है.

(स) हमारे गुरु महाराज कहते हैं कि बत्तीस सुत्र तो

भगवानके मरूपित है शेष आचार्योंने रचे हैं.

(उ) इसमें कोई प्रमाण भी है.

(स) बत्तीस सुत्र परस्पर मिलते हैं बाकी नहीं मिलते हैं इसीसे हम बत्तीस सुत्र मानते हैं.

(उ) प्रिय मित्रों यह भद्री जीवोंके लिये जाल रचा है परन्तु इस तीसरे प्रश्नको अछि तरहसे पढोगे तब ज्ञात होगा कि किस कारणसे इन लोकोंने बत्तीसही सूत्र माने हैं लो सुनो श्री भगवानने तो अर्थ रूपी वांणी कही है जिसीको गणधर भगवानने सूत्र रूपसे ग्रथित कि है.

अर्थ भासइ अरिहा सुतं गुंथेइं गणहरा

यह गणधरोंकी रची हुइ द्वादशांगी इसीका लेख समा-यंग नंदी भगवती आदि सुत्रोंमें है जिसमेंसे बारमा दृष्टिवाद अंगका तो विछेद हो गया अब ईग्यारह अंग रहे तो फेर आप बत्तीस सुत्र किस आधारसे कहते हो सो प्रमाण बतलाओ

(स) हमारे लूकाजीने बत्तीस सूत्र माना है प्रमाण देखना हो तो हमारी पटावलिमें लिखा है सो देखलो.

(उ) तुमारे पटावलिका प्रमाण तो कोई तुमारा परम प्रिया होगा सो ही मानेगा कारण तुमारी पटावलिको कोई विद्वान देखेंगे तो अवश्य ही कहेंगे के यह मत कृत्रिम है मैं स्वयं इस मतकी दस या बारह पटावलियाँ देखी जिसमें एक एकसे विरुद्ध ही विदित हुआ इसीसे पटावलि प्रामाणिक नहीं है ओर तुम कहते हो कि हमारे लूंकाजीने माना है तो क्या लूंकाजी सर्वज्ञ थे सो उन्हीं के वचन पर प्रतीति रखते हो कहो लूंकाजी कौन थे.

(स) लूंकाजी एक समान गृहस्थ थे.

(उ) क्या काम करते थे.

(स) प्रथम पैसा कौडी वेचते थे पीछेसे जतियोंके उपासरेमें पुस्तकोंकी लिखाई करते थे.

(उ) फेर लूंकाजीने बत्तीस सूत्र ही किस तरह माने.

(स) हमारी पाटावलिमें ऐसे लिखा है कि—

ज्ञानजी जतिके पास एक एक सूत्रकी पढत लेके

दो दो पडते लिखी जिसमें एक २ पडते तो गॅन जी जतिको दे दी एक २ पडत आप छिपाकें गुप्त रक्खी ऐसे बत्तीस सूत्र लिखे इसीसे वत्तीस सूत्र हम मानत हैं.

[उ] बस यही आपका बत्तीस सूत्र माननेका हैतु है परन्तु यह सब झूठा कथन है प्रिय मित्रो जब आप पक्षपात छोडके आपके कथनपर ध्यान देवोगे तो अपको सय विदित होगा कि चोरीसे लिया हुवा ज्ञान कभीभी सचा नहीं मालुम होता है अब लूकाजीकी साचा वृतान्त ज्यादा विस्तार जैन तत्वादर्शमें देखो खुब अच्छा खुलासा किया है पूर्वाचार्योंने लिखा है कि ज्ञानजी यतिके उपासरेमें पुस्तक लिखेत हुवे लुकाजीने एक पुस्तकमें सात पत्रे कम लिख दियेथे इसीसे श्री संघ लूकाका तिरस्कार किया जब लूंकाजी कदाग्रह अभिमानके लिये यह भद्रीक जीवोंको कुगानिमें डालनेका उपाय किया है ज्यादा खुलासा जैन तत्वादर्शमें किया है वहासे देखो बत्तीस सूत्र माननेका प्रयोजन यह है कि अन्य सूत्रोंमें जिन प्रतिमाके लिये बहुत अधिकार है इसी कारणसे शेष सूत्रोंको छोडकर बत्तीस सूत्रही माने हैं अब बत्तीस सूत्रोंमें श्री नंदी-सूत्र है जिसीमें ७२ सूत्रोंके नाम है अब जो नंदीसूत्र मानें

उसीकों ७२ सूत्र मानणा चाहिये जो ७२ सूत्रकों नहीं माने उसने नंदीसूत्र भी नहीं माना.

[स] आप लोग ७२ छोडके सैकडों ग्रन्थ मानते हो सो किस शास्त्रके आधारसे मानते हो.

[उ] नंदीमें ऐसा पाठ है.

चउदस पइन्नग सहस्साणि भगवउ बद्धमाणस्स सामिस्स अहवाजस्स जतियासीसा उप्पतियाए विणइयाए कमियाए परिणामामियाए चहुविहाए बुद्धिए उववेयाणस्स तत्तिया पइन्नगस हस्साइं पत्तेय बुद्ध वितत्तियाचेव.

इस पाठमें लिखा है कि तिर्थंकरोंके जितने २ साधु होते हैं उतनेही पइनै याने प्रकीरण बनाते हैं वह सब हमको स्वीकार है अन्य पूर्वाचार्योंने जिन आगमके अनुसार जो प्रकरण आदि रचे हैं सो जिन शासनकी उन्नतिके लिये रचे हैं देखा जावे तो उहीं ग्रन्थोंसे आप लोगोंकी पेट भराई हो रही है जिसको बहुमान देके अपना जन्म सफल करो.

[स] कुछ भी हो हम तो हमारे पूर्वजोंके माने हुवे बत्तीस सूत्रोंको मानते है.

[उ] प्रिय मित्रों मानो न मानो मरजी तुमारी है जो बत्तीस सूत्र मानते हो तो सूत्रोंका अर्थ कैसे करते हो

[स] सूत्रका अर्थ टब्बासे करते है.

[उ] टब्बा कीस आधार सेबना है.

[स] टब्बा टीकासे बना हुवा है

[उ] क्या प्रमाण है.

[स] आचारांगादि सूत्रोंके टब्बामें मंगलाचरणमें ऐसा लेख है (पाठ).

प्रणम्य श्री जिनाधीशं श्री गुरुणां मनुग्रहात् लिख्यते सुखबोधार्थ माचारांगार्थ वर्तिकं ।१। सुतरां शब्द शास्त्रोणयेषां बुद्धिर संस्कृता । व्यामोहो जायते तेषां दुर्गमेंवृत्ति विस्तरे ॥२॥

ततो वृत्येः समुधस्य सुलभो लोकभाषया धर्मेलि सुपकाराया दिमागार्थः प्रतन्यते ॥३॥

इसमें टब्बो करनेवाला लिखा कि आचारांग सूत्रकी वृति कठिन है इसी वास्ते वार्तारूपमें टीकासे टब्बा बनाता हु इसी माफक सब सूत्रोंमें यह मंगलाचरण है.

[उ] जब टीकासे टब्बा हुवा आप स्वीकार करते हो तो फिर झगडा किस बातका है.

[स] टीका पंच अंगी हमारे लूंकाजीने नहीं मानी है जिसीसे हम लोग नहीं मानते है.

[उ] यह बडी हंसीकी बात है प्रथम तो अपने मुखसे स्वीकार कियाथा कि टीकासे टब्बा बना है और मंगलाचरणका लेख भी दिया है अब केहते हो कि हमारे लूंकाजी टीकाको नहीं मानी है विद्वान पुरुषोंको विचार करना चाहिए कि टीका आदि पांच अंगी मानना बत्तीस सूत्रोंमें भगवानने फुरमाया है जिसकों तो मोहके उदयसे नहीं मानना और जिसको संम्पूर्ण अक्षरका भी ज्ञान नहीं उस लूंकाजीके कथनपर दृढ विश्वास कर बैठना यह कोइ विद्वानोंका काम नहीं है देखो सूत्र समवायांगजीमें निर्युक्ती माननेका मूल सूत्रमें ऐसा [पाठ]

आयारेणं परित्ता वायणा संखिज्जा अणुओगद्धारा संखिज्जावेढा संखिज्जा सिलोगा संखिज्जाओ निज्जुत्तिओ संखिज्जाओ पडिवत्तिओ संखिज्जाओ संघयणीओ.

इस पाटमें निर्युक्ति मानना भगवानने आज्ञा कि है तदपि हठवादी हठ नहीं छोडते है फिर सुनो सूत्र भगवती स० २५ उ० ३ में ऐसा पाठ है.

सुत्तत्थो खलुपडमो वीओ निज्जुत्ति मिस्सिओ भणिओ तइओय निरविसेसो ए सविहीहोइ अणुओगो १ टीका.

इस पाटमें कहा है कि पहले सूत्रका अथ कहना पुनः निर्युक्ति कहना तीसरेमें निरविशेप कहना यह टीकाका मानना सिद्ध है और सुनो सूत्र अनुयोगद्वारमें ऐसा [पाठ]

सुत्ताणुगमे निज्जुत्ति अणुगमेय तथ निज्जुत्ति अणुगमे तिविह पसती उवघाय निज्जुत्ति अणुगमे इत्यादि

इस पाठमें सूत्र और नि की मानणा खुला २ जलक रहा है और आवश्यक सूत्रमें ऐसा(पाठ)

सूत्रागमे अ थागमे तउभय गमे.

ये तीन प्रकारके आगम है ऐसा आगममें कहा है और देखो

सूत्र नन्दीमें बारह अंग पर निर्युक्ति मानना मूल पाठमें कहा है जिसका विस्तार नन्दी सूत्रसे देख लेना वहां ग्रन्थ बढनेके भयसे नहीं लिखा है अब इस पंचागीको नहीं माननेवालेको मत्यनीक कहा है.

सुयं पडुच्चतओ पडिणीया पणत्ता सुय पडिणीए अत्थ पडीणीए तदुभय पडिणीए

स्थाणायंग सूत्र ठाणा ३।४ का लेख है इसको अच्छी तरहसे विचारो.

(स) यह निर्युक्ति कही सो हमको प्रमाण है परन्तु वो निर्युक्ति पूर्व कालमें विच्छिद्न हो गई वर्तमानमें जो निर्युक्ति है वो पिछले आचार्योंने अपनी मन कल्पनासे रची है जिसीसे हम नहीं मानते हैं.

(उ) कुछ प्रमाण है कि निर्युक्ति नवी रची है.

(स) प्रमाण तो प्रगट ही विदित होता है कि पाठमें जिस बातकी गंध भी नहीं है वो टीकाकार अधिकार कहांसे लाये हैं.

(उ) इसीसे ही आप समझते है कि टीका नवीन रची है परन्तु इस भ्रमको दूर करके सत्य वस्तुको धारण करो

आप कहते हो कि वह निर्युक्ति दुकालमें विच्छेद हो गई और आचार्योंने नवीन टीका रची। जिसमें अपनी मन कल्पनासे संबध रख दिया यह आपका कहना तद्दन वृथा है देखो जिस कालमें निर्युक्ति विच्छेद हो गई तो सूत्र कैसे रहा जो सूत्र रहा तो निर्युक्ति भी रही जो निर्युक्तिमें नवी बात मन कल्पनासे लिखी तो मूल सूत्रमें लिखनेमें उनको कौन निषेध करने वाले थे कारण तुमारा तो उस समयमें कुछ बीज भी नहीं था.

(स) मूल सूत्रमें तो आत्माके भयसे नहीं मिलाया.

[उ] क्या भय था

[स] एक अक्षर भी न्यूना धिक करनेसे अनन्त संसार बढनेका भय था.

(उ) मूल पाठमें न्यूनाधिक करनेसे अनन्त संसार वढत है तो क्या अर्थमें न्युनाधिक करनेसे संसार नही वढेगा अपितु निश्चय वढता हैं.

(स) तो क्या निर्युक्ति वही है.

(उ) लो सुनो निर्युक्ति गणधर रची है जिसको सुगम भद्रबाहु स्वामीने की है.

[स], आचारांग सुगडायगंकी वृत्ति शैलांग आचार्य और नव अंगकी अभयदेवसूरिकी रची हुई अभी है.

(उ) यह शैलांगाचार्यनें टीका रची है सो ग्यारह अंग पर रची थी जिसमें वर्तमान कालमें आचारांग सुगडांगकी टीका है परन्तु उन आचार्योंने अपने मनसे नहीं रची है देखो आचारांग सूत्रादिमें ऐसा पाठ.

शस्त्रा परिज्ञा विवरण मति बहु गहनं चगंध हस्ति कृतं तस्मात् सुख वो धार्थं गृह्णा यिह मंजसा सारं.

२ इसमें शैलंगाचार्य महाराज कहते हैं कि गंध हस्ति आचार्य कृत वृत्ति बहुत कठिन है जिसको सुगममें मैं करता हुं और जैसें शैलांगाचार्यने कहा है ऐसे ही गंध हस्ति आचार्य ने पूर्वाचार्योंका आश्रय लिया है परंपरासे देखा जावे तो यह अर्थ स्वयं जिनेन्द्र भगवानने आज्ञा किया है और आव-

श्यक सूत्रकी टीका भद्रबाहु स्वामीकी अभी मौजुद है और अभयदेवसूरिने नवांगकी टीका रची है सो शासनदेवी की सहायतासे जिनागमानुसार रची है इसीसे निर्युक्ति मानना सिद्ध हुवा परन्तु आपका दुराशय प्रतिमा नहीं मान नासे ही इतनी कुयुक्तियां लगाते हो। कहो निर्युक्ति नही मानोगे तो नमो अरिहंताणका क्या अर्थ करोगे।

(स) नमो कहे तां नमस्कार अरि कहे तां बैरी हताणं कहे तां मारनेवाला यह अर्थ होता है।

(उ) कौनसे वैरीको मारा।

(स) कर्मरूपी वैरीको कहना।

(उ) कर्म कहांसे लाये मूलाक्षरमें तो है नही।

(स) संबंध मिलानेके वास्ते प्रक्षेप कहना ही पडता है।

(उ) अहो! हटवादिओं तो फिर टीका किसको कहते हैं इसीका ही नाम टीका है कि संबधपर मिलान करना।

(स) मिलती हुई टीका तो हम मानते है।

(उ) कोनसा चिन्ह है कि यह टीका तो मिलती है यह

नहीं मिलती है आपके पास जो टीका हो तो मिलालो नही हो तो पूर्वाचार्योंकी रची हुई टीकाको स्वीकार करो।

(स) सूत्र उत्तराध्यनमें अ० १० में में गौतम स्वामी अष्टापद तीर्थकी यात्रा की है और मुलमें जिसका गंध भी नहीं है अब यह टीका कैसे मानी जाये।

(उ) उत्तराध्यनकी अ० १–२–३–४–५–६–७–८ ९ इन अध्यनोंकी टीका तो आप सत्य मानते हो। और दशम अध्यनकी टीकाको सत्य नहीं मानते हो। परन्तु विचार करके इस संबंधको सुनो पृष्ठ चंपानगरीका राजाका पुत्र शाल महाशाल थे वहांपर श्रीवीर प्रभुका पधारणा हुवा शालमहाशाल प्रभुकी वाणी सुन (गंगेलजी) को राज दे आप दोनों भाई परमेश्वर के पास दिक्षा ली फिर ११ अंगका ज्ञान पढा बादमें अपने कुटुम्ब-को उपदेश करणे के लिये प्रभुसे आज्ञा मांगी भगवानने आज्ञा दी जब शालमहाशाल मुनि गोतमस्वामी को साथ लेके पृष्ट चंपा पधारे गोतमस्वामीका व्याख्यान सुणके गंगे-लजी आपना माता पीता के साथ दिक्षा लीवी पीछा आवता शाल माहासालादि पांचे जिना को अन्यत्व भावनासे केवल

ज्ञान उत्पन्न हुवा, भगवान् पासे आये प्रदिक्षणादि के केवाली-ओंकी पर्षदामे वेठे गोतमस्वामीने कहा कि मुनिओं आसातना लागे भगवान् फुरमावे गोतम केवलीकी आसातना मत करो तब गोतमस्वामीने विचारा कि मेरे हस्त दीक्षितोंको केवलज्ञान हुवा मेरेको नही हुवा वास्ते भगवान्‌से पूछ इतनामे अकाशमे देव वाणी हुईके भगवान् आज वाख्यानमे फुरमाया है की भुचर आपणी लब्धीसे अष्टापदकी यात्रा करे तो उसी भवमे मोक्ष जावे आ वात सुणतों ही गोतमस्वामी भगवान्‌से आज्ञा मांगी मै अष्टापद यात्रा करू तब भगवान् आज्ञा देता हुवा केहते हैं

(डमपत्तए पडुंयए जहा, निवडइ रायगणाण अघए।, एवं मणुयाए जीवियं, समयं गोयममापमायए)।१।

इस पाठमे लिखा है की गोतम समय मात्र प्रमाद मत करों अब वीचारणा चाहिए की गोतमस्वामी ४ ज्ञान १४ पूर्व का धणी क्या प्रमाद करते थे परन्तु समजणे का इतना ही है की अष्टापद यात्रा करणेमें प्रमाद मत करो जरा नैत्र खोलके देखीए आचारांग २-१५ तीर्थ यात्रासे दर्शन सुद्धी होती हैं भगवती शातक २०उ९ चारण मुनि यात्रा करी है तो फेर जिन

वचनांमे शांका कीस वातकी अगर कोई हठ वादी कह देवेकी हम वृती नही मांने उसीके लीए उत्तरा ध्ययनकी एक गाथा लिख देताहुं की वीगर टीकासे अर्थ होइ न सके यत् नहु जिण अज्जादिस्सई, बहु मएदिस्सई मगादे-स्सिए, संपई नेया उए पहे, समय गोयमा मपमाए ॥ १ ॥ इस गाथा के फुरमाने वाला वीर प्रभु है और केहते हैं कि आज जिण नही है इस जगा आपकों टीकाका ही सरणा लेणा पडेगा.

(स) हम सुनते है की टीका वीगेरेमे बहुतसे वातों वीरुद्ध हैं वास्ते टीका मानणा हम मंजुर नही करते है.

प्रिय मित्रो! आप किसी जैन मुनियोंसे अर्थात् शास्त्र श्रवण करो ताके आपका भर्म दूर हो जावें। पेस्तर तो आपको यह विचारना चाहीये कि पुर्व आचारियोंने जो टीका बनाइ है वो जिनशासनकी उन्नाति के लिये बनाई है या जिन शासन के विरुद्ध के लिये। एसे कभी नहीं हो सकता है। हाँ अलबत स्यद्वाद नय निक्षेप विधिवाद चरितांनुवाद आदि जैन शेली विहुन आपठितां के लिये यह कहना है इसीका मतलब असली यह है कि अवलतो टीकासे प्रचीत

ही नहीं है। दूसरा तुम्हारे सरीखे भद्रीक जीवोंको कहेदते हैं कि टीकामें विरुद्ध बातों है परंतु ऐसे तो बत्तीस सुत्रोंके मुल पाठमें भी अनेक बोल अपेक्षासे भरा हुवा है कि विगर पचागी देखा जावे तो आपसमें विरुद्ध दीख पडते है। इस विषय में हमारी बनाई हुई प्रश्न माला नामकी किताब मे बत्तीस सूत्रोंके मुल पाठका १०० प्रश्न लिखा हुवा है उसको देखके मूल सूत्रोंसे उत्तर दना चाहिये। परतु उस विषय में आपकों पचागी का अवश्य शरना लेना पडेगा। इतनाही नही बलके भद्रीक जीवो को अपनी जालमे फसाने के लिये बत्तीस सुत्र बत्तीस सुत्र पुकारते है। जो कि बत्तीस सूत्र ही मानना ठीक हो तो फिर अनेक बोल बत्तीस सुत्रों के बार जैसे समकित सल्योद्धार में २०४ बोल लिखा हुवा है वो बत्तीस सुत्रमें तो नही है। आप किस आधारसे मानते हो। अब विचारो कि एक प्रतीमा न माननेसे कितना उलट पुलट करणा पडता है। हम कहते है कि हमारे पूर्व आचारियोंके बनाये हुवे ग्रन्थोंसे ढाल चोपाइयासे प्रतिमा निकाल देना जैसे रामचारित्र, कृष्णाचारित्र, वीरसेन चारित्र, महाबल चारित्र, महीपाल चारित्र, एसे सईकडो चारित्र हैं कि जिससे प्रतिमा का अधिकार निकाल देते हो। क्या आज्ञा भंगका वज्र

पाप नहीं लगेगा। देखिये जिस आचारियों के बनाये हुवे रास, चारित्र चोपियों पढके अपने महिमा पूजा या पेट भराई करते हो और उन्हीका अवगुण बोल ते हो। इस कृतघ्नी पापसे कैसे छूटोगे.

(स) समकित सल्योद्धार में जो २०४ बोल लिखा है वो हम मानते हैं कारण बत्तीस सूत्रोंसे मिलते बोल है और ढाल चोपियोंसे प्रतिमाका अधिकार हम नही निकालते हैं।

(उ) बत्तीस सुत्रोसे मिलता बोल कहते हो। अवल तो मिलता किसको कहते हैं। जो वस्तु पासमें हो उसीके सदृष वस्तु हो उसीको मिलती कह सकते हैं। लेकिन जिसका नाम निशान बत्तीस सुत्रोमें नहीं है फिर मिलती बात कैसे कह सकते हो। खुला खुला ही कह देना चाहिये के सिवाय मूर्तीके हम सब मानते हैं। ताके सब लोगोंको विदित हो जाय कि इन लोगोंको मूर्त्तीसे द्वेष है। अब जो ढाल चोपियोंसे मूर्त्तीका अधिकार निकालना नहीं कहते हो सो मिथ्या है कारण प्रत्यक्ष प्रमाणको कोई बाधा नहीं कर सकते हैं। ऊपर हमने कितने चारित्रका नाम तो लिख दिया है और भी

देखना होतो हम बतला सकते हैं। ग्रन्थ बढ जानेके भयसे विद्वानोंके लिये इतना ही प्रमाण मजबूत है।

(स) कुछ भी हो हम तो बत्तीस ही सुत्र मानेंगे।

(उ) यह सवाल कोई विद्वानोंका नहीं है। अब जो बत्तीस सूत्र मानना कहते हो तो पण बत्तीस सूत्रमें लिखी हुई बातें क्यों नहीं करते हो। सूत्र प्रश्नव्याकरण (पाठ)

नामक्खाय निवाय उवसग्ग तद्धिय समास-संधि पयहेउ जोगिय उणाइ किरिया विहाण धाउसर विभत्ति वन्नजुत्तं तिकालं दसविहंपि सच्चं जह भणियं तहकम्मुणा होइ दुवालस विहाय होइ भासा वयणं पिहोइ सोलसविहं एवं अरिहंत मणुन्नायं समक्खियं संजएणं कालं, मियवत्तव्वं ॥

अर्थ—नाम आख्यात, निपात, उपसर्ग, ताद्धित, समास, संधि, पद, हेतु, योगिक, उणादि किया, धातु स्वर,

विभक्ति, वर्ण, युक्ति, तीन काल, दश प्रकारका सत्य, बारह प्रकारकी भाषा, सोलह प्रकारका वचन, इस प्रकार अरिहंतने आज्ञा की है। तुम लोग व्याकरण क्यों नहि पढते हो।

२ निशीथ सुत्रमें उ. ५ में विना प्रमाणका रजोहरण रखे तो प्रायश्चित आवे।

३ भगवती, निशीथ, दशवैकालिक, प्रमुखमें साधुको डांडा और काबली रखना कहा है। तुम लोग क्यों नही रखते हो।

४ आवश्यक सुत्रमें सामायिक पोहसा प्रतिक्रमण वा आंबिल आदिका पच्चक्खाणोकी विधि कही है उस मुताविक क्यों नहीं कराते हो।

५ सूत्र प्रश्नव्याकरण साधुके गोचरीकी झोलीपर पडिला रखना कहा है तुम क्यो नहीं रखते हो।

इत्यादिक बहुत बोल सूत्रमें हैं तदपि आप लोग नही करते हो सो यह जिन आज्ञा भंग दोषसे क्या बच सकोगे। अपितु कभी नहीं.

(स) सूत्र उत्तराध्यनजी व्याकरण पढने वालेको तुच्छ बुद्धिया कहा हैं।

(उ) वारे जिन शासनकी जड काटनेवाले! सच्चा हीं हैं कि विना ज्ञान अंधेरा होता है। सुत्रमें जो कहा है वो पर-परावादी सस्कृत पढके अभिमान करे वो तुच्छ बुद्धिय है। असली देखा जावे तो आपके ज्ञान असातनासे हीं अविद्या देवीकी महेर है।

[स] रजोहरणका प्रमाण तो वत्तीस अंगुलका है परंतु पूरी जीव रक्षा नहीं होनेसे हम लोग अधिक रखते हैं। आप बत्तीस अंगुलके रखते हो तो रात्रिको कैसे प्रमार्जन करते होंगे।

[उ] रजोहरणको शास्त्रकार धर्मधजा कहा है परतु ठरदे अशुचि स्थान प्रमार्जन करना नहीं कहा है। रातके वकतमें प्रमार्जन करनेके लिये दंडासन अलग कहा हैं।

[स] डांडा तो स्थीवर साधुके लिये कहा है।

(उ) दशवैकालिक विधिवादका कथन होनेपर सब साधुको अवश्य रखना चाहिये।

(स) सामायिक प्रतिक्रमण आवश्यक सूत्रसे हम करते हैं

[उ] तुमारे बाईस टोलेमें कितने आवश्यक हैं।

[स] क्या आवश्यक भी कितने ही होते हैं। आवश्यक तो एक ही होता है।

[उ] क्या तूमने रतलामका जिकर नही सुना है। एक संप्रदावाला आवश्य और ही बताता है दूसरी वाला और ही बताता है [इसी सिद्ध हुवा कि टोले टोले आवश्यक अलग अलग है।

(स) हम तो जानते हैं कि आवश्यक एक ही है। अगर आप अलग अलग बतलाते हो इसका कारण क्या है।

(उ) प्रिय मित्रो एक आवश्यक तो सुद्धर्मा स्वामीकी परम्परा वालोंके पास है। अब उस आवश्यकको छोडकर के नवीन मतवाले नया कृत्रिम भी आवश्यक बनाया है जिसमें न तो पूरे साधुओंका अतिचार आलोवणा है न कोई श्रावककी रीतिसे आलोवणा है। देखिये सामान्य मनुष्य ही राबदृष्टीसे अवलोकन करे तो आपका कृतव्य विदित हो जावे आप लोग प्रतिदिन कृतव्य प्रतिक्रमण करते हो तब हमेश

बारह व्रत उच्चारण करते हो और देखा जावे तो व्रत एक भी नहीं हैं। इतना तो सोचो कि एक दफह व्रत लेलिया हो तो फिर प्रतिदिन व्रत उच्चारण करनेकी क्या आवश्यक्ता है। अब हम जो नया आवश्यक बनानेका कारण बतलाते हैं। आवश्यक सूत्रमें दंसण सुद्धिके लिये जिन प्रतिमाको वदन या काउसग्गका अधिकार आता है उन्हींको छोडनेके लिये जो आनद श्रावकने व्रत उच्चारण कियाथा वह अलावा आवश्यकमें रख दिया गया है। इसीसे सिद्ध हुवा कि कृतव्य टोलामें आवश्यक भी कृतव्य है।

(स) आप आवश्यक नया बणाके प्रतिमाका अधिकार नया रखादिया हो तो क्या निश्चय।

(उ) प्रिय मित्रो हमारा आवश्यक सुधर्मा स्वामिसे चला आया है।

(स) क्या प्रमाण।

(उ) अभी जो आवश्यक है जिसकी निर्युक्ति चतुर्दश पूर्वधारी भद्रबाहु स्वामिकी रची हुइ उपस्थित है सो भी तुमहारे मतके जब पहलीकी लिखी हुई पडत तयार है देखलो।

इत्यादि शास्त्रोंसे सिद्ध हूवा कि सुत्र पचांगी मानने-

वाले ही भगवानकी आज्ञाके आराधक है आपको भी भगवानकी आज्ञाका आराधक बनना हो तो पंचांगीको बहुमान देके स्वीकार करो।

(स) पंचांगी हमारेको स्वीकार है परन्तु जिन प्रतिमाकी द्रव्य पूजाके अधिकारमें कुछ संशय होता है सो हम प्रथम ही आपसे कहाथा कि मूल सुत्रमें द्रव्य पूजाकी विधि हो तो बतलाओ।

(उ) लो सुनो सूत्र रायप्रश्रेणीमें सतरह प्रकारकी पूजा अच्छी तरहसे वर्णन करा है।

(स) वो देवताओंके विषयमें वर्णन है परन्तु मनुष्य श्रावकोंके विषयमें वर्णन हो तो बतलाओ।

(उ) सूत्र ज्ञाताजी अ० १६ मे में द्रव्य पूजाका अधिकार द्रोपदी महासतिका चला है।

(स) वहां तो सूर्याभकी भोलावन है।

(उ) भोलावनका स्पष्टीकरण प्रथम ही द्रोपदीजीके अधिकारमें लिख आये है सो देखलो भगवानने मुखारविंदसे आज्ञा किया है अब स्वाकार करो कि जिन प्रतिमा अरिहंतोंकी है वंदनीय पूजनीय है और वांदवा पूजवाकी विधि है।

॥इतिश्री जिनप्रातिमावंदनपूजन विद्धिनाम तृतीय प्रश्नोत्तरं समाप्तम् इति॥

॥ अथ चतुर्थ प्रश्न प्रारंभ ॥

———०———

॥ दोहा ॥

वंदन पूजन प्रतिमा फल, कयो, सूत्र मंझार ।
सावधान थइ सांभलो आगमके अनुसार ॥२॥

(स) मान लिया जावे कि जिन प्रतिमा शाश्वति अशाश्वति अरिहंतोकी है वो वंदनीक पूजनीक है विधि भी है तदपि द्रव्य पुजामें अवश्य छकायाके जीवकी हिंसा होती है हिंसामें भगवानकी आज्ञा कभी भी नहीं है इसीसे पूजामें धर्म मानना ये बात हमारे समजमें नही आती है।

(उ) अहो तत्व खोजी तत्व गवेसी तत्व रसिको मैं आपको धन्यवाद देताहुं कि, ऐसे तत्त्व रसिकोंके लिये कोइ मोक्ष दुर नहीं है अपितु बहुतसी निकट है यदि आप द्रव्य पूजामें हिंसा कहते हो सो विचार करो परन्तु विधिवाद यतनासे प्रवृत्ति करनेमे हिंसा हो उसीको सरूप हिंसा शुभबंद आगममें आज्ञा किया है।

(स) सूत्र ठाणांग २ में दो प्रकारका धर्म कहा है सूत्र-धर्म चारित्र धर्म और द्रव्य पूजामें कौनसा धर्म होता है।

[उ] ये दोय प्रकारके धर्म कहे हैं सो दूसरे ठाणेकी अपेक्षा है परन्तु इसीसे पूजाका निषेध नहीं है देखो ठंणे ३ ज्ञान दर्शन चारित्र तीन कहाहै और आप एसे कहोगे तो कहो जमाली सूत्र पढाथा और चारित्रभी पालताथा।

(स) जमाली पूर्वोक्त काम करताथा परन्तु भगवानकी आज्ञाका विरादकथा।

(व) प्रिय मित्रो जब धर्म तो भगवानकी आज्ञामें रहा।

[स] भगवानने कब कहा कि तुम हमको वंदो पुजा करो।

(उ) यह कहना अण पढाका है देखो सूत्र रायप्रश्रेणी-जीमें सूर्याभ देवताका अभियोगिक देवता भगवानसे कहते हुए कि हम सूर्याभके आभियोगिक देव आपको वंदना नम-स्कार यावत् देवताका चैत्यकी परे उपासनाकरे भगवानने आज्ञा दिया जीय मेयं देवायावत् पूर्व तीर्थंकर आज्ञा दीहै मैंभी आज्ञा देताहुं ईसका पाठ दूसरे प्रश्नमे लिखाहै सो देखलेना विचा-रिये कि प्रभु मुखारविंदसे आज्ञा दी है नेत्र खोलकर देखो

और सूत्र उत्तराध्ययन उ०१३ चित मुनि ब्रह्मदत्त चक्रवृ-
त्तिको कहा है ।

(अज्जाहिं कम्माहिं करह राया)

देखो आर्य कर्म्मकी आज्ञा दी है भगवानकी भक्ति है सो आर्य है कि अनार्य सो विचारो जरा जैन सिद्धान्तोंकी शैलीको समजो भगवान साधुके लिये ऐसा माथाका [पाठ)

अच्चणं रयणं चेव,वंदणं पूयणं तव्हा, इड्ढी सक्कार सम्माणं, मणसावि न पत्थए)

इस पाठमें लिखा है साधु वंदणा पुजा शुद्धि सत्कार मन करके नही चाहना अब आंख मीचके विचार करो कि पुर्वोक्त काम मन करके इच्छा नहीं करे तदपि करणेवालेको धर्म होता है या नहीं अपितु निश्चय होता है ।

[स] हमारे गुरुजी कहते हैं कि प्रतिमा पुजनेमें धर्म माने तो मिथ्यात्व लागे ।

[उ] यह कहना मिथ्यात्वका उदय है विचारो मिथ्यात्व आनेका कारण कौनसा है ।

[स] देव गुरु धर्मको विपरीत मानना इसीको मिथ्यात्व कहा जाता है ।

(उ) विचारो प्रतिमा पूजनेवालेको पूर्वोक्त तत्वकी विपर्यय होता है या विशुद्ध तत्व होता है।

(स)आपके कहनेसे तो प्रतिमा नहीं पूजे तो साधु श्रावकको प्रायश्चित होना चाहिये।

(उ) हां इसमें क्या संदेह है।

(स) कहो कौनसे सूत्रमें लिखा है।

(उ) महा कल्पसूत्रमें प्रायश्चित कहा है सो हम दुसरे प्रश्नमें लिख आये हैं।

(स) यह वत्तीस सूत्रमें नहीं है।

(उ) यह सूत्र नंदीसूत्रमें मानना कहा है सो हम त्रीजे प्रश्नमें लिख आये है जो प्रतिमाका पूजना जिन आगमसे विरुद्ध हो तो तुम प्रायश्चित वतलाओ।

(स) प्रतिमा पूजनेसे कौन मुक्ति गया और तप संयमसे कर्म क्षय कर के वहुतसे जीव मोक्षको गये सो लेख ठाम ठाम सुत्रोंमें है।

(उ) जीतनें जीव मोक्षमे गया है और जावेगा वो सर्व प्रतिमा पुजी है ऐ वात सुत्रां मे है अव पूजा आप नहीं मानते हो परन्तु श्रावकपणा पालके कौन जीव मुक्तिमे गया सो वतलाओ।

(स) श्रावकपणा पालनेसे परंपरा मोक्ष होती है आनंदादिक जायेगे।

(उ) जैसे ही परपरा मोक्ष जिन प्रतिमा पूजनेसे होती है परन्तु जिन प्रतिमा नहीं मानना रूप मिथ्या सेवन करनेवालोंका तप सयम निष्फल है, समजनेका इतना ही कि प्रथम समकितकी करणी पिछे चारित्रकी करणी याने दोनो करणियोंमे मोक्ष होति है।

[स] ऐसा कोइ बत्तीस सुत्रोंमें कहा है कि जिन प्रतिमा पूजना मोक्षका कारण है।

(उ) हां बत्तीस सूत्रके मूल पाठमें, ऐसा लेख है सो सुनो सूत्र रायप्रश्रेणीमें।

तएणं तस्स सूर्याभस्स देवस्स पंचविहाए-पज्जत्तिए पज्जत्ति भावंगयस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिये पत्थिए मणोगए संकप्पे समुपज्जित्था किमे पुव्वं करणिज्जं किं पच्छा करणिज्जं किंमेपुव्विसेयं किंमे पच्छासेयं किंमेपुव्विं पच्छाहियाए सुहाए खमाए णिसेसाए आणु

गामियत्ताए अविस्सइ तएणं तस्स सुयाभस्स देवस्स समाणिय परिसोववन्नागादेवा सुरियाभ-स्स, इमेयारूवं अज्झत्थियं समुप्पन्नं समभिजाणित्ता जेणेव सुरियाभदेवे तेणेव उवागच्छंती सुरियाभदेवं करयल परिगाहियं दसनहं सिरसा-वत्तं मच्छएं अंजली कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ वद्धावेइत्ता एवंवयासी एवंखलु देवाणुप्पियाणं सूरियाभेविमाणे सिद्धायत्तेणं अठसयंजिण पडि-माणं जिणुस्सेहप्पमाणं मेत्ताणं सन्निखित्ताणं चि-ठइ सभाएणं सुहम्माएणं माणवगए चेइयखंभे वइरामएसु गोलवट्ट समुग्गएसु बहुइउ जिणस्स-कहाउ संनिखित्ताऊ चिट्ठंति ताऊणं देवाणुप्पि-याणं अंन्नेतंच बहुणं वेमाणियाणं देवाणय देवी-णय अच्चणिज्जाऊ जावपज्जुवासाणि ज्जाऊ तएयणं देवाणुप्पिएयाणं पुव्विकरणिज्जं एयन्नं देवाणुप्पि-

याणं पच्छाकरणिज्जं एयणं देवाणुप्पियाणं पुविं पच्छावि, हियाए सुहाए खमाए निस्सेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ इति रायपसेणी उपांगे)

अर्थ—उस समय सूर्याभदेव पंचपर्याप्ति संपूर्ण बांदते ही ऐसा विचार उत्पन्न हुवा कि मेरेको प्रथम क्या करणा पिछे क्या करणा प्रथम कल्याणका कारण क्या है और पिछें कल्याणका कारण क्या है प्रथम और पिछे मुजे हितका कारण सुखका कारण कल्याणका कारण मोक्षका कारण और भव भव साथ चलणेवाली क्रिया कौनसी है। उस वखत में सुर्याभदेवका सामानिक और पर पदाका देवता हाथ जोडके दस नख मस्तकपर चढाके जय विजय बोलके ऐसा कहते हुए निश्चे अहो देवाणप्रिय सूर्याभ विमानमें सिद्धायतन है जिसमें जिन प्रतिमा १०८ जिनेंद्र- देवोंके शरीर प्रमाणे याने जघन्य ७ हाथ उत्कृष्ट ५०० धनुपकी विराजमान है और सुधर्म सभामा एक चैत्य स्थंभ वज्रमयी गोळ डबामें जिनेश्वरकी डाढा है सो देवानुप्रिय आपको क्या अनेरा बहुत विमानिक देवता देवीयांको पखाल कराना योग्य है यावत् सेवा भक्ति करवा योग्य यह करणी प्रथम

करणे योग्य है पिछे करणे योग्य है पहिला पिछे हितका कारण है सुखका कारण है कल्याणका कारण है मोक्षका कारण है भव भवमें साथ चलनेवाली है।

इस पाठामें जिन प्रतिमा पूजणेसे परंपरा मोक्षकी करणी कही है।

(स) येतो देवताओं का अधिकार है।

(उ) देवताको कौनसा गुण ठाणा है।

(स) देवताको ४ गुण ठाणा होता है जिसमें सूर्याभ-देवताको चोथा गुण ठाणा है।

(उ) श्रावकोंमें कौनसा गुण ठाणा है।

[स] श्रावकमें पांचमा गुण ठाणा है।

[उ] साधुमें कौनसा गुण ठाणा है।

(स) छट्टासे लगाके चौदमा गुण ठाणा है।

(उ) चौथा गुण ठाणेसे चौदमा गुणठाणातक श्रद्धा एक है या भिन्न है।

(स) हां चौथेसे चौदमा तक श्रद्धा एक है।

(उ) सो चौथेसे चौदमा गुण ठाणाकी श्रद्धा एक हे तो फिर देवताकी करणीमें केवली भगवान् तो धर्म मोक्षका

कारण समजते है तुम हट किस बातका करते हो कि यह करणी देवताओंकी है।

(स) यां पुव्वा पिच्छा पाठ है सोइस लोकके वास्ते है उवाई सूत्रमें वदनाके अधिकारमें (पचा) अैसा शब्द सो परलोक वाचक है यांहां देवता अपने मगलीकके लिये पूजी है।

(उ) मोहनिद्रा को दूर कर देखो इस लोकके लियो जो अरिहंतोंकी प्रतिमा पूजे जिसको लोकोत्तर मिथ्यात्व लगता है और सूर्याभदेव प्रतिमा पूजके वीर प्रभुके पास आके पूछा सो (पाट)

अहन्नंभन्ते सूरियाभेदेवेकिं भवसिद्धिएकिं अभवसिद्धिए सम्मदिठी मिरथादिठी परित्तसंसारिए अणंत संसारिए सुलंबोहिए दुलभंवोहिए अराह विराहा चरिमे अचरिमे सूरियाभाए समणे भगवं महावीरे सूरियाभंदेवं एवंवदासी सूरियाभा, तुमणं भव सिद्धिएणो०जाव चरिमे नो अचरिमे।

इस पाठमें लिखा है कि सूर्याभदेवता ने पूछाकि में भवीहुकि अभवि सपदृष्टि मिथ्यादृष्टि परित्तसंसारी अनन्तसंसारी सुलभबोधी दुर्लभबोधी आराधक विराधक चर्महुया अचर्महु जब भगवानने आज्ञाकिया कितुम भवी सम्यक्दृष्टि परित्तसंसारी सुलभबोधी अराधिक चरम है विचारो पुजा करनेसे अराधक कहा है।

(स) अराधिक पुर्वभवकी अपेक्षासे कहा है।

(ज) याहां पुर्व भवकी पृछा नहीं है अैस कहोगे तो भगवति स० ३ उ० इशान इन्द्र ने भी बारा बोल पुछा है जिसमें छ बोल प्रशस्त फरमाये है जो पुर्व भव आश्रय कहोगे तो पुर्व भवमें तामली बाल तपस्वी था इसीसे उसी भवका कथन समजणा चाहिये।

(स) पच्छाशब्दका अर्थ इस लोकका होता है।

(ज) पेच्चा पच्छा एकार्थी है किसी व्याकरण जांणने वालेके पास शब्दका ज्ञान करो।

(स) व्याकरण क्या करै शब्दसे विदित होता है।

(ज) शब्दसे कैसे मालुम हुवा।

(स) [पेच्चा] तो परभव [पच्छा] यह भव।

[ज] यह कौनसे। पंडितोंके पास शब्दज्ञान धारण

किया है देखो सुत्रमें [एगट्ठा नाणा घोषा नाणा वञ्जणा] कहा है और शब्दमें फरक देखके कहेते होतो सूत्र दशवैकालिक अ०५ (पाणं) अ०६ उद्गं अ०८ मा (द्ग) ये शब्द तीन अलग है और अर्थ एक जलका है अब सरीखे शब्दका भी अलग अर्थ होता है ।

१ दस० अ० ९ (वण) गुण किर्ति ।

२ सुत्रोंमें (वण्णउ) वरण न करणे योग्य ।

३ भ० स० २० उ०५ (वण्ण) श्वेत कृष्णा निलादि इन सरीखे शब्दोंका भी भिन्नार्थ होता है प्रिय मित्रो जरा कोश वगैरहका ज्ञान उत्पादन करो ।

(स) पच्छा शब्दका अर्थ हमारे गुरूजी इस लोगका करते हैं ।

[उ] पच्छा शब्दका अर्थ परलोक होता है सो देखो [पाठ]

अम्मतायमए भोगा भुत्ता विसफलोवमा पच्छा कडुअविवागा अणुवंध दुहावहा ।

उत्तराध्ययन अ० १९ का पाठ है इस पाठमें मृगापुत्रका माता पिता भोगकी आमंत्रण की है उसपर मृगापुत्रने

कहा कि काम भोग आगले भवमें कडवा फलके देणवाला है यह पच्छा शब्दका अर्थ आगले भवका वाचक है और आचारांग सूत्रमें एसा पाठ है।

जस्सनच्छि पुरापच्छा मध्ये तस्स काउसिया

इस पाठमें पच्छा शब्द आगले भवका वाचक है और ज्ञाताजी सुत्रमें नंदन मणियारको जीव हेडकाने एसा कहा (पुव्वामए) यह पूर्व भव कहा इसीसे सिद्ध हुवा कि पिच्छा शब्द आगले भवका वाचक कहा है देखा सुत्रमें किसी जगह पेच्चा शब्द है किसी जगा (परभविए) ऐसा शब्द है तात्पर्य एक है।

[स] आप पुजाके अधिकारमें (निसेस्साए) शब्दका अर्थ मोक्ष करते हो सो ठीक नहीं है कारण भगवति स० २ ह० १ में खंदिकके अलावे भी [निसेस्सए] कहा है वाहां भी आपको मोक्ष मानना पडेगा परन्तु वहां धनका अधिकार है धनसे मोक्ष नहीं होता है।

[उ] मित्रों वहां तो ऐसा पाठ है[से जहा नामए] यह ओपमा दृष्टांत कहा है खंदिक कहता है कि मेरा शरीररूप घर कषायरूप अग्निसे जल रहा है जिसीसे रत्नत्रयरूप

धन निकाले वो मोक्षका कारण है ऐसा समजना चाहिये।

[स] भगवती सूत्र स० [१५] उ राफडाके धनके अधि-
कारमें भी [निसेस्सए] शब्द है।

[उ] वहां गोसाल आनद साधुको कल्पित दृष्टांत सुना-
या है और आप लोग केवल प्रतिमा पूजाके द्वेषसे ही अर्थका
अनर्थ करते हो आगमको देखो सात क्षेत्रमें धन खरचनेसे
भी मोक्ष बतलाई है।

[स] कौनसा सूत्रमें कहा है कि सात क्षेत्रमें धन खरच-
नेसे मोक्ष होती है।

[उ] सुत्र नदीमे [भत्त पचक्खाण पइन्ना] का नाम है
इसमें ऐसा पाठ है।

अनियाणोदारमणो हरिसवस विसट्ट कंचुक-
रालो पूएई गुरु संघ साहम्मी अमाइ भत्तिए
॥३०॥ निअदव्वमउव्वजिणिंद भवण जिणबिंब
वरपइठासु विअरइ पसत्थ पुत्थप सुतित्थ ति-
त्थयर पूआसु ॥३१॥

तथा दांनकुलिकमें सात क्षेत्र धन खरचणा मोक्ष फलका देनेवाला है सो [पाठ]

जिण भवण बिंब पुत्थय संघसरुवे सुसत्त खित्तेसु ववित्र्अं धणंपि जायइ सिवफ लय महो अणंत गुण ।

इस पाठमे लिखा है कि जिनमंदिर जिन प्रतिमा ज्ञान साधु साध्वी श्रावक श्राविका इन सात क्षेत्रमें धन खरचणेकी जिन आज्ञा है ।

[स] धनको ठाणायंग सुत्रमें परिग्रहा कहा है धन अनर्थ का हेतु है इसीसे मोक्ष कभी नहीं होता ।

[उ] परिग्रहा कहते हो सो [मुछा परिग्रहो वुत्तो] यहां मूर्छाको परिग्रह कहा है और सात क्षेत्र धन खरचना सोतो मूर्छा दूर करना है सो प्रगटही धर्म मालुम होता है जब आप लोग उपदेश करते हो [सुकृत करलेरे मूजी थारी धरी रहे धन पुजी] यह उपदेश किस वास्ते करते हो ।

[स] हम तो धन खरचणेसे कभी मोक्ष नहीं मानते और धन तो अनर्थका मुल है ।

[उ] वारे मित्रो तुमको क्या कोइ तेरेपंथियोंका स्पर्श

हुआ मालुम होता है लेकिन नीचे लिखे कार्योंमें आप लोग धन खरचके प्रसन्न होते हो।

१ जैन टेनकालेजमें निनि या धार्मीक ज्ञान पढनेवाले को धनमें सहायता देते हो इसमें ससारकी वृद्धि समजते हो या हानी समजते हो।

२ मुनिको ज्ञान पढानेवाले पडितको सहायता करते हो उसमे धर्म समजते हो या नहीं।

३ मरते हूए 'गो' दलको रुपया देके बचाना इसमें धर्म समजते हो या नहीं।

४ जनमेरमें धर्म पेटी रखी है उसीके लिये पुकार करते हो कि इस पेटीमें पेसा देनेवाला महान् लाभ उपार्जन करता है।

५ धर्मज्ञान पुस्तक लिखाना छपाना।

६ मरते हुए बकरे रुपया देके छुडाना।

७ साधर्मी भाइको धर्म सहायता देना या स्वामिवत्सल करना श्रावकोंवत्।

८ धर्मशाला स्थानक श्रावकोंके धर्म ध्यानके लिये मोल मकानादिक देना।

९ पुंजणी नकरवाली वेटकें वगरह धर्म उपगर्णे मोल लेके साधर्मी भाइयोंको देना ।

१० दीक्षा महोत्सव तथा साधुका निर्वाण महोत्सव करना ।

११ दया पालके एकसो या २०० जीवोंको—जिणाको विस पचीस रुपयोंकी मिठाइ खीलानी ।

१२ साधु साध्वीके रोगादिका परिश्रमको मिटानेके लिये डाकटर, वैद्य, हकीम आदिको सहायता देना ।

इत्यादि बहुतसे बातोंमें धन खरचनेसे संसारकी वृद्धि होती है या हानी होती है? जो संसारकी हानी होतो हमारा सात क्षेत्रमें धन खरचाना सिद्ध हुवा, जो कि पूर्वोक्त बोलसे संसारकी वृद्धि मानते हो प्रत्यक्ष प्रमाणमें पूर्वोक्त बोल आप-लोग कर रहे हो सो आपको संसार वृद्धिका कारण करना आपकी श्रद्धासे उचित नहीं है समझनेका इताना ही हैं कि शुभ क्षेत्रसे शुभ गति होती है ।

(स) तो आप लोग जहांपर (निस्सेसाय) शब्द आते हैं वहांपर मोक्षका अर्थ करते हो सो किस आधारसे करतेहो

[उ] प्रिय मित्रो हम जो अर्थ करते है वो पूर्वाचार्योंके

किया हुवा हैं आप लोग उस अर्थको पलटानेके लिये भिन्न भिन्न अर्थ करते हो देखो पूजामें निस्सेसाय शब्दका अर्थ।

१ समकितसार में जेठामलजी २ ज्ञान दीपकामें पार्वतीजी ३ सत्यार्थसागरमे रेषश्रीलालजी राजजी ४ रतलामके नव प्रश्नमें ईनिके सिवाय और कोइ मनमाना वैसाही अर्थ करदेते हैं कारण सुत्रमें लिखा हुआ नहीं माननेसे भिन्न भिन्न अर्थ करते है. प्रिय मित्रो सनातन जैनियोंमे बहुत आचार्य हुवे हैं लेकिन सबकी मन्यता पुर्वाचार्योंके अर्थ पर एकही हे अब निसेस या शब्द सुत्रोंमे है सो देखो।

१ सूत्र उववाई कोणक राजाके वदनाका अधिकारमें (निसेसा यपा) शब्द है।

२ भगवति स० १२ उ०२ में जेवंतीबाइ (नि)
३ सुत्र आचारग में पच महाव्रत पालणा (नि)
४ ठां० ६ में [नि]
५ दशाश्रुतस्कन्ध अ० ४ (नि)
६ दशा० अ० १० (नि) ७ ठां १० [नि]
८ भ० २-१ [नि] ९ भ० ३-१ [नि]
१० राय० वंदनाके अधिकारे में (नि)

११ रा० पूजाके अधिकारमे (नि)

१२ जी० विजय पोलि यु० [नि]

१३ भ० २-५ तुंगियानगरीका श्रावक [नि]

१४ भ० ३-१ इशान इंद्र [नि]

१५ भ० १३-७ उदाईराजा [नि]

१६ आ० प्रतिक्रमणामें [नि]

और भगवती मे उदाईराजाः शंकपुष्कली इसीभद्र-प-
हुत्रादि।

२६ नि० द० ३ चइया आदि दश देव (नि)

इत्यादि बहुतसे वोलोंमें तप संयम वंदनजिन प्रतिमा पु-
जामें भगवान्ने मोक्षका मार्ग फरमाया है।

(स) यह देवतोकी करणी है श्रावककी हो तो बताओ

[उ] क्या देवताकी करणीमें आप लाभ नहीं समझते
हो देखो देवता भगवान्के समौसरण रचते हैं व्याख्यान सु-
नते है पंच कल्याण करते हैं संघका उपसर्ग दुर करते हैं जिन
प्रतिमा पूजके नमोथोणुं देते हैं बतलाओ पुर्वोक्त कार्योमें लाभ
हैं या नहीं।

[स] देवताको अधर्मी[१] सुत्रमें[२] कहा है।

(उ) यह आपके दुर्लभ बोधित्व उपार्जन करनेका

अवश्यही कारण है देखो ठाणांग सुत्रठाणा ५ में कहा है जीव पांच बोलसे दुर्लभ बोधित्व उपार्जन करता है अरिहंतोंका अवगुणवाद बोलनेसे और अरिहत प्ररूपित धर्मका अवगुणवाद बोलनेसे आचार्य उपाध्यायका अवगुणवाद बोलनेसे चार सिंघका अवगुणवाद बोलनेसे और पांचमा (विवि कतव, बभचेराणं देवाण अवण्ण वयमाणे ।)

याने देवताका अवगुणवाद बोले तो जीव दुर्लभ बोधित्व उपार्जन करता है।

इस बातको याद रखणा भगवानने तो मनुष्यकी अपेक्षा देवताको बढके गिणा है उसीका गुणानुवाद करता ही जीव सुलभ बोधित्व उपार्जन करता है तो उसकी करणीका कहना ही क्या।

[प्र] देवताकी करणी तो हम स्वीकार करतेहै परन्तु किसी श्रावकने जिन प्रतिमा पूजके मोक्षका कारण कहा हो तो बतलाओ सो हम स्वीकार करेंगे।

[उ] प्रथम ही दूसरे प्रश्नमें हम सविस्तार लिख आये है सो देख लेना, आनंदादि श्रावक द्रोपदी आदि श्राविका

जंघाचारणादि मुनि श्रीजिन प्रतिमा वांद पूजके अपना जन्म सफल किया है विशेष देखना हो तो सुत्र ज्ञाताजी अ० ८ मामे अरिहंतोकी भक्ति करनेसे तिर्थंकर गोत्र बंधता है सोमेघ-रथ राजा रावण राजा आदि जिनेश्वर भगवानकी त्रिकाल पूजा भक्तिसे तिर्थंकर गोत्र उपार्जन किया है तथा सूत्र उत्त-राध्ययनजी अ० २९ मा चैत्यवंदनका फल यावत् मोक्ष कहा है सो हम दूसरे प्रश्नमें लिख आये हैं और आप देवताओंकी करणी स्वीकार की तो अब विचारो कि देवताओंकी और श्रावकोंकी श्रद्धा एक है या भिन्न है इसीसे देवता और श्रावकोंको फल सदृश ही होता है।

[स] श्रद्धा तो एक ही है,

[उ] फिर आपको भ्रम किस बातका है।

[स] आपका कहना यथार्थ हमारे समजमें आ गया है परन्तु द्रव्य पुजामें हिंसा होती है यह बात हमारे समजमें नहीं आइ जिनेंद्र देवोने जगे जगे 'अहिंसा धर्म' कहा है।

(उ) प्रिय मित्रो प्रथम तो आप सनातन जैन मुनियों-की भक्ति करके हिंसा अहिंसा सावद्य निर्वद्यका स्वरूपको

श्रवण करके समजो जिसीसे आपको ज्ञात हो।

(स) हम आपसे ही पुछते हैं कि सावद्य करणीमें किस जिनद्र देवने धर्म अथवा आज्ञा फरमाइ है तो सूत्र पाठस बतलाओ।

[उ] सूत्र दशवैकालिकमें वीर प्रभुने ऐसा आदेश दिया है सो [पाठ]

जयंचरे जयंचिठे जयंमासे जयंसए जयंभुजंतो भासंतो पावंकम्मंनवंधइ ।

इस पाठमे लिखा है कि यत्नासे क्रिया करें तो पापकर्म नहीं बधे विचार करो अब वीर प्रभु फरमाते हैं कि पाप कर्म न बधे और आप हिंसा हिंसा पुकारते हो परन्तु जब आप तेरहपथियोंसे चर्चा करते हो तब आपकी हिंसा कहां कहां चली जाति है वहां शुभ योग करुणा प्रणामको अगाडी लेके ' सनातन जैनियोंका सरण लेते हो और जब जिन प्रतिमा के अधिकार आते हैं तब तेरहपथीयो के बचेवन बेठ जाते हो परन्तु सुनो १ सूत्र उवाईमे कौणिक राजाने नगरी सिणगारी सेन्या लेके भगवानको वदनेको आयाथा

कहो यह काम कौणिक राजाके घरका है या जिन शासनकी उन्नतिका है ?

२ ज्ञाता सुत्रमें सुबिद्धि प्रधानने राजाको धर्म प्रवृत्ति मेलाणेके लिये खाईका पाणी अच्छा किया यह काम उसीके घरकाथा के धर्मके लिये ।

३ ज्ञताजी सूत्र अ० ८ मल्लीनाथ प्रभुने मोहनघर करवा या जिसमें पृथ्वीआदि जिवोकी हिंसा हुई यह काम केवल छराजी मित्रोंको प्रतिबोध के लियेही कियाथा धर्मके लिये

४ मल्लीनाथ प्रभु एक एक ग्रास पूतली में डालनेसे असंख्या जंतु उत्पन्न हुवे यह कामभी केवल धर्मके लियेही कियाथा ।

५ चित सार्थी माया करके रथको फेराया सो प्रदेसी राजाको धर्म प्रवृत्ति करणे के लिये यह काम केवल धर्म के लियेही था ।

६ प्रदेशी राजा नास्तिकमतिथा परन्तु केशी मुनिकी उदार वाणी श्रवण करते ही दिलमें उदारता लाके दानशाळा करानेका केशी मुनिसे कहा परन्तु मुनिको मनाइ न की ।

७ प्रदेशी राजाने मुनिसे कहा मैं कल सब परिवारको लेके वदनेको आउगा तो भी मुनिने मना नहीं किया (तर्क) धर्म होता तो मुनि आदेश क्यों नहीं दिया [समाधान] उवाईसूत्र श्रुशषा विनय के दश भेदमें गुरू वदन कहा है तथा उतराध्यन अ० २९ में श्रुशषा विनयका फल यावत् मोक्ष कहा है वहां भी मुनिने वहूत लाभ समजके ना नहीं कहा है ।

८ उवाई सुत्रमें कोर्णांक राजा भगवानकी प्रतिदिन खबर मगाते थे कहो यह काम धर्मके लिये था या कोर्णांकके घरका था विचारो ।

९ सुर्याभ देवताने नाटक किया वहां पाठ भक्ति पूर्वका है भक्तिका फल उतराध्यन अ० २९ में यावत् मोक्ष कहा है

१० सूर्याभके अभियोगिक देवताओने एक जोजनका माडला समोसरणमें किया जल पुष्प वृष्टि करी यह काम के केवल भक्तिका ही है ।

११ ऐसे ही शक्रेंद्र १२ इशानेंद्र १३ चमरेंद्र १४ चंद्रमा १५ सूर्य १६ शुक्रादि देवता १७श्रीदेवी १८हृदेवी धृतिदेवी कतिदेवी बहु पुत्रिका आदि देवीयां नाटकादि भक्ति की ।

१९ जंबुद्वीप पनान्ति तिर्थंकरोंका जन्ममहोत्सव या दीक्षामहोत्सव केवलमहोत्सव भक्तिके लिये करते हैं।

२० इसी सूत्रमें निर्वाण महोत्सव या तीन थुंभ कराई सो भक्तिके लिये फल यावत् मोक्ष।

२१ इसी सूत्रमें भगवानकी डाढां जिन भक्ति तथा धर्म के लिये लेते है मूल पाठ पैंली लिखा है।

२२ श्रेणिक राजाने अमरपडा सब नगरमें बजाया याने इस काममें कितनी हिंसा है।

२३ इसी राजाने पाट पाटलाकी आज्ञा देणेको जगह जगह आदमियोंको भेजे, जाने आनेमें कितनी हिंसा हूइ। परन्तु फल मोक्ष कहा है।

२४ कृष्ण महाराजने कहा कि दिक्षा लेणेवालेको मैं सहायता दुंगा इसमें भी अवश्य हिंसा है परन्तु फल मोक्ष कहा है।

२५ दशार्णभद्र राजा कितना आडंबरसे भगवानको वंदनेकोगयाथा अवश्य हिंसाहै परंतु उस कार्यका फल मोक्षहै

२६ पुष्कली श्रावक असँनादिक च्यारआहार साधर्मी भाइयोंकेलिये निपजायाथा उसीमें छ कायाकी हिंसाहै परन्तु साधर्मीकी भक्तिका फल यावत् मोक्ष है ।

२७ उदाई राजा भगवानको वदनेको गया ।

२८ द्रोपदी महासतिने जिनमतिमा पूजी नमोत्थूणंदिया

२९ विजय पोलिया प्रतिमा पूजी नमोत्थूणं दिया इसका फल जीवाभिगम सूत्रमें यावत् मोक्ष कहा है ।

३० सुर्याभ देवता प्रतिमा पूजी फल मोक्ष है ।

३१ शक्रेंद्र ईशानेंद्रादि बहुत देवताओंने प्रतिमा पूजके अपना जन्म सफल किया है ।

३२ भगवति स० ८ उ० ६ श्रावक साधुको अफासु [जीव सहित] अणेषणीय [दोष सहित] आहार पाणी देनेमे अल्प पाप बहूत निर्जरा कहा है ।

इत्यादिक बहुत बोल सुत्रमें चला है जिसमें अवश्य हिंसा होती है उनिको सरुप हिंसा कहते है परन्तु यत्ना पूर्वक क्रिया करणेसे पाप कर्म नहीं बधता है सो सुत्र पाठ हम पहिले लिख आये है सो देख लेना ।

[स] सुत्र प्रश्नव्याकरणमें पृथ्वी आदि जीवकी हिंसा करनेसे मंद बुद्धि और नरक गामी कहा है वहां भी चैत्य स्तूपभी सामेल है ।

[उ] प्रिय मित्रों जैन सिद्धांतोकी शैलीको समजो प्रश्न व्याकरणमें अश्रवका कथन है सो अनार्य लोगोंके वास्ते है ऐसे जो आप कहोगे तो आपको अनार्य मंद बुद्धि नरकगामि अवश्य बनना पडेगा कारण प्रश्न व्याकरणमें लिखा हुवा है कि गृह कार्यके लिये घटीउखल मुशल आदि सामग्रो अवश्य ही होती है यहां धर्म-प्रवृत्ति कार्यमें भी पूर्वोक्त जीवोंकी हिंसा होती है क्या उत्तर दोगे प्रिय मित्रो आप संपूर्ण आश्रवद्वारके संबधको श्रवण करो जिससे ठीक ठीक मालमहो ।

[स] आप ही आज्ञा करो । फरमाओ

[उ] यहांपर संपूर्ण लिखनेसे ग्रंथ बढ जानेके भयसे नहीं लिखा है देखना होतो हमारे पास अभी उपस्थित है आपका भ्रमजालमे उतारनेके लिये थोडासा संबंध बतला देते है परन्तु अगाडी यह काम करनेवाला अनार्य पुरुष है वो संबंध आपको नहीं बतलाते इसी लिये प्रश्नव्याकरणका पाठ लिखता हूं सो देखो ।

एवमाइ सत्ते सत्तपरिवज्जिए उवहणत्तिकट्ट मु-
ढादारूण मतीकोहामाणा माया लोहाहासरती
अरती सोयवे दत्थी जीयका मत्थधम्मदेउं लवसा
अवसा अट्ठाए अणट्ठाएय तसेपाणे थावरेयहिंसं-
ति मंदवुद्धी सवसाहणंति अवसाहणंति सवसा
अवसा दुहूओहणंति अट्ठाएहणंति अणाट्ठाहणं-
तिअगठा अठा दुइओहणंति हस्साहणंति वेरा-
हणंति रतियहणंति हासावेरा रतियहणंति कुद्धा
हणंति लुद्धाहणंति सुद्धाहणंति कुद्धा लुद्धा सुद्धा
हणंति अत्थाहणंति धम्माहणंति कम्माहणंति
अत्था धम्मा कमाहणंति कयरेजेते सोयरियाण-
मच्छबंधासाउणया वाहा कूरकम्मा वाऊरिया दी-
विता बंगपन्नओगतप्पगल जालवीवी रत्तणायसउ-
भवग्गुरा कुंडी छेलिहत्था हरियमाउणियाय वी-
दंसग पासहत्था वणचरगा लुद्धगाय मधुघात

पोतघाया एणीयारापएणीयारा सरदहदीहिय त-
लाग पल्लल परिगालण मलण सोत्तबंधण सलिला
सयसोसगा विसगरस्सय दायगा उत्तणवल्लर दव-
ग्गिणिद्दय पलित्तका कूरकम्मकारी इमेय वहवे
मिलुक्खजाती किंते सग जवण संवर ववर काया-
मरुहा इत्यादि.

भावार्थ—जो एकन्द्रीसे पञ्चेन्द्रियतक जीवाको मारणे-
वाले अधर्मी दारुण जिसका मन मूढ हित अहितको न जान-
नेवाला जिनकी मती हमेंशा अधर्ममें है वे आदमी कैसे है ?
क्रोधी मानी माई लोभी हैं और हास्य रति अरतीसे जीवकी
हिंसा करनेवाले शोकसे भयसे और धर्म याने वेदार्थी अनुष्ठान
वादीओ अपने विषय या धनके लिये या धर्म होमादिकके
अर्थ अपने वसुया दुसरेको वस करनेके लिये अनर्थ त्रस प्राणी
स्थावरकी हिंसा करे वो मंदबुद्धि याने विपरीत बुद्धिवाला स्व

१ देखो सूकर, मृग, मच्चला सकूनी पक्षी आदि जीवोको मार
नेवाला क्रुरकर्मा जिसके हाथमें भाला है स्वयं लोभी है पक्षी आकाशके
उडणेवाले या जंगलके चरणेवाले जानवरोंको मारनेवाला कौन है ।

वस परवस दोनु वस्य या अर्थअनर्थ दोनु प्रकार या हास्यवैर रति हास्यवैरसे जीवको मारणा क्रोधसे लोभसे मारणा या धन उपार्जन करणेके लिये इत्यादि अब हिंसा कोण करता है

उसीका नाम बहुतसे म्लेछ मनुष्य अनार्य देशके रहनेवाले याने सकदेश यवन सवर गब्बर आदि लेके बहुतसे नाम सुत्रमें कहे है इतने देशोके उत्पन्न हुवे अधर्ममें जिनकी मति केवल पापमे ही रही हुई है जलचर थल चर सिंह सर्प या पक्षीको मारके अपनी आजीविका करते है जिसकी अशुभ लेश्या माटा परिणाम हमेस रहता है वो जीव मारता है यह मतलब संक्षेपमे लिखा है अधिक देखणा हो तो सुत्रमें देखो अब विद्वान पुरुषोंको विचार करणा चाहिये कि पूर्वोक्त सूत्रोंमें जिनका नाम चल्या है उसीको भगवानने अनार्य पुरूष कहा है परन्तु हमारे भाई एक मूर्ति नहीं मानने में स्वय मूढ दारूण परिणाम वाले बन पडते है हाय अपसोस २ कितनी भूलकी बात है तात्पर्य यह है कि पहिले अधर्मद्वारमें ५ अधिकार ५ ? हिंसा कैसी है २ हिंसाके ३० नाम है, ३ हिंसा किस कारणसे करे, ४ हिंसा कौन करे उन्हीका नाम कहा है,५ हिंसा करनेवालाका फल नर्कको जाता है हिंसाके करनेवाले को अनार्य देशमें उत्पन्न हुवा म्लेच्छ

आदमी कहा है लेकिन २५॥ आर्य देश माइला एक ही नाम नहीं कहा पन्नवणा पद १ मे आर्य अनार्य देशका वर्णन है सो ही अनार्य प्रश्न व्याकरणमें कहा है बुद्धिमानोंको विचारना चाहिये परन्तु एक प्रतिमा उत्थापनेसे मेरे बंधुओं जैनी नाम धराके जबरदस्ती अधर्मद्वारमें घुसा रहे हो।

जैसे एक [भैंस] उदय कालमें [कराड़] में मुंह घुसा रक्खा था जो कुछ समझतीथी सो उस घुसणेवारेको ही समजतीथी वर्षा कालमें वर्षा होणेसे सुंदर घास हुवा लेकिन उस भैंसने अपना मुंह बाहर नहीं निकाला वीसी विद्वान पुरुषने भैंसको लाठी वगेरहसे मुंह वहार कडाया भैंस सुंदर घास देखकर वडे आनंदमें हुई लाठी मारणेवालेका एसा उपकार समझा इसि दृष्टान्त [भैंस] हठग्राही जीव (कराड़) मीथ्यात्व [वर्षा] ज्ञान [घास] नानाप्रकारके धर्म कार्य सद्गुरु [लाठी] धर्म वचनसे प्रेरणा इस उपनय कारणसे भव्य जीवोंका उद्धार होसक्ता है चर्चा ३

(ख) फेर जैनि पाप करे उसीको हिंसा लगे या नहीं।

(उ) देखो भगवति सूत्रमें लिखा है जैनि किराणा वेचे उसको च्यार क्रिया कही है वोही किराणा अन्य वेचे उसी-

कों पांच क्रिया कही है इसको सोचो।

(स) हम तो हिंसा करणेवालेको इसी आश्वरद्वारमें समजते है।

(उ) प्रिय मित्रो देखो पाच आश्वर द्वार कहा है जिसमें मिथ्यात्वका तो सम दृष्टिके आश्वर है नहीं इसी वास्ते आचारांग सूत्रमें [सम्मत दंसी न करंति पावं] इस पाठमें कहा है कि समदृष्टि पाप न करे और अश्व र द्वारमें चैत्य स्थुळ कहा है सो अनार्यकी अपेक्षा है देखो हिंसाका ३० नाम कहा है और अहिंसाका ६० नाम कहा है जिसमें पूजाका नाम हिंसामें नहीं है परन्तु अहिंसामें ५७ मा नाम है इसीसे सिद्ध हुवा कि जिन प्रतिमा जिन आगममें लिखी हूइ बदनीक पूजनीक है और उस भक्तिका फल मोक्ष ही है।

(स) सूत्र आचारांगमें जन्म मरण मिटानेके लिये हिंसा करे सो बोध बीजका नाश हो।

(उ) हिंसा किसकी।

(स) जीवोंकी।

(उ) किस जीवोंकी।

(स) पृथ्वी अप तेउ वायु वनस्पति त्रस जीवोंकी।

(उ) इसमें एक एक जातिके जीवकी हिंसा करणेसे या सर्व जातके जीवोंकी हिंसा करणेसे बोध बीजका नाश होता है।

(स) छकायाके छ उदेस्सा आचारांगमें कहा है सो हरकोइ एक जीवकी धर्मके वास्ते हिंसा करे तो बोध बीजका नाश होता है।

(उ) अब आपके तो बोध बीजका नास खुब अछि तरेसे होता होगा।

(स) किस वास्ते।

(उ) लो सुनो आप जितनी धर्म क्रिया करते हो उसमें भी जीव हिंसा अवश्य होती है [दृष्टांत] गुरुवंदन व्याख्यान श्रवण करणेको जाना दूर देश साधुजीको वांदणेको जाणा पोसहमे पडलेहण करणा गुरुजीके सांमाने लेणेको जाना इत्यादि वहुत बोलमे अवश्य हिंसा होती है अब कहो आपका बोध बीज कैसा रहेंगा।

[स] आचारांगके पाठको आप कैसे मानते हो।

(उ) लो सुनो आचारांग सूत्र मूल पाठ।

तत्थखलु भगवया परिन्ना पवेइया इमस्स चेव जीवियस्स १ परिवंदण २ मणण ३ पूयणाए ४ जाइ मरण मोयणाए ५ दुरक पडिघायहेउ ६ ⊛ = तंसे अहियाए तंसे अवोहिए—एसखलुगंथे १ एसखलुमोहे २ एसखलुमारे एसखलुनिरए। ४

अर्थ. कर्म बंधके कारणमें निश्चय भगवान ज्ञानसे प्रज्ञा कही जीतव्यके लिये प्रशशाके लिये मानके लिये अपनी पूजा के लिये जन्ममरण मिटानेके लिये दुखः मिटानेके लिये इन पूर्वोक्त ६ कारणसे जीव हिंसा करणवाले को अहितका कारण और मिथ्यात्वका कारण होता है छ कारण ये जो हिंसा करै उसको निश्चय कर्म बंधका कारण है निश्चय अज्ञानका कारण है निश्चय अनत मरणका कारण है निश्चय नरकका कारण है अब विचारो पूर्वोक्त ६ कारणेंये हिंसा करने वालेको मिथ्यात्व या यावत् नरक कहा है सो हिंसा तुमारे साधु या श्रावक करते हैं सो पुर्वोक्त फलकी प्राप्त तुमारे मंतव्यानुस्वार अवश्य होनी चाहिये ।

(स) फिर आप इस पाठका कौनसा अर्थ करते हो ।

(उ) प्रिय मित्रों आप हटवादको छोडके जैन सिद्धांतों पर आधार रक्खोगे तो सत्ययार्थकी प्राप्ति होगी लो पुर्वोचार्योंने अर्थ किया है सो सुनां।

इति दर्शयति जातिमरण मोचनार्थं कर्मादद ते जात्यर्थं कार्त्तिकेय वंदनादिकः क्रिया विधत्तेयः कार्त्तिकेयं वंदते सउत्तम जाति लभते तथा यान कामान् ब्राह्मणे भ्योददाति तथा मरणार्थं पितृपिंडदानादिषु अथवा ममानेन संबंधी व्यापादितः तस्यवैर निर्यातनार्थं वध बंधादौ प्रवर्ते तेयादिवामरणा निवृत्यर्थ मात्मानो दुर्गाद्युपयाचित मजादिना बलिंविधत्त तथा मुक्त्यर्थं अज्ञानावृत चेतसः पंचाग्नि तपोनुष्ठानादिषु प्राण्युपमर्दकाषु प्रवर्त्तमानाः कर्मादद ते यादिंवा जातिमरण यो मोचिनाथ हिंसा दिकाः क्रिया कुर्व। इस वृतिमें पुर्वोक्त आचारांगका पाठ अन्यमत वालोंके अपेक्षा है।

(स) बाजी यह ठीक लगाया क्या सम्यक्ति को पाप नहीं लगता है।

(उ) प्रिय मित्रों समदृष्टिका कर्तव्य अलिप्त है जो कि ऐसा कहोगे तो आपका धर्म क्रिया में प्रवृति है वो केवल धर्म्मके लिये ही करते हो उसमें भी हिंसा अवश्य होती है तो आपके मंतव्यके अनुसार अबोधका कारण होगा भावनेत्रसें

अवलोकन करो जिससे मालुम होगा।

(स) सावद्य करणी में जिनेंद्र देव कभी आज्ञा न दे।

(उ) सावद्य करणी किसको कहते हे।

(स) जिस क्रिया में जीव हिंसाहो उसीको सावद्य करणी कहते हैं।

(उ) अैसा अर्थ किसके पास धारण कियाथा।

(स) जगह जगह सूत्र में लिखा है।

(उ) सूत्र कोई विद्वानोंके पास श्रवण करो जिसीसे आपका भ्रम दूर हो जो केवल हिंसासेही सावद्य क्रिया कहोगे तो लो सुनो सूत्र आचारंगका (पाठ) जे आसवा ते परिसवा २ आचारंग १ । ३ । २ मृगों के लिये साधु जाणता हुआ जूठ बोले (जाणवान् जाणंवयेजा) ३ आचारंग २ । १ । १० लुणवेरीयो होय तो आप खावै सभोगी साधुको देवै (तर्क) यह लुण अचित है (समाधान) सुत्र पाठ (अफासुयं) ये जीव सहित याने सचित हैं।

४ आचारंग २ । ३ । २ साधु खडेमें गिरजावे तो वृक्षादि पकडके बाहर निकले सो (पाठ)

से तत्र पवडमाणे रुक्खाणिवा गुच्छाणिवा

लयाउवा वल्लीउवा तणाणिवा हरियाणिवा अव-लंविय अवलंविय उत्तरिझा ।

इस पाठ में लिखाहे कि वृक्ष प्रमुख पकडके वाहर निकले ।

५ भगवति स० १ उ० २ सुभ योग अणारंभी ।

६ सुयगडांग १ । ८ । २० मृग वास्ते जूठ बोलनेवाले को पाप नहीं लगता है ।

७ सुत्र ठाणाग ठा ५ भगवानकी आज्ञा ।

(णिगांथे णिगांथिं सेयंसिवा पंकंसिवा पणगंसिवा उदगंसिवा उरकस्स माणिंवा उवुजमाणिंवा गियहमाणे अवलंवमाणे णातिकमंति ।

इस पाठ में लिखा है कि साध्वी कादमें या जल पाणीमें हो तो साधु काढके लावे विचारो अनंतो जीवोंकी हिंसा है तो फेर आज्ञा केसे दी ।

८ वृह त्कल्प में साधु कारणसे चरवी का लेपक ।

९ ठांणांग ठा ५ रस्ते चलते नदी आवे तो ।

(भिरकु गामाणुगामं दुइज्जमाणे अंतरासें

नई आगच्छेज्जा एगं पायं जले किच्चा एगवायं थले किच्चा एव एहं संतरइ)

इस पाठ मे लिखा है कि साधु के विहार करते रस्ते में नदी आवे तो एक पग जल में एक पग थल में इस विधि से उतरणा चाहिये ।

१० इसी ठांणा में चातुर्मासा में विहार करणा लिखा है।

११ इसी ठांणा में साधु साध्वी एकत्र रहेना लिखा है।

१२ उव्वाई सूत्र में सुभ जोग प्रवृति करने की आज्ञा है योग्य है सो आश्रव है ।

१३ सूत्र पन्नवणा में चार भाषा बोलने से आराधक कहा है ।

१४ उव्वाई सूत्र में शिष्यकी परीक्षा निमित्त दोष लगावे कहा है ।

१५ सू० उ० अ० २ ६ पडिलेहणा करणाना कहा है।

१६ इसी सूत्र में तीजी पोहर में निद्रा लेणी कहा है।

१७ साधु गोचरी जाते है सो धर्म के लिये ।

१८ गामाणुगाम विहार करते है धर्म के लिये ।

१९ धर्म उपदेश करते है वो धर्म के लिये इत्यादि

कार्य केवल धर्म के लिये करते है जिसमें वायु आदि जीवोंकी हिंसा अवश्य होती है परन्तु पूर्वोक्ति का मोंमें जिन आज्ञा होनेसे ये कर्तव्य निर्वद्य करणी है इसीसे भगवानने आचारंग सूत्र में ऐसा अधिकार आज्ञा किया है।

अणाणाए एगे सोवट्ठाणे अणाए एगे निरुवट्ठाणे एवंते माहेउ।

अर्थ जिन आज्ञासे वाहिर उद्यम और जिन आज्ञामें आलस्य ये दोनेही कर्मबंधके कारण है विचारो पुर्वोक्त बोल जिन आज्ञामें है आज्ञा सो ही धर्म है।

(स) आज्ञामें धर्म हम समझते है।

(उ) फेर जगडा किस बातका है।

(स) पुर्वोक्त बोल हमारे समजमें आगये परन्तु उन बोलोंमें हिंसा होती है उसका साधु वा श्रावक बुरा समझते है परन्तु आप तो द्रव्य पूजामें हिंसा करके बहूत प्रसन्न होते हो और भी जिस दिन पूजा न हो उस दिन आप बडे भारी हानी समझते हो।

(उ) ये आपकी कीतनी भुल है हम द्रव्य पूजा करके भक्तिकी खुसी मानते है जिसदिन भक्ति न हो उस दिन

पश्चाताप करते है हम पूछते है कि तुम गुरुको वदन करके प्रसन्न होते हो या अप्रसन्न ? जो प्रसन्न होते हो तो वदना करते वायु जीव हिंसा हुई इस वातकी खुसी है या गुरु भक्तिकी खुसी है ।

(स) हम गुरु भक्तिसे प्रसन्न होते है ।

(उ) ऐसे ही पूजामें समझ लेना जो धर्म प्रवृत्तिमें हिंसा होती है वो स्वरुप हिंसा है विशेष स्पष्टी करण देखना हो तो तुमारे श्रावक दलपतरायजीने तत्वप्रवचन कामें लिखा है कि जिन शासनके कार्यमें हिंसा होती है वो जिनमें लिखे आपके जैसा फल देती है ।

[स] आप स्वरुप हिंसा किसको कहते हो ।

[उ] हिंसा तीन प्रकारकी होती है (हेतु-१ स्वरुप-२ अनुबंध३ हेतु हिंसा तो संसार कार्य विषय कषायकी प्रवृत्तिमें होती है स्वरुप हिंसा जिन शासनके कार्य जिन आज्ञामें प्रवृत्ति २ अनुबंध वीतरागकी आज्ञाको उत्थापन करणा उसीको अनुबंध हिंसा कहते हैं ।

[स] आपने कहा वो ठीक है गृहस्थ तो दुनिया है बहुत लोग कम सचके कार्य करते हैं परन्तु साधु इस वातका उप-

देश करते है तो उसीको व्रतमें बाधा आती है।

[उ] प्रिय मित्रो आप आ देश उपदेशको समजो।

[स] आ देश उपदेश किसको कहते है।

[उ] आदेश उपदेशके (च्यार भांगा होते) है।

(१) उपदेश देवे परन्तु आदेश नहीं देवे जेसे।

१ श्रावक गुरुजीको लेनको जाना चाहिये।

२ पोसहमें पडिलेहण करणा चाहिये।

३ प्रति क्रमणामें (ऊठ बेठकी क्रिया)।

४ गुरुजीको पउंचानेको जाना।

५ जिन प्रतिमाकी पूजा करणी।

६ साधर्मीसे वत्सलता (स्वामि वच्छल)

७ साधुको दान देना।

८ दीक्षा महोत्सव करना।

९ शासनकी प्रभावना करना।

इत्यादि साधु श्रावकोंको उपदेश तो करे परन्तु आदेश नहीं देवे।

२ आदेश तो देवे परन्तु उपदेश नहीं करे जैसे वर्षादमें मात्रो पठणेका गुरुजी शिष्यको आदेश करे परन्तु उपदेश नहीं करे।

३ अठारहपापके त्याग करनेका आदेश और उपदेश दोने करे।

४ अठारह पाप सेवन करनेका न आदेश करे न उपदेश करे। इस प्रकार साधु उपदेश करणे योग्य कार्यका उपदेश करता हुआ भगवानकी आज्ञा आराधन करते है और द्रव्य पुजाका साधु अनुमोदन करे यह बात आवश्यकमें कहा है।

(स) अनुमोदन करने से पापका भोगी होता है।

(उ) अभी इतने सुनने परभी आप लोग उपियोग सुन्य हो जाते हो परन्तु क्या करे प्रथमसे ही बुद्धि में पापका संस्कार ही बणा रखा है लो सुनो किसी गृहस्थने साधुको उलट भावसे दान दिया अथवा पूर्व लिखत नव बोल किया उसको साधु अनुमोदन करे या नहीं।

(स) आपका कहना सत्य है अर्थात् हमारे समज में आ गये परन्तु हम पूछते है कि द्रव्य पूजा करणे में हिंसा

होती है कारण भाव विना मोक्ष नहीं होती है इसीलिये भाव पुजा करणा ही ठीक है।

[उ] देवाणु प्रिये भाव पुजा से ही हम मोक्ष मानते है परन्तु द्रव्य है सो भावका कारण है और गृहस्थ सारंभी सपरिगृही है उसी को द्रव्य पुजा करणा अवश्य कर्तव्य है और आपको एक तोते वाला राघराम सिखा दिया है कि द्रव्य पुजा में हिंसा होती है परन्तु देखा जावे तो आप लोग मुंहसे ही दया दया पुकारते हो परन्तु कर्तव्य कितने ही हिंसा के ही करते हो।

[स] हमारे हिंसा का क्या काम है।

[उ] प्रथम तो श्री वीतराग देवोंकी आज्ञा का उल्लंघन किया है वो भाव हिंसा लगती है दूसरा आपका आचार व्यवहार भी सनातन जैनियों से व्यतिरिक्त है सो निचे लिखता हूं।

१ श्री वीतराग देव जीवोंकी जतना के लिये मुख व-स्त्रिका फरमाई है आप लोग दिनभर मुंह बंधके उलटे जीवो के लिये सस्त्रकर दिये कारण दिनभर बांधणे से असंख्यात समूर्छिम मनुष्यों की उत्पत्ति होती है और जिनशासनकी

भारी निंदा का कारण है कहो कोन से सुत्र के अनुसार मुल पत्ति बांध रखते है।

२ आचारंग सून में रसचलित वस्तु में असंख्यात जंतु उत्पन्न होते है और आपलोग वासी बिगडा हुआ धोवण आहार लेते हो।

३ गृहस्थी का जूठा आहार जिस में असंख्यात जीवों की उत्पत्ति होती है सो लेके खाते हो

४ विद्दल याने जिसका दो फाड हो ऐसा धान मुंग माठ चवला चीणादिकी दाल बैंगण वडादि जिस जिस धानकी दो फाड हो उसीके अंदर तेल न निकले वो पुर्वक्त कचा दुध दही छाछ में मिलावे उसी को विद्दल कहेते है वो ले के खाते हो असंख्य जंतु उत्पन्न होते है।

५ आचार बहुत रोजका याने तीन दिन उपरांत का खाते हो।

६ हलवाई की कडाइका पाणी जिसी में कुत्ते वगेरे पीते है और कितनाक कुतेका मुह भी अनेक जात के निष्ठादिक से लिप्त होते है ऐसा अशुची पांणी लेणा जिसमें असंख्या जीवोकी उत्पत्ति होती है इतना ही नहीं और भी बहुत से गधे गउ बेल आदि जीवों के अंतराय का कारण होता है।

७ घर घर के हांडेका धोवण जिसी में औरतों का हाथ वगेरेह का मेल नाकके मेलका हाथ वीगेरह भी उस में धोया जाता है ।

८ रजस्वलाके हाथका आहार पाणी लेणा ।

९ सूवासूतकके घरका आहार पाणी लेतेहो ।

१० शास्त्रमें चादर चोलपट्टा रजोहरण का प्रमाण कहा हैं उसीसे अधीक रखते है ।

११ शास्त्रमें गोचरीकी झोली कोणीके पास नीचे हाथपर रखना उपर ३-४-५ पडला रखना कहा है तुम लोग हाथमें झोली लातेहो गृहस्थीयोंके घरमें पात्रोंकी दुकानदारी फेलाते है लेकिन देखो भगवानने तो फरमाया है कि साधु गृहस्थको आहार पाणी दिखावे तो प्रायश्चित आवे इत्यादि बहुत आचार व्यवहार जिन शासनसे विपरीत है कुलिंग मिथ्यात्वका कारण है* जितनी जिन शासनकी निंदा होती है वो प्रति-

---

* एक जैनाभास लटकती झोलीसे गोचरी गयीथा कीसी गृहस्थ ने लाडु वेराया फेर दुजे गृहस्थके घरे जाके भिक्षाके नामसे झोली खोली पात्रोंकी दुकनदारी फेलाई पात्रो में पुर्वोक्त लाडु एक बचोने देखे बचोने लाडु मांगा नहीं देणे से बचो रोने लगा अपणी माताको

थाके उत्थाप कोंका या दान दयाके उत्थापकका ही कारण है याहां थोडासा संबंध लिखा है अधिक देखना हो तो सम कित सल्योद्धारमें देखो ।

(स) आप हाथमें मुपती रखते हो सो किस सूत्रमें कहा है

(उ) देखो सूत्र दशवैकालिक अध्यन ५ उ १ गाथा ८३ मी " हत्थग " हाथमें मुपती कही है लेकिन मुह बन्धनी किस सूत्रमें कही है ।

(स) यह आपका लिखना कोई शास्त्रका प्रमाण है कि निंदाके तोर लिखते हो ।

(उ) प्रिय मित्रों मैं निंदाको बुरी समझताहु न मेरा इरादा किसीकी निंदा करणेका है मैं केवल परोपकारके लिये सत्यार्थ स्वरूप भव्य जीवोंके बोधके लिये प्रगट करताहूं

काहा मैं लाडु उगा देनेने न एक ब्राह्मण आया साधु मे कहादे मुनि को दयावान् होतो इस बच्चे को मत रोयाको लाडु दे दो अब विचारो निसीथ सुत्र मैं काहा है कि साधु गृहस्थ को आहार दिवादे तो चो-मासी प्रायश्चित आवे प्रथम तो जिन आज्ञा उल्लंघन दोष है दूसरा जैनशासन का निंदा करणात् मिथ्यात्वादि दोष उत्पन्न होता है तथा जीवोंका दृष्टि आदि से आरंभ घातादि दोष उत्पन्न होनेका संभव होता है इसी से हमारा कहना है कि शुद्ध जैन सिद्धान्तानुसार मार्ग को ग्रहन करो दूषणोंका त्याग करो इति,

साधुका उपगर्ण उपधि या गोचरीके लाणा वगेरहका सबंध प्रश्नव्याकरण सूत्रमें है और वासी विद्रुल आचार रजस्वला सुतक सूवा आदिका निषेध बहुत शास्त्रोंमें है मुखवस्त्रका केस सूत्रोंमें जगह जगह है।

(स) मुपत्ति बांधणी सूत्रमें लिखा है इसीसे हम बांधतेहै

(उ) कौनसा सूत्रमें लिखा है।

(स) सूत्र भगवतिजी श० १६ उ० २ में ऐसा पाठ।

गोयमा जाहेणं सक्केदेविंदे देवराया सुहम-कायं अणि जूहित्ताणं भासंभासई ताहेणं सक्के-दिविंदे देवराया सावजं भासंभासई।

इस पाठमें कहा है कि शक्रेन्द्र मुखवस्त्र हस्त विनां दिया बोले तो सावज भाषा है इसीसे हम मुपत्ति मुखपर बांधते हैं

(उ) क्या आप देवताकी करणी स्वीकार करते हो।

(स) हांजी भगवानने फरमाया है।

(उ) जब पूजाके काममें मुख क्यों छिपाते हो क्या वहां भगवानने नहीं फरमाया है।

(स) हम तो इसी आधारसे मुपत्ति बांधते है।

(उ) इसी पाठसे आपका कुलिंग मुख बांधणा सिद्ध होता है जब देवताकी करणीको स्वीकार करोगे तब वहां मुखवस्त्र हस्तमें रखणा कहा है और वहांकी भा कोइ विद्वान मुनियोंसे समजो जिणसे मालुम हो।

(स) हस्तमें रखणेमे वायुकायके जीवोंकी पूर्ण यतना होसकती है इसीसे मुख बांधणां श्रेष्ट है।

(उ) वायुकायके शरीरकें कितने स्पर्श है।

(स) भगवति स० १२ उ० ५ में वायुकायका शरीर स्पर्शी कहा है।

(उ) भाषाका पुद्गल कितना स्पर्शी है।

(स) पन्नवणा प० ११ भाषाका पुद्गल चार स्पर्शी है

(उ) चोस्पर्शीसे अठस्पर्शीकि घात होवे या नहीं।

(स) चोस्पर्शीसे अठस्पर्शीकी घात नहीं होती है।

(उ) फेर आप मुख किस वास्ते बांधते हो।

(स) हमारे गुरुजी कहते हैं कि होट से होट मिलते है चोफर्सी का अठस्पर्सी हो जाते हैं।

(उ) इसमें कोई सूत्रका प्रमाण भी है।

(स) हमारे गुरुजी महाराज क्या विना प्रमाण कहते है।

[उ] ये विचारे भोले लोगोको भ्रममें डालनेके लिये जाल है परन्तु याद रखणा कुलिंगका दोष भारी है यह तो कपडा है लेकिन काष्ट पाषाण लोहेकि भी पटी मुखके आडी लगादो तब भी भाषाका पुद्गल नहीं रुक सकेगा अब आपका कुलिंग रखणे से क्या लाभ हुआ।

(स) मुपत्तिका शब्दार्थसे ही मुख वांधणी सिध है हाथ में राखे तो हाथ पत्ति कियुं नहीं कही।

(उ) यह शब्दार्थ कौन से काशीके पंडितोंके पास शब्दार्थ धारण कियाथा। जब रजोहरणका क्या अर्थ करोगे तुमारे शब्दार्थसे तो दिनभर रजको हरण करणा चाहिये याने दिनभर गली गली से कचरा झाडणा चाहिये और जब आप लोक लोच वा आहार करते हो तब मुहपतिको खोलके विछोंना पर रखते हो उसवगत क्या नाम रखोगे विछावणा पति ? पाटापर रखनेंसे पाटापती होगा।

[स] सकेंद्र के अधिकार टीका में जीनरक्षा कहा है सोभीतो भगवानने फरमाया है।

[उ] टीका भगवान फरमाई मानते हो तो ग्रंथवों को सुना (ओघनिर्युक्ति में ऐसा पाठ है) "संपाइ मरयरेणु पमजठा वयंति मुहपेत्ति' अर्थ मक्की मछरादि त्रसजीवोंकी रक्षा के लिये जब बोले तब मुख वस्त्र रख के बोले।

[स] सुत्रअतगढ में गौतम स्वामीकी अगुली एमंता कुमारने पकड तब एक हाथ में झोली दुसरे हाथ अमंता कुमारने पकड तो क्या गौतम स्वामी उगाडे मुख बोलते थे

[उ] प्रिय मित्रों जैन मुनियोंकी गोचरी फकीरोंकी माफक लटकती न होवे इसीसे एक हाथकी कलाई में झोली हाथ मूहपत्ति सुखसे रह सकती है दूसरे हाथकी अंगुली उसी कुमारने पकडी।

(स) आप मुहपत्ति हाथमें रखते हो इसमे कोइ सुत्र का प्रमाण है।

[उ] प्रिय मित्रो सनातन जैन मुनि सिद्धातानुसार मुखवस्त्रको हाथ में ही रखते है बोलणे के समय मुख आडी रखके यतना से निर्वद्य भाषा बोले।

१ आचारांग सुत्र २। २। ३ साधु उंश्वोसास निचेसास

खासी छींक उचासी डकार के समय मुह आडा हाथ देना कहा है।

२ सुत्र विपाक अ० १ गोतम स्वामी मृगाराणी के घर मृगालोडे को देखणे गये तब मृगाराणीने कहा भगवन् आप मुख बांधो (तुझेणं भतं मुह पत्तियाए मुहं बंधह) ये प्रत्यक्ष सिद्ध हुआ कि प्रथम मुख बंधा हुआ नहीं था जिसी से ही बांधणेका कहा है।

३ निशीथ सूत्र उ० ४ में साधु मुह पत्ति साध्वी आणे के रस्ता में रखे तो प्रायश्चित है।

४ अंगचुलिया सूत्र में कहा है कि दीक्षा ले तो साधु मुहपत्ति अनामिका अंगुली ऊपर रखे इत्यादि बोलोंसे सिद्ध है कि मुहपत्ति हाथ में रखे।

[प्र] मृगाराणी कहा सो नाक बांधणेका कहा।

[उ] क्या मृगाराणी नाक नहीं कहजाणतीथी सो मुख कहा है सूत्र में मुख नाक अलग अलग कहा है विचार करो जैन मुनियोंका लिंगका अन्य लोक भी व्याख्या अपने सास्त्र में कररहे हैं (शीवपुराण अध्य २१ श्लोक)

मुंड मलीन वस्त्रंच गुप्पी पात्र समन्वितम् ।
दधानं पुंजीकां हस्ते चालयंतं पदे पदे ॥ १ ॥
वस्त्रहस्तं तथाहस्तं क्षिप्प मानो मुखे सदा ।
धर्मेति व्याहरंतच नमस्कृत्य हरः स्थितः ॥ २ ॥

मतलब इस श्लोकमें भी मुखवस्त्रका हाथमें रखणा कहा है मिय मित्रो आप दया दया तो मुखसें पुकारते हो परन्तु दिनभर मुख बंधा रखणेसे मुखका थुक लालखखार लगता है उसीसे असंख्या समूर्छिम मनुष्य उत्पन्न होते है यह घोर हिंसाका काम है और इतनाही नही कई अन्य लोक देखके जैनके नामसे हांसी करते हैं बच्चे पशु देखके चमकते हैं, रोनेको लगजाते हैं कुत्ते भुसणे लगजाते हैं बंधुओ यह कुलिंग आपको कैसे प्रशसनीय हुवा है देखो जैन मुनियोंका वेष तो देवताओंको भी मियकारी होते हैं उसीको आप धारण करो ।

(स) यह आपका कहेना सत्य है परन्तु आपने धोवण-के विषयमें प्रथम निषेध किया जो केवल जीभ स्वादसे पिया नहीं जाता है इसीसे निषेध करते हो परन्तु सूत्र आचारांगमें २० प्रकारका धोवण कहा है उसको छोडके आप उष्ण जल लेते हो जिसमें भी आधाकर्मी दोष लगणेका संभव है ।

(उ) प्रिय मित्रो हम धोवणका निषेध नहीं करते है परन्तु रस चलित विगडा हुवा धोवण या अपवित्र कुलका लेणेसे जीव-हिंसा, वा शासन हिलना होती है इसीसे आप लोगोंसे कहणा है कि शासन हेलना मत करावो और आचारांगमें धोवणका कहा सो हमको प्रमाण है परन्तु गोबरका पाणी राखका पाणी सटरपटरका पाणी* किस सूत्रमें कहा है उष्ण जल आधाकर्मी कहते हो सो तो तुम्हारे ही अनुयायइ ले पीते हैं प्रिय मित्रों सनातन जैनियोंमें तो कितने ही श्रावक सचित्त जलके त्यागी होते हैं कितने ही देवपूजाके करणेवाले होते है उसीके घरमें उष्ण जल हमेशां ही रहता है मुनि प्रासुकके भोगी होते हैं।

---

* नोट ओली ४ की.

शहेर जोधपुर आदिमें अबी धोवणका नवा नमुना प्रसिद्ध हुवा है।

१ कच्चे पाणीमें जरासा दुधडालके पीणा उसको धोवण कहके त्यागी बणके अपनी महिमा बढाना।

२ कच्चे पाणीमें (खांड) ओली डालके धोवण करना।

३ कच्चे पाणीमें (राख) डालना तेरापंथीयोंकी तरह।

४ कच्चे पाणीमें (आटा) डालके धोवण बनाना।

५ कच्चे पाणीमें (छाछ) डालके धोवण बनाना।

इत्यादि इसका उपदेश उपदेसको काही है वाहा त्यागीजी वहा!

[स] यह आपका कहना ठीक है परन्तु एक शंका हमको है कि चैत्य शब्दका अर्थ आप लोग प्रतिमा मंदिर करते हो हमारे ज्ञान साधु करते हैं इसका क्या कारण है।

(उ) प्रिय मित्रो हमारे एक रूढी नहीं है जहांपर जैसा संबंध हो वैसा ही अर्थ पूर्वाचार्योंने किया है ऐसे ही हम करते हैं लेकिन चैत्य शब्दका अर्थ साधु या ज्ञान किसी सूत्रमें नहीं कहा है देखो सूत्र सूयगडांग २। २ में साधुके तेरह नाम कहा है जिसीमें चैत्य नहीं कहा है और रिषभदेव प्रभुके ८४००० हजार मुनि कहो हे लेकिन ८४००० चैत्य नहीं कहा है इसी मुजब चोवीस तिर्थकरोंके मुनि कहा है परन्तु चैत्य नहीं कहा है जो साधुको चैत्य कहोगे तो साध्वीको क्या चैत्यी कहोगे वतलाओ तुम्हारे माने बत्तीस सूत्रोंमें किसी जगह साधुको चैत्य कहा हो तो कहो ज्ञानके विषयमें दूसरे प्रश्नमें लिख आये हैं और चैत्यका अर्थ प्रतिमा ठाम ठाम कहा है सो बत्तीस सूत्रोंमें विद्यमान है भगवति उबाइ आदि सूत्रोंमें भगवान या मुनिके वंदनाके अधिकारमें ऐसा पाठ (मंगल, देविंय, चेइय, पुजवा स्वामी) ऐसा पाठ है इसका अर्थ आप मंगलिक हो देव संबंधि चैत्य अर्थात् प्रतिमाकी तरह सेवा भक्ति करने योग्य चैत्यको प्रतिमा कही है

[स] वाजी वा क्या भगवानसे भी प्रतिमा विशेष है।

[उ] प्रिय मित्रो विचारो भगवानको नमोत्थोणूदिया जाता है तब संपादीयो, कामस्स कहा जाता है ओर प्रतिमा के पास नमोत्थोणूं देते हैं जब जाव सम्पवतांणु कहा जाता हैं अब सोचो अपने आप भी ही विचार करलो सिद्ध होगा कि चैत्य प्रतिमाका नाम है।

[स] आपका कहना समज मे आ गया लेकिन यह कृत बी मत होणेसे ही देश देश में प्रसार बउत हो गया है इसका क्या कारण है।

[उ] इसका कारण येह है कि प्रथम तो वंकचुलिया सुत्रादि में येह संबंध विस्तार पूर्वक है देखना हो तो सुत्रभी उपस्थित है दुसरा यह है कि पंचमे आरे काल दोष से ज्ञान कीहानी होने से गाडर प्रवाही लोगवाह्य क्रिया खेद के मोह के उदय से लोकोमे मिथ्या का प्रचार बढ गया परन्तु वोभी जेसे रोग वा गर्भ कि स्थिति पुर्ण होनेसे रोग वा गर्भ से मुक्त हो जाते है जैसे ही इस पन्थकी स्थिति पूर्ण होने वाली है, देखा जावे तो इस सबकी प्रवृत्ति एक नहीं है और आचार विचार भी भिन्न भिन्न है एक है, एक एककी जड एक एक

काट रहा है देखो लुकेके साधु मुख वस्त्रको हाथ में रखते झोली कलाई पर रखते थे हाथ में डांडा रखते थे मात्राका उपियोग नहीं करते थे पिछेसे सं १७०८ के लगभग में लवजी अपने गुरुको भ्रष्ट जानके मुख वस्त्रको बांधके कुलिंग करके निकला उसीके पिछाडमे धर्मदासजी अपने गुरुको भ्रष्ट जानके आठ कोटीका पथ अलग निकाला पिछेसे गुलाब पंथ निकला उसीके पीछे आजीव पंथी निकले वो धान में जीव नही मानते है वर्तमान में पंजाब में विचरते हैं और तेरापंथी भी इसीके अंदरसे निकले हुए हैं उनकी श्रद्धाका बयान ।

१ महावीर स्वामिको चूके कहेते है ।

२ अनुकंपा सावद्य निर्वद्य दो प्रकार की कहते है ।

३ मरते हुए जीवको बचाने में अठारे पाप लगा कहते हैं ।

४ पडि मायारी श्रावकको दान देणे में एकंत पाप समझते हैं ।

५ श्रावकको जहरका कटोरा कहेते है ।

६ पुंजणी बेटका देणे में पाप कहेते है ।

७ किसी दुष्टने गायोंके वाडे में आग लगादी किसी दयावंतने वाडा खोलके जलती हुई गउवोंको निकाली दोनोको पाप कहेते है।

८ किसी दुष्टने साधुके पासी लगादी किसी दयावंतने खोलदी दोनों में पाप कहेते है।

९ गरीब अनाथ दुर्बलको चिणा मूंगड देणे में एकांत पाप कहेते है।

१० किसी श्रावक को पोसाके लिये मकान दिया किसीने वेश्याको कुकर्म करणेके लिये मकान दिया दोनोको पाप कहेते है।

११ मिथ्यात्वकी करणी को भगवानकी आज्ञा में कहेते है।

१२ किंवाड पतनासे जडने खोलणे वालेको साधु नहीं मानते है।

१३ कितने ही बाते अछतिकी स्थापते है और छतिकी उत्थापते है गृहस्थीके घर बैठके अहार पाणी कर लेते हैं।

इत्यादि बहुतसे काम करके जिन शासनको कलंकित कर रहे हैं इनके सिवाय देशी परदेशीका भी परस्पर विरुद्ध

पणा भिन्नपणा देखा जावे तो एक एकमें साधुपणा नहीं गिणते हैं और पक्खी चोमासी संवत्सरीका भी भिन्नपणा है जिस वगतमें इसीका प्रचार हो रहाथा उस वगतमें सिवाय बत्तीस सूत्रके ग्रंथ टीका चूर्णी वगेरह कुछ भी नहीं पढते-थे अब खूब जोर तोरसे ज्ञानका प्रचार होरहा है और टीका प्रकरण ग्रंथ वगेरह भी पढते हैं व्याकरण कोष वगेरहका अभ्यास बहुत होरहा है धन्यवाद देताहूं कि पूर्वाचार्योंके बणाये हुए ग्रंथ छापे छपाके प्रकट किये हैं जिसमें मदत देने वाले भी महान् लाभ उपार्जन किया है कितने-ही भव्य जीवोंका मिथ्यात्व दुरा हुवा और शुद्ध समकितको प्राप्त होगये हैं यह उपकार ज्ञान प्रचार करणेवालोंका है अबी भी इन लोगोंमें शुद्ध श्रद्धावाले कितनेही महानुभाव हैं निर्पक्ष होके इन लोगोंको पुछा जावे कि आप लोग पंचांगी मानते हो या नहीं तो विद्वान आत्मकल्याणी तत्ववेत्ता तो अवश्य ही स्वीकार करते हैं कितने ही महानुभावोंसे मैं स्वयं पचांगीके बारेमें शंका की है उसपर उत्तर यह ही मिला कि पंचांगी जैनियोंको मानणा ही चाहिये फिर उनसे दलेल कीगई कि आप लोग पंचांगीके अनुसार प्ररूपणा कियुं नहि करते हैं उत्तर यही मीला पांचांगीकी प्ररूपणा करणेसे

हमारा वाडा बिखर जाते है उसीसे हमने कहा कि आप लोग जीवन सफल करणेके लिये घरको छोडा है कि वाडा रखणे के लिये वाडेका फिकर मत करो और वीतराग देवोंकी आज्ञा भंगका फिकर रक्खो तो उन्होंने कहा कि हमारी श्रद्धा पंचांगीकी है अवसर देखके मरूपणा भी करेंगे इसी तरहसे कई महानुभावोंसे रूबरुव वार्तालाप हुवा है कितनेक महानुभावोंके पत्रद्वारा पंचांगी मानणेकी श्रद्धाके लेख भी आये हैं और कितनेक श्रावकों की भी श्रद्धा दुरस्त होरही है यह उपकार ज्ञान प्रचारका है अब आप स्वयं ही विचार करलो कि जैनाभासेके अंदरसे श्रद्धा शुद्ध होहोके सनातन जैनियोंमें आरहे हैं लेकिन यह भी आप कभी सुनीथी कि सनातन जैन मुनि जैनाभासमें आया अपितु कभी नहीं ऐसा समझणा चाहियेकि अब इस पन्थकी स्थिति पूर्ण होणेमें है

[स] नम्रतापूर्वक आनंदित हृदयसे प्रफुल्लित हुआ बोला कि आज मेरे अहोभाग्य है कि मैं परम पवित्र सनातन जैन धर्मको प्राप्त हूआ हुं आपसे वारंवार माफी मांगता हूं मैं पहिले प्रश्नमें अच्छी तरहसे समझ गयाथा परन्तु विशेष सवाल भव्य जीवोंके उपकारके लिये तर्के की है एक प्रार्थना और

करता हूं प्रथम मैंने इस भव या अनंत भवमें भमते हुए जिन बचनोंकी विराधना करी हो या जिन प्रतिमाकों जिन सारखी नहीं मानी या निंदा हिलना करी हो उस पापसे छुटणेका रस्ता कृपा करके बतलावे जो प्रायश्चित आप आज्ञा करे वो मुजे स्वीकार है।

[उ] अहो भव्य प्राणी तुम सच्चे मोक्षरूपी लक्ष्मीको धारण करणेवाले हो मैं आपको उत्साहभावसे धन्यवाद देता हुं कि मेरा किया हुआ परिश्रमको अपने सफल किया मैं ऐसा मानताहूं कि सहस्र जीवोंको उपदेश देके उन्हीका उद्धार करणा सहज है परन्तु अभीनिवेश मिथ्यात्ववाला एक ही जीव समजाणा वहुत कठीन है परन्तु जिन जीवोंके उसी मिथ्यात्वका क्षयोपशम होजाता है उसीको समजाणा कोइ बडी बात नहीं है अहो भव्य जीवों अब आप अछि तरहसे देव गुरु धर्म इस तत्त्वको धारण करके इसीका पांच अतिचार वा कुलिंगका परित्याग करो जिनीसे कल्यांण शीघ्र हो और प्रथम जो जिन वचनोंकी विराधना की है और जिन प्रतिमाकी निंदा की उसीका प्रायश्चित यह है कि जिन वचनोंको आदरपूर्वक बहुमान देके आराधो जितने जीवोंको

सन्मार्ग बताया हो उन्हीको सिधे रस्ते लाओ और श्रीजिन प्रतिमाकी निंदा करी इसीसे बढके बहुमानसे पूजा प्रभावना करो जीसीसे कर्म मल दुर होके शुद्ध चेतनता प्रगट हो मुजे अनुमानसे मालुम होता है कि आप येसे भ्रम जालमें फसे हुवे शुद्ध दशाको पहचानके जेसे सर्प कंचु तजे है जेसे आप भी इस जालसे निकल गये है इसीसे मोक्ष नगर आपके नजीक होना संभवे है इसी बातका आपको धन्यवाद देताहूं.

(प्र) आप हमको धन्यवाद देते हो परन्तु आप भी तो पेस्तर इसी भ्रम जालमे फसीये थे फेर आप केसे निकले.

(उ) लो सुनो हम हमारी बात भी आपको सुना देता हुं हमारे पुर्वजे [वडेरे] पंवार नामके राजपुत उपकेश पटण (ओसीया) मे रेहते थे वहांपर श्री पार्श्वनाथजीके छठे पाट श्रीरत्नप्रभसूरीजो * ५०० साधुके परीवारसे ओसीया पधा

---

* श्री पार्श्वनाथजीके प्रथम पाट श्री सूभदत्त गणधर हुवा. १ दुसरे पाट हरिदत्त नामा आचार्य हुवा. २ तीसरे पाट आर्यय समुद्राचार्य हुवा. ३ चोथे पाट उजीनी नगरीके राजा जयसेनका पुत्र केशीकुमार दिक्षा लेके आचार्य हुवा है ए आचार्यने बौद्ध मतका खंडनकर हठाया था- और केइ राजाओंको जैनी बनाया था. चेडाराजा, संतानिकराजा, प्रदेशीराजा, सिद्धारथराजा, जैसनराजा, आदिको प्रतिबोध दियाथा. जो गौतम स्वामीसे चर्चा करनेवाला केशीस्वामी अलग हुवा है उत्तराध्यन अ० २३ में है जो

रे आप चतुर्दशा पुर्वधारी थे चमुंडा देवीको प्रतिबोधके उपलदे राजा आदि ३८४००० को जैन बनाया जीसीका १८ गौत्र स्थापन कीया १ तातेड, २ बाफणा, ३ करणावट ४ वैदमुहता, ५ चोरडीया, ६ सचेती, ७ समदडीया ८ गदइया, ९ लुणावत, १० कुमट, ११ भंडेवरा, १२ छाजेड, १३ वीरहट, १४ श्रीश्रीमाल, १५ लघुसेष्टी, १६ मोरक पोकरणा, १७ रांका, १८ डीडू ॥ इति

(इन १८ गौत्रांसे वहुतसी जातीयां निकली है)

जीस वक्त आचार्य महाराजने राजपुतांको जैनी बनाया था उस समय मस मदिरा रात्रभोजन वासी विद्वल आदि

प्रदेशीराजाको प्रतिबोध देणेवाला केशीस्वामी रायप्रश्नीगी १ है इन दोनु होनामे बहुत वर्षका अन्तर है ४

पाचमे पाट विद्याधर कुलके राजाने दिक्षा ली थे श्री सयंप्रभसूरिजी इस वक्त चार वर्ण थे (१ क्षत्री, वैश्य, २ ब्राह्मण, ३ शुद्र ४) उसीसे आचार्यश्रीने जैन पोरवाड, श्रीमाल नगरकी स्थापना कि. आप विद्याधर होनासे पार्श्वनाथजीकी परपरामे विद्याधर गच्छ कहलाने लगे ५

छठे पाट विद्याधर वशके भूषण रत्नप्रभसूरीजी वीरनिर्वाण ५२ वर्ष आचार्य पद धारी हुवाथा बादमें १८ वर्ष बाद वीर प्रातु ७० मे ओसीया पधारे जीसको आज २३७२ वर्ष हुवा है ६

अभक्ष्यका त्याग करवाया था और भव्य जीवोंका उद्धारके
लीए शासनपति श्रीवीर प्रभुका मंदिरकी प्रतिष्ठा (प्रतिमा
गाउका दुध और वेलुसे बनीथी) स्वहस्त कराइथी उसी
भव्य जिनालयको आज २३७२ वर्ष हुवा है वो मंदिर सां-
प्रतकालमे विद्यमान है उसी रोजसे हम जैन ओसवाल कहलाते
है ज्यादा विस्तार उपकेश गच्छ चरित्रमें देखो ।

उपर लिखे अठारे (१८) गोत्रमें हम भी वैद मुहता थे
हमारे पुर्वजोने अविछन्न परंपरासे श्रीजैन धर्मका आराधनकर
अपना आत्माका कल्यांण कीयाथा परन्तु हमारी कम नसी-
बीसे [मारवाड देशमें जैन मुनियोंका पधारणा कम होनासे १
और इन लोगोकी वाहज क्रिया २ हमारा देशमें विद्या देवी-
का कोप होनेसे लोगोंकी अज्ञान दशा ३] इन तीनु कारणसे
इन लोगों कि भ्रम जालमे बहुतसे लोग फस गया उसीमे
हमारेको भी समजलो अनुक्रमे मुजे संसार तयगनू करणेकी
रुची हुइ जब मे पेस्तर देशी साधुवां पास सीर मुडाना निश्चे
किया उस समय प्रदेशी साधु कहेने लगे कि देशी साधु तो
स्थानकोंमें उत्तरते है गरम जल पीते है इत्यादि ढीले है इनो-
मे साधुपना नहि है अगर तुम आत्म कल्यांण करणा चाहवे

हो तो प्रदेशी साधुके पास दिक्षा ली तब मेने संवत्
१९६३ प्रदेशी साधु श्री लालजीके कहनेसे सीर मुंडाया
पुज्यजीवा अन्य साधुवोंकी मेरे पर कृपा होनासे इण लोगा-
के माने हुवे ३२ सूत्र हैं उसीमे ३० सूत्र और ३१० थो-
कडा मुजे पढादीयाथा इस बातका इन लोगोका मेवडाही
उपगार समजताहु सूत्रोंमे जहा पर मंदिर मुर्तिवापुजाका अ-
धिकारथा वहा पर कादी साधु काहीज्ञान कांहीवाग आदि वा
पुजाका फल मोक्षथा वहापर संसार बतलाके उत्सूत्रमे प्रवृ-
ति करादि मेभी व्यारव्यानादिमे इन लोगोके माफीक उत्सूत्र
कि परुपणा करताथा कारण उस समय मुजे सत्य रहस्ता ब-
ताना वाला जैन मुनितो कोइ मीला नहिथा जो मीलताथा
वो इसी कुमार्ग चालणेवाला मीलताथा इसी दसामे
मेने ६ वर्ष वहीत कीयाथा.

अब हमारा भाग्योदय एक आत्मार्थी पुरुषका संयोग
हुवा उनोने मेरेको पुछा कि आप सूत्रका अर्थ किस आधा-
रसे करते है (मेने कहा) सूत्रोंका अर्थ हम टबासे करतेहै
उसी माहनुभावने पुछाकि टबा किस आधारसे बना है, (मे-
ने) टबा टीकासे बना है (उसी) आप टीका मानतहो

(मेने) टीका हम नहि माने (उस) इस बातको आप वि-
चारी तब मेने अपणा दीलसे वीचार किया कि ए बाततो
सब मानतेहे कि टीकासे टबा बना है तोफर टीका नहीं मा-
नणा और टबा मानणा ए वात केसे बन सके बस इसी
व्याख्या पर मुजे संका हुई इसीकोही खाजना करता रहा
कीतनेही लोकोंको मेने पूछातो उटपटंग उत्तर मीला परन्तु
सत्य बात कोइ नहि काहा फेर मेने कीतनेक देशी साधु-
वोंको पुछा तो उणने कहाकी आप कीयु पुछतेहे टबातो टी-
कासेही बना है और टीका नहि मानणेका कारण येहकी टी-
कामे ठाम ठाम मुर्ति पूजा है (मेने पुछाकी) टीका बनाने
वाला कोणथा (उणोने कहा) कि पूर्वाचार्यथा (मेने) तो
फीर टीका मानणेमे क्या हानि है (उसी) हानितो कुछ न-
हि परन्तु टीका मानणेसे मुर्ति पूजा मानणा पडता है
और मुर्ति पुजा मानली जावेतो २२ टोलाका मत उठजावे
मेने कहाके ठीक है बंगा चुलीयामे लिखा हुवा जिनशासन
जिनप्रतिमाका उत्थापक यही आज प्रतिक्ष देखणेमे आयाहै
इसी माफीक बहुतसे लोगांने पुछणासे निश्चय होवा कि ए
लोग भद्रीक जीवाको संसारमे रूलाणे वाला है.

मे इनी लोगोकी अनुकंपा हमेसा करता रहा कि वी-

धारा ए लोग घरबार धन्यधान मातापीता स्त्री आदिको छोडके इणी लोगाकि पासमेपड जाते है और उत्सूत्र कि परुपणा करके दिर्घ ससारके पात्रबन रहाहै अगर किसी भव्य । जीवाका उद्धार होतो अच्छा है इसलीये हमने सत्य उपदेश करणा सरू करदीया इतनाही नहि बल्के व्याख्यानमे खुलमखुला कह देताथा कि मुर्ति पुजा करणी जिनआज्ञामे है इसीको पूज्यजी श्रावण करताही वीचार कियाकी आत्मरामजीको सरधा मूर्तिकी होना पग संप्रादयमे रहाथा जब २० साधु गगा बेठ अगर ईनीको नहि समजावेगातो हमको हनी होगा इस इरादेसे पूज्यजी हमको अपनी जाल्मे फसानेके लीये कही तहरेका लोभभी दीया परन्तु आप जागते है कि जीनके हाथ सचा रत्न आजाता है वह्रो काचके टुकडासे कब मस्त होगा अंतीतुकरी नहि इसी लीए मेने एकला रहना स्वीकार करलीया और श्री ओसीयाजीकी यात्रा कर मुहवदा हुवाही तीवरी चतुर्मास कीया उन समये इन लोगाने अकबार द्वार लेख निकालाकी गयवरचन्दको कोड साईता (आहार पाणी वस्त्रादि) गनडो और मूर्तिके बाराबे केइ मश्नभी कीयाथा उन मश्नका उत्तरतो मे ३२ सूत्रोसे देता रहा साथमे यहभी लिख देताथा कि अगर किसी मूर्ति उत्थापकों

की ताकत होतों मूर्तिके बाराबे शास्त्रार्थ करणेको तयार हो-जावो परन्तु कीसी मुर्ति उत्थापकोने इस बातको स्वीकार नही कीया कारणकि इन लोगोका मतही कृतबी अर्वाचेन (१५३१) मे लुकाजीसे चले है तो शास्त्रार्थ करे कीस बातका अस्तु.

फेर हमने संवत् १९७२ फागण सुद ३ के रोज श्री ओसीयां तीर्थपर मीख्याडोरीका परीत्याग किया वहासे फलोदी जाके असाढ सुद ? के रोज चतुर्विध संघके साथ श्री गौडीपार्श्वनाथजीके मंदिरमे श्रीरत्नप्रभसूरीजी जोकि हमारे महोपगारी हमारेको मंसमादिरादि, कुंवीसन, छोडाणे वाला कीनाकि आज अवछीन्न परमपरा चली आरही है इसी उपकेश गच्छ (कमला) की समाचारी अनुसार हमने क्रिया उद्धार कीया हमारे संक्षेप संवध पुच्छणासे सुनायाहै

(प्र) कीतनेक लोग कहेते है कि हमारी कठण क्रिया इनोसे न पलणसे हमने निकाल दिया है।

(उ) आप भी सोचीये इन लोगोंमें क्या कठण क्रिया है अगर हमारेसे इन लोगोंकी क्रिया न पलती तो हम ९ वर्ष केसे पाली क्या उस वक्त हम भिक्षा करते थे अब क्या

रसोई पकाते है उस वक्त हम पैदल चलते थे तो क्या, अब सावारी करते है उस वक्त सीरलोचन करते थे तो क्या अब हजामत कराते है इत्यादि बतलाइए कोनसी क्रिया हमसे न पली प्रिय मित्र उन लोगोमे क्रियाहे क्या जब जैन मुनियोकी क्रिया सूनोगे तब आपको मालम होगा कारण कीतनाक लोगोंकी सरधा ठीक होनापर भी जैन मुनियोकी क्रिया देखके वो लोग चुप होजाता है कि हमारेसे एह क्रिया पलणी मुसीकल है इसी लिए वो कुलग धारण कीया बैठ रहते है जैन मुनियोकी क्रियाको देखणा हो तो हमारे बनाई जैन मुनियोंका क्या वशुल है इस पुस्तकको पढो।

(प्रश्न) कीतनेक लोग कहते है कि धोवण पीणा बहुत कठीण है।

(उत्तर) देखीये आचारांग सूत्रमें २१ प्रकारका पाणी चला है जीसमें आटाका, दुधका, राखका, साकरका, गोरसका, धोवणका नानतक भी नहि है दर असल बात यह है कि गरम पानी पीणेसे इद्रिया निर्बल होती है और उपर लिखा धोवण पीनेसे इद्रिया सबल होती है करण पुर्वक धोवण जीवोंका पीड ही होता है देखीये २२ टोलाका साधु

भी कहते है कि राख, आटा ओलाका पानी नितरणासे कच्चा जल होता है और हाडा वीगेरेका धोवण जीसमे अनादिके संयुक्त होनासे २ घडीमे जीव उत्पन होता है जीसीमे आगमका प्रमाण देते है ।

अन्नं जलं किं चिठेइ, पच्चक्काणं न भुजए भिक्खु
घडीदय अंतरिया, निगोद्दियाहुति बहु जीवा॥१॥

अब आप सोचिये कि एसा अनंत जीवोंको पीणा ठीक है कि जिनाज्ञा संयुक्त पाणी पीणा ठीक है हम धोवणका निषेध नहि करते है धोवण वा पानी जिनाज्ञा मुताबीक पीना ठीक है प्यारे एतो एक भद्रीक जीवोंको बहकानेके लीए बात बनाते है असली कारण पुछो क्या है अगर क्रियाके लीए ही आपको छोडके जैन मुनि बणते है तो अब सूनो संक्षेपसे मै जैन मुनियोंकी क्रिया लिख देता हुं ।

१ सूबे उठतांही कुसुमीणं दुसुमीणंकी क्रिया (ध्यान) करणा पडता है उन लोगोंको पूछो कि इस क्रियाको तुम लोग जानते है ।

२ चैत्यवन्दन १–सझाय २–प्रतिक्रमण । ३

३ पडिलेहन किस विधीसे करणी पडती है क्या वो लोग पडिलेहनकी विधी जाणते है।

४ जिणालय (मदिर) जाके विधी पुर्वक चैत्यवन्दन करणा

५ उघाडा पोरसीकी विधी।

६ भात पानी लानापर विधी।

७ पचख्काण पालणाकि विधी।

८ आहार पाणी कीया बाद चैत्यवन्दन।

९ पडिलेहण विधी।

१० देव वन्दण कि विधी।

११ प्रतिक्रमण क्रिया कि विधी।

१२ रात्रीमे संथारा पोरसीकी विधी।

१३ लोच करतां विधी।

१४ वीहार करता विधी।

१५ मात्रु काल करणेके बाद विधी।

१६ पाख्खी चौमासी समत्सरी प्रतिक्रमण विधी।

१७ सुत्र कि वाचना लेने है वो योग वहन करते है ए क्रिया बहुत कठीन है जीसीमे ६ उमास लगती तपस्या करणी पडती है और दीनको और रातीको इनोकी विधी कर

णी पडती है क्या इन लोगोने कवी काने भो सुना होगा जैन धर्ममें एसी पोल नहि है की ५०–१०० आदमी मीलके चद्दर ओडाणासे पुज बन जावे यांह सूत्रका योग वहन करणेवाला ही योगताक्रर पदवीका अधिकारी बनताहै इत्यादि बहुत विस्तार है वो क्रिया जैनोंमें ही है नतु जैन भाषामें तो फिर इन लोगोंको सरम क्या नहि आती है।

(प्र) इसीमें पडिलेहन प्रतिक्रमण पच्चख्खाण तो ए लोग भी करते है।

(उ) इन लोगोंके पास विधी नहि है विधी विधान है गुरुकुल वासा सेवन करनेवालाके पासे और इन लोगोंके गुरु तो कोइ है नहि जीस टोलामे जीसका मन होता है वो एसी क्रिया कर लेते है।

(प्र) फिर ए लोग झुठी बातां क्या करते है की हमारी क्रिया पली नही आप बतलाइये कि इनोंकि क्रिया आपने कुछ छोडी भी है।

(उ) मे तो कहना नहि चाहताथा परन्तु अब तुमारे पुछणापर हमकों कहना पडता है कि हमने और कुछ नहि

छोडी है परन्तु जिनाज्ञा विरुद्ध जो कपट क्रिया थी उनिको अवश्य छोडी है जेसे पेसाबसे शीर घोणा मुपत्ती आदि कपडा धोणा गुदा घोणा इनके सिवाय भी कीतनी वार्ता एसी है की दुसराको कहने योग नहि है ।

(स) वाहजी वाहा ए वाततो आप ध्वेससेहि करतेहे क्या मनुष देह धारण करणेवाला एसा कार्य करते होगे हां ए कार्य ओघड लोगतो अवश्य करते हे परन्तु धर्म साधन करनेवाला लोग ए कार्य केसे करेगा.

(३) मींत्र हम पेस्तरहि कह चुके है कि हमारेको किसी मतसे द्वेष नहि है द्वेस रखना हम बडाही पाप समजतेहे अगर तुमको इस वातमे शंका होतो कभी प्रदेशी साधूको पुछनो परन्तु एक उनि लोगां कि बोलगे कि कपटाई हम बतला देते है अगर तुम पुछोगे तो वह कह देगा कि हमपेसाबको काममे नहि लेते है इसीका कारण यहे कि वह मनमे एसा सकल्प करते है कि इस वक्त काममे नहि लेतेहै [तर्क] आपको क्या मालम [उत्तर] ए वात हमारेको सीखाईथी इसी माफक हम वरतनेथे [तर्क] तो हम केसे पुछे.

[ज] तुम पुछणाकी आप सीर मुढायाके वाद आज तक पेसावको काममे लीया के नहि तव तुमारी शंका दुर होगा.

(उ) लो सूनो आपहि फुरमा दिजीये.

(प्र) इसीका असलि (तात्पर्य) यह है कि प्रदेशी साधुओंके गुरू स्थानकमें उत्तरते थे गरम पाणी पीतेथे पातरा रंगल रखतेथे पुस्तकोंका भंडार भी रखते थे और मंदिर मुर्तिकी निंद्या भी नही करते थे श्रावकोंको मंदिर वा तीर्थयात्राके लीए मना नहि करते थे बल्के श्रीतीर्थकरोंका चित्र अपने पासे रखतेथे उनिकों शीथलाचारी वणाके आप उत्कृष्ट बनके अलग अढा जमाया है कहते है कि स्थानकमे उत्तरणा गरम पाणी वा डालाका पाणी पीवे उनोके अंदर साधुपना नहि है लोग भी गाडरी प्रवाह होते है वाहज क्रिया देखके कहदेते है कि गृहस्तीका घरमे उत्तरे धोवणका पाणी पीवे वो उत्कृष्टा है अब इन लोगोने गरम पाणी लेणा छोड दीया सुभे जलदि धोवण मीले नहि इस लीये पैसावसे गुदा धोणा सरु कीया धोवणसे मुपत्ती धोणेसे काली पडजाती है तव मुपत्ती भी धोणी सरू करी अगर मुपत्ती धोणामे भी संकोच नहि है तो जोलीपला आदिमे तो संकोच ही क्या

कोचके समय सीर पैसाबसे धोणेका मतलब यह लोग कहते है कि केश चौडा पड जायगा इस कारणसे इन लोगोने यह निच कर्मको धारण कीया है क्या इन लेगो कि और भी कुष्टक्रिया सूननेका इरादा है तो बोलो मैं और भी सुनाउ।

[५] छी–छी–छी धीकार हो एसी, कुमहवि, चलाणे-चालको आपतो इन लोगोका नाम तकभी हमारे पासे मतको शास्त्रमे कहाहै कि जिन वचन उत्थापकोंका मुह देखना से हि दुरगतिका कारण होता है अगर आप एसी बातका नाम लोगा तो सायत् मेरेको उल्टी हो जायगा आज मुझे निश्चे हो गया कि हमारे मुरधर देशसे विद्यादेवी और लक्ष्मी देवी कोप कर अन्य गुजरात वीगेरे देशमे चली गइ इसीका मुख्य कारण यही है कि इन मुहबन्धा लोगोकी म्लेच्छ प्रवृतिमेही विद्यादेवी लक्ष्मीदेवी कोपीहै अर हमको किसीको पुछनेकीभी जरुरत नहि आपका केहना सब सत्यहि है अब आप येह कृपाकर बतादिजीये कि हमारी आत्माका कल्याण होनेका रस्ता कोणसा है.

[६] इन लोगाका बारामे मुझे कहना कि जरुरत नहि थी परन्तु तुमने इतना पूछगापर हमको कहना पडा है अब

तुमारी आत्माका कल्यांणका रस्ता जेसे श्रीदेवाधिदेवांने शास्त्रमे फरमायांहै वोही रहस्ता तुमारे पूर्वजोने आचरण कर कल्यांण कीया है उसीको तुमभी आचरण करो सो तुमारभी कल्यांण है

(प्र) वो रहस्ता कोनसा है।

(उ) लो सुनो श्रीदेव गुरू धर्म और जैन सिद्धांत पाचांगीयुक्त माननेकी पुर्ण आस्ता रखो क्रोध, मान, माया, लोभ, आरंभ परिग्रह, विषय कषायको गटावो [पतली करो] पर निंद्या मत करो किसीसे विशवासगात मत करो अन्यासे वेपार मत करे जीसमे कर्मादान आदि ज्यादा पाप लागे वैसा वेपार मत्त करो इत्यादि।

और अपणी धर्म करणीमे हमेसां सावधान रहो जेसे.

१ पाछली रातका उठके कुंछुमिण दुसुमिणका काउस्सग्ग करो।

[२] धर्म चिंतवण करो कलके रोज मेने क्या कार्य कियाथा य्यादकरो दुकृत्यका पश्चाताप सुकृत्यका अनुमोदन करो और आज मुजे क्या करणा है जो कार्य करणा है उसमे हीताहीतका वीचार करे.

[३] शरीर वस्त्र मकन शुद्धकी सम्ग्री होनासे सामायक प्रतिक्रमण करे यथाशक्ति पच्चक्खाण करो.

[४] दीन उगतेही अच्छा वस्त्र भुषण पनके हाथमे अ- क्षतादि द्रव्यलेके श्री त्रलोक्य पुजणीक देवाधिदेवकी यात्रा करो यथा विधि द्रव्य भावसे पुजा करो.

[५] गुरु महाराजका दर्शन कर पच्चक्खाण करो धर्म देशना सुनो.

[६] उदारतासे साधु साध्वीको फासुक एसणीक दान दो अगर साधु साध्वीका योग न होतो साधर्मीको भोजन करणा चहिये.

[७] न्यायसे द्रव्य–उपर्जन किया हुवा है उसीमे यथा शक्ति सात क्षत्रा जिन मंदिर, १ जिन प्रतिमा, २ ज्ञान, ३ साधु, ४ साध्वी, ५ श्रावक, ६ श्राविका. ७) मे लगाना चाहिए इन सवाय अनाथ, दुरबल वीं मरता हुवा जीवकी भी रक्षया करणा पुन्यका कारण है ।

(८) सयकाल देववन्दण वा कल्पण अराति कर पर- मेश्वराकी भक्ति करणा ।

[९] गुरूमहाराजके साथ प्रतिक्रमण करना ।

(१०) ज्ञान ध्यानका प्रचार वढाना, पाठशालादि ।

[११] पुजा, प्रभावना, स्वामीवात्सल, तीर्थयात्रा, दिक्षा महोत्सव, गुरूभक्ती, साधर्मीको सहायता देना इत्यादि शासनोन्नति करनेसे जीव तीर्थंकर गौत्र उपारजन करते है ।

एसा धर्म उपदेश तीर्थंकर भगवन्तने फरमाया है इसी माफीक आप करोगे तो आपका सीघ्रहि कल्याण होजायगा हमारातो उपदेश देनेका फरज है सो हमने भजा दिया है ।

अब इस धर्मकार्यमे प्रवृतिकर मोक्ष लेना आपके आधीन है ।

(उ) कर कमल मस्तक लागाके बोला अहो महान् उपगारी करूणासागर आपका अमृत वचन सुनके मेरा अंतरंग हीरदा प्रफुल्लीन होगया है में मानताहुं कि आज मुजे चिंतामणि रत्न हि मीला है आप जो हमारा आत्माका कल्याणका रस्ता बतलाया है उसीको यथाशक्ती आराधन करूंगा आपके वचन तत् अस्तु ३ ।

शान्ति. शान्ति. शान्ति.

दुहा.

मंडण जिन शासनतण, खंडण कुमति कलेस
पक्षपात दुरो करी, वाचो भव्य हमेस ॥ १ ॥

बाल कहे गुरु लिंगने, मधम क्रिया—चार
तत्व देखे तीसरो, उत्तमनो—व्यवहार ॥ २ ॥

च्यार प्रश्न छे एहमे, मुंल तणो वीस्तार
गुरु मुखथी तुमे सवली, पामो समकितसार ॥ ३ ॥

हुग देख भूलो मती कुलयुगका एनाण
जिन वाणी उर मे धरो पुरी करो पेछाण ॥ ४ ॥

नय निक्षेप परमाणसे, स्याद्वाद मत्त एह
गुरु मुख से निर्णय करे, मुक्ती लेसे तेह ॥ ५ ॥

पंडत जन से वीनति, करु मे वारम्बार
दिष्टी दोष दुरो करो, लीजो आप सुद्धार ॥ ६ ॥

परपराश्री पार्श्व कि, छट्टा पाट मजार,
विद्याधर कुलउपनो, रत्न रत्न अवतार ॥ ७ ॥

वीर निर्वाण गया पछे, वरस सीतर सुखकार
ओसवस उपकेसमे, थाप्या गौत्र अठार ॥ ८ ॥

चरम तिर्थंकर बिंबकी, करि प्रतिष्टा आय
बलीहारी गुरु देवकी, प्रणमु तेना पाय ॥ ९ ॥
मुर्ति श्री माहावीरकी, देखीत नैण ठराय
भवजन ध्यावे भावसे, मन वंछीत फलपाय ॥ १० ॥
उगणीसे बहुचरे, वैशाख पुर्ण मास
शान्ति स्नात्र देखने, पाम्यो मन हुलास ॥ ११ ॥
तीण दीनसे इण ग्रंथने, प्रारंभ कीयो नाम
अनुक्रमे पुरण कीयो, चोमासे तींवरी गाम ॥ १२ ॥
भणसी सुणसीवाचसी, रहेसी हीरदे धार
गयवर सरणे वीरके, पांम्यो भवनो पार ॥ १३ ॥

इति मुनीश्री गयवरचन्दजी विरचीत
श्रीसिद्धप्रतिमा मुक्तावली समाप्तं ॥